Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

9.833
ऽ५ ति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

9·४३३
६५ ति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तितली

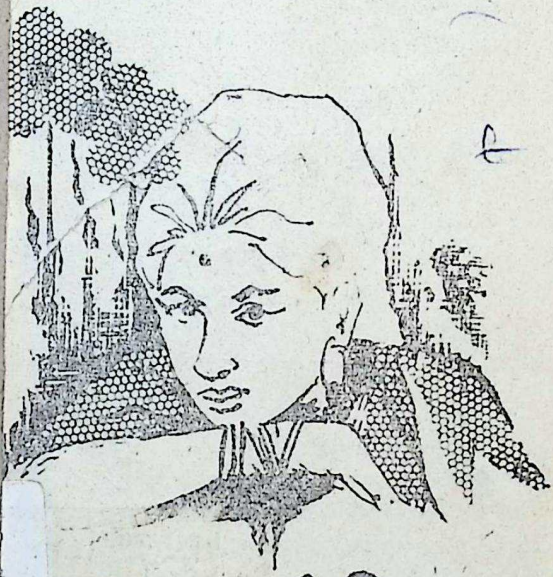

समीर

रमी
स्वामी रमानन्द
पुस्तकालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूमानी संसार सीरीज

RH : 59

(तितली)

आ. दिल्ली स्थान शेल्फ
कन्यापी रेलवे आगार
दिल्ली-१
५६४४

प्रथम संस्करण,
दिसम्बर १९७२

प्रकाशक : पी० पी० बी० जर्नल्स,
४/५ बी. आसफ अली रोड, नई दिल्ली-१

वितरक : स्टार पब्लिकेशंज (प्रा०) लि०
आसफ अली रोड, नई दिल्ली–१

मूल्य : दो रुपये मात्र (२.००)

मुद्रक : हिन्दी प्रिंटिंग प्रेस, नारायणा इण्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-२८

1–1272–2

TITLEE (Sameer) Novel : Rs. 2.0

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

C5 9832
E 6 4 C
जिला स्थान रेखी
जयाणी रेखी स्थान
पुस्तकालय

एक

सुरेश की गर्दन सीने पर झुकी हुई थी। दोनों हाथ बगलों में दबे थे और वह सीट पर दोनों टांगे फैलाए ऊंघ रहा था। और ट्रेन के हियों की आवाज से मस्तिष्क पर नींद सी छाई हुई थी। वदन में एक चित्र सा आलस्य भरा हुआ था। और इस दशा में विचित्र-सा आनन्द नुभव हो रहा था।

अचानक ट्रेन के पहियों ने खटाखट की आवाज के साथ पटरियां दलीं। सुरेश चौंक पड़ा। उसने गर्दन घुमाकर खिड़की से बाहर ाा। ट्रेन किसी छोटे से स्टेशन से गुजर रही थी। स्टेशन की इमारत ी धीमी रोशनियां आंखों के सामने लकीरें बनाती हुई तेजी से गुजर ई और फिर जंगल का अथाह अन्धकार तैरने लगा।

सुरेश ने एक लम्बी सांस लेकर गर्दन घुमाई। बराबर की सीट र लोटी हुई स्त्री की ओर देखा, जो पहले की तरह अब भी सीट पर नत लेटी हुई गहरी सांसों के साथ सो रही थी। वह मोटी-ताजी जवान ी उसी स्टेशन से ट्रेन में सवार हुई थी, जिस स्टेशन से सुरेश सवार आ था। पिछले चौबीस घंटों से सुरेश ने उसे या तो खाते हुए देखा ा अथवा सोते हुए।

सुरेश के होंठों पर हल्की-सी मुस्कराहट फैल गई। साथ ही उसकी ंगाह दूसरी ओर की सीट की आर चली गई। वह एकटक देखता ह गया।

उस दूसरी सीट पर एक लड़की बैठी थी। सुरेश को अच्छी तरह ाद था कि पिछले स्टेशन तक यह लड़की इस कम्पार्टमेंट में नहीं थी। न चलने तक भी सुरेश ने उस लड़की को कम्पार्टमेंट में नहीं देखा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

था। संभव है ट्रेन के चलते-चलते कम्पार्टमेंट में आ गई हो। और उस समय सुरेश के मस्तिष्क पर नींद-सी छाई हुई थी इसलिए उस लड़की को ट्रेन में सवार होते समय नहीं देख सका हो।

सुरेश की निगाहें लड़की चेहरे पर जमी रह गईं। उसे लड़की का चेहरा कुछ परिचित-सा मालूम हो रहा था। लेकिन मस्तिष्क पर बहुत जोर देने पर भी वह याद नहीं कर पा रहा था कि उसने इस लड़की को कहां देखा है?

लड़की गोरी-चिट्टी और सुन्दर थी। विशेष रूप से उसके उभरे हुए भरे-भरे रसीले होंठ उसके चेहरे का सबसे बड़ा आकर्षण थे। उसकी आंखों में भय जैसा झलक रहा था। वह गर्दन थोड़ी-सी टेढ़ी किए हुए खिड़की से बाहर देख रही थी। उसके बदन पर हल्के आसमानी रंग की साड़ी थी। आंचल कंधे पर लटका हुआ था। उसकी गोरी गर्दन का उभार सुरेश के मन में गुदगुदी सी पैदा करने लगा।

सुरेश ने लड़की की ऊपर वाली बर्थ पर निगाह डाली। ऊपर की बर्थ खाली थी। लड़की की गोद में बस एक पर्स रखा हुआ था। उसके साथ कोई सामान नहीं था।

अचानक लड़की ने गर्दन घुमाई। उसकी नजरें सुरेश की नज़रों से टकराईं और फिर गड़बड़ा कर नीचे झुक गईं।

सुरेश ने देखा उस लड़की के चेहरे का रंग फीका पड़ गया था। आंखों में झलकता भय और बढ़ गया था।

सुरेश ने उसके चेहरे से नज़रें हटा लीं और सीट पर रखा सिगरेट का पैकेट टटोलने लगा।

नजाने क्यों उसके मस्तिष्क में एक कुरेदन सी पैदा हो गई थी। आखिर इस लड़की को उसने कहां देखा है और उसकी सूरत जानी-पहचानी सी महसूस हो रही थी।

उसने सिगरेट सुलगाया और हल्के-हल्के कश लेने लगा। लेकिन उसका मस्तिष्क उसी लड़की में उलझा हुआ था। उसे अच्छी तरह याद आ रहा था कि यह आंखें और होंठ उसने कहीं न कहीं देखे जरूर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं। और इतने निकट से देखे हैं कि इस बार देखते ही उसके मस्तिष्क में उनकी याद फिर ताजा हो गई है।

सुरेश ने फिर लड़की की ओर देखा। लड़की सुरेश की ओर ही देख रही थी सुरेश को अपनी ओर देखते पाकर उसने फिर जल्दी से नजरें झुका लीं। इस बार सुरेश को लड़की की आंखों में परिचित होने की झलक स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

सुरेश फिर खिड़की से बाहर देखने लगा। उसके मस्तिष्क पर छाई हुई नींद सी दूर हो चुकी थी। ट्रेन का इंजन लगातार सीटियां बजाए चला जा रहा था। धीरे-धीरे ट्रेन की रफ़्तार धीमी होने लगी। सुरेश ने खिड़की से गर्दन निकालकर झांका। कोई छोटा सा स्टेशन था, जिसके सिगनल की रोशनी लाल थी।

सुरेश ने कलाई की घड़ी देखी ग्यारह बज रहे थे।

ट्रेन सुस्त होते-होते रेंगती हुई स्टेशन के प्लेटफार्म पर ठहर गई। लड़की ने परेशान होकर पहलू बदला और कनखियों से सुरेश की ओर देखने लगी।

तभी एक टिकट चैकर कम्पार्टमेंट में आ गया। उसने पलट कर दरवाजा बंद किया और फिर एक नजर सब पर डाली। कुछ देर के बाद उसकी निगाहें लड़की के चेहरे पर ठिठकी। लड़की ने उसकी ओर देखा और फिर लापरवाही से खिड़की से बाहर देखने लगी।

चैकर सुरेश की ओर देख कर उसकी सीट पर बैठने लगा। सुरेश ने अपनी टांगें सिकोड़ लीं। चैकर ने बैठते हुए सुरेश से कहा—

"रात में सफर करते समय फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट के दरवाजे अन्दर से जरूर लाक कर लेने चाहिए। इस लाइन पर आजकल बहुत वारदातें हो रही हैं।"

पिछले स्टेशन तक तो लॉक था। उस समय मैं और यह देवीजी। सुरेश ने मोटी स्त्री की ओर इशारा किया, "सो रहे थे। इसीलिए लॉक करने का खयाल नहीं आया।"

चैकर ने मोटी औरत पर एक निगाह डाली और बोला—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"लगता है यह देवीजी सोत। हुई आई होंगी ।"

"जी हां या तो सोती रही हैं या खाती रही हैं," सुरेश की मुस्कराहट गहरी हो गई ।

फिर उसने कनखियों, से लड़की की ओर देखा । लेकिन लड़की असम्बद्ध भाव से बैठी खिड़की से बाहर देख रही थी ।

ट्रेन ने सीटी दी और फिर धीरे-धीरे रेंगने लगी ।

चैकर ने मोटी स्त्री की ओर देखा और सुरेश से पूछा—

"यह आपके साथ हैं।"

"जी नहीं ।"

"जरा टिकट निकालने का कष्ट कीजिए ।"

सुरेश ने पर्स निकालकर उसमें से टिकट निकाला । चैकर ने टिकट चैक किया और वापस करते हुए बोला—

"कितना बाहियात मौसम है ।"

"जी हां । रात को तो कुछ ठंडक हो जाती है । लेकिन दिन में भयंकर गर्मी पड़ती है," सुरेश ने सिगरेट का पैकेट चैकर की ओर बढ़ाया ।

"धन्यवाद," चैकर ने सिगरेट ले लिया । सुरेश ने लाइटर से सुलगाया । चैकर फिर मोटी स्त्री की ओर देखने लगा जो सोते में बड़बड़ा रही थी—

"अबे ये केले हैं ··· ? लगता है किसी मरियल आदमी की उंगलियां ···और एक रुपये दर्जन ···ज़रा होश में होकर बात कर ··· मेरा बाप फलों का सौदागर है ।"

बड़बड़ाते-बड़बड़ाते स्त्री को गुस्सा आ गया था । उसने सोते-सोते करवट बदली और धड़ाम से सीट से नीचे चली आई । साथ ही चीख पड़ी—

"अरे मर गई ।"

सुरेश और चैकर हड़बड़ाकर खड़े हो गए । लड़की अपनी मुस्कराहट रोकने की कोशिश करने लगी । मोटी औरत दोनों सीटों के बीच

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फंसी हुई ज़ोर-ज़ोर से गुस्से से कह रही थी—

"कहां गया वह मर्दूद केले वाला···हड्डी-पसली का सुर्मा बना दूंगी।"

सुरेश ने झुककर कहा—

"देवी जी···ओ देवी जी···!"

औरत ने आंखें खोल दीं और सुरेश को देखकर क्रोध से बोली—

"ऐ···यह टुकुर-टुकुर क्या देखता है ? क्या जवान और खूबसूरत लड़की पहले कभी नहीं देखी ?"

"देवी जी, पहले यह देखिए कि आप हैं कहां ?"

औरत ने चौंककर अपने दायें-बायें देखा और घबराकर बोली—

"अरे मर गई, मैं तो सीट पर सोई थी।"

"ठहरिए, मैं आपकी मदद करता हूं," सुरेश ने कहा।

"ऐ खबरदार, जो मुझे हाथ लगाया ? जानता नहीं किसी कुंवारी लड़की को उसका पति ही हाथ लगा सकता है।"

"तो फिर खुद ही कोशिश कीजिए।"

सुरेश सीधा खड़ा हो गया। चैकर बुरा-सा मुंह बनाए खड़ा था।

औरत सीटों के बीच बड़ी बुरी तरह फंसी हुई थी। कोशिश करने पर भी वह निकल न सकी। और झल्लाकर सुरेश और चैकर की ओर देखती हुई बोली—

"अरे ! तुम्हें खुदा गारत करे। क्या इस कम्पार्टमेंट में कोई औरत नहीं है जो मेरी मदद करे।"

सुरेश ने अपनी मुस्कराहट रोकने की कोशिश करते हुए लड़की की ओर देखकर कहा—

"देवी जी, ज़रा आप ही इनकी मदद कीजिए।"

लड़की ने अपना पर्स सीट पर रख दिया और मोटी औरत की मदद के लिए आ गई। मोटी औरत ने हाथ फैलाते हुए कहा—

"हां, तुम मेरे बदन को हाथ लगा सकती हो।"

लड़की मोटी औरत का हाथ पकड़कर उसे खींचने की कोशिश

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

करने लगी। लेकिन मोटी औरत टस से मस न हुई। मोटी औरत ने झल्लाकर कहा--

"अरे तुझे खुदा समझे ! क्या घर वाले खाने को नहीं देते ? ज़रा ताकत लगा के खींच।"

लड़की ने झल्लाकर पूरी ताकत से उसको खींचने की कोशिश की, लेकिन चीखकर मोटी औरत के ऊपर जा गिरी। मोटी औरत चिल्लाई--

"अरे मार डाला ··· मार डाला।"

लड़की के दोनों हाथ फिसलकर मोटी औरत की बगलों में फंस गए। बाल बिखर गए और साड़ी पैरों से फिसल गई। उसकी गोरी-गोरी पिंडलियां दिखाई देने लगी थीं। बहुत ही हास्यास्पद स्थिति थी। लड़की कोशिश करने पर भी उठ न सकी। गर्दन टेढ़ी कर झल्लाए हुए स्वर में सुरेश से बोली--

"अरे ! उठाइए ना मुझे।"

"आप भी अगर इनकी तरह कुंवारी हुई तो ···?"

"शर्म नहीं आती आपको मज़ाक करते हुए। उठाइए मुझे जल्दी से।"

सुरेश ने लड़की की बगलों में हाथ डाला और धीरे-से उसके हाथ खींचकर मोटी औरत की बगलों से निकाले। लड़की फुर्ती से खड़ी हो गई और अपनी साड़ी ठीक करने लगी। उसका चेहरा गहरा सुर्ख हो गया था। सांसें तेज़-तेज़ चल रही थीं। उसने झटके से अपने बाल पीछे किए और साड़ी से अपनी कमर छिपाती हुई धम् से सीट पर जा बैठी।

मोटी औरत कराहती हुई चिल्लाई--

"भगवान के लिए मुझे निकालो। मेरी कमर टूटी जा रही है।"

सुरेश ने अपने सिर पर हाथ फेरते हुए कहा--

"भला इतनी मोटी कमर कैसे टूट सकती है।"

"खुदा तुम्हें गारत करे। मेरी बेबसी का मज़ाक उड़ा रहे हो।"

"लेकिन देवी जी, आप कुंवारी हैं, जवान हैं। मैं आपके बदन को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कैसे हाथ लगा सकता हूं।"

"तुम भगवान को साक्षी करके कहो कि तुम्हारे दिल में मेरे लिए कोई पाप नहीं है।"

"मैं भगवान को साक्षी करके कहता हूं कि मेरे दिल में आपके लिए कोई पाप आया, तो मैं सदमे से ही मर जाऊंगा।"

"तुम मुझे अपनी बहन की तरह समझते हो।"

"हां, आपको बहन की तरह समझता हूं।"

"ऐसे नहीं, तुम्हारे पास रूमाल है?"

"है।"

"लाओ मुझे दो।"

सुरेश ने रूमाल निकालकर मोटी के पेट पर दूर से डाल दिया। मोटी ने रूमाल उठाकर कहा—

"अपना हाथ आगे बढ़ाओ।"

"क्यों?"

"अरे जल्दी से बढ़ओ। मेरा दम निकला जा रहा है।"

सुरेश ने जल्दी से हाथ आगे बढ़ा दिया। मोटी ने जल्दी से सुरेश की कलाई पर रूमाल बांधकर कहा—

"मैंने तुम्हारे हाथ पर राखी बांध दी है। अब तुम मेरे भैया बराबर हो। अब जल्दी से मुझे बाहर निकाल लो।"

मोटी ने दोनों हाथ बढ़ा दिए।

सुरेश ने ठंडी सांस ली और मोटी के दोनों हाथ पकड़कर जोर से खींचा। मोटी सीटों से रगड़ खाती हुई ऊपर उठती चली आई। फिर धम से सीट पर बैठ गई और हांफती हुई बोली—

"हे भगवान, तेरा लाख-लाख शुक्र है! तूने मुझे बचा लिया भैया वरना मेरे होने वाले पति मेरी जान ही ले लेते।"

"तुम्हारे होने वाले पति भी हैं?"

"ऐलो···और क्या···मेरी बड़ी दीदी के देवरजी हैं," मोटी शर्माते हुए बोली, "मैं दीदी के यहां ही तो जा रही हूं। मेरी सहेलियों को

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मालूम हुआ था, तो उन्होंने बताया था कि अक्सर रास्ते में ऐसे नौजवान मिल जाते हैं, जो पहले लड़कियों की मदद करते हैं। फिर उनसे रोमांस शुरू कर देते हैं। उनसे बचकर रहना। इसीलिए तो मैंने राखी बांधकर तुम्हें भैया बनाया है।"

अब तक पास खड़ा चैकर सब तमाशा देख रहा था। वह उस मोटी औरत के सामने आया और बोला—"देवीजी, कहां से आ रही हैं आप ?"

"ऐ वाह ! मुए मेरा तू कौन होता है पूछने वाला। कहीं से आ रही तुझे क्या ?" मोटी ने बुरा मान कर कहा, "देखो तो भैया।"

"देवीजी, मैं टिकट चैकर हूं," चैकर ने कहा।

"चैकर है तो क्या हुआ ? कोई मेरा बाप है।"

"अपना टिकट दिखाइए देवीजी।"

"क्यों दिखाऊं ? एक सौ तीस रुपये अस्सी पैसे का खरीद कर दिया है मेरे बापू ने।"

"बहन जी," सुरेश बोला, "यह रेलवे सर्वेन्ट हैं। मुसाफिरों के टिकट चैक करते हैं कि कोई बिना टिकट तो सफर नहीं कर रहा !"

"अरे वाह, मेरे पिताजी की इत्ती बड़ी फैक्टरी है फलों की। लाखों रुपए की है। क्या मैं बिना टिकट सफर करूंगी ?"

"फिर भी टिकट दिखाने में कोई हर्ज नहीं है।" सुरेश ने समझाया।

"कोई हर्ज नहीं है," मोटी ने भोलेपन से पूछा।

"हां बहनजी। टिकट तो सभी मुसाफिरों को दिखाना पड़ता है। मैंने भी अपना टिकट अभी-अभी दिखाया है। तुम भी दिखा दो।"

"तुम कहते हो, तो दिखाए देती हूं। लेकिन अगर इस मुए ने बदमाशी न किया तो ?"

टिकट चैकर के नथुने फूल गए, लेकिन सुरेश ने जल्दी से कहा—

"नहीं बहनजी, ऐसा नहीं होगा।"

"अच्छा भैया, तुम जिम्मेदार होगे टिकट के।"

"हां मैं ज़िम्मेदार हूं, तुम दिखा दो ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मोटी ने अपनी थुलथुल छातियों के बीच से टिकट निकालकर सुरेश के हाथ में दे दिया। सुरेश ने टिकट चैकर की ओर मुस्कराकर बढ़ा दिया। चैकर ने नाक-भौं सिकोड़ कर टिकट चैक किया और फिर वापस कर दिया।

मोटी ने जल्दी से टिकट लेकर फिर बटुए में रखा और बटुआ वहीं ठूंस लिया। फिर सीट पर टांगें फैलाकर बैठ गई और बोली—

"पिताजी ने कहा था चैकर लोग अच्छे आदमी नहीं होते। बेकार मुसाफिरों को परेशान करते हैं। इसलिए मैंने टिकट संभालकर रखा है।"

चैकर ने नथुने फुलाकर मोटी की ओर देखा। वह कुछ कहने वाला था कि सुरेश ने उसका हाथ दबा दिया। चैकर चुप हो गया, लेकिन उसका मूड़ बहुत खराब हो गया।

मोटी को खूंख्वार नज़रों से घूरते हुए चैकर लड़की की ओर बढ़ा और बोला—

"आपका टिकट ?"

लड़की ने चैकर की ओर ध्यान से देखा और बोली—

"टिकट नहीं है, मेरे पास।"

"अच्छा !" चैकर बुरा-सा मुंह बनाकर बोला, "तो फिर रुपए निकालिए ··· तीन सौ बीस रुपए।"

"व्हाट ? तीन सौ बीस रुपए काहे के ?"

"जहां से ट्रेन बनकर चलती है वहां से यहां तक का दोगुना किराया !" चैकर ने जेब में से रसीद-बुक निकालते हुए कहा, "जल्दी कीजिए।"

"लेकिन मैं तो पिछले स्टेशन से ही सवार हुई हूं।"

"क्या आपके माथे पर लिखा है कि आप पिछले स्टेशन से सवार हुई हैं ?" चैकर झल्ला कर बोला।

"ऐ मिस्टर, तमीज से बात करो। तुम दो सौ रुपल्ली के नौकर होकर इस तरह बातें करते हो ?" लड़की ने आंखें निकालकर कहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मैं दो कौड़ी का नौकर सही," चैकर ने आंखें निकालकर कहा, लेकिन आपको इसी समय तीन सौ बीस रुपए देने पड़ेंगे।"

"मेरे पास इस समय एक रुपया भी नहीं है।"

"यह सरकारी गाड़ी है। किसी के बाप की जागीर नहीं," चैकर क्रोध भरे स्वर में बोला, "तीन सौ बीस रुपए निकालिए, वरना जेल की हवा खानी पड़ेगी।"

"ईडियट," लड़की ने होंठ भींचकर कहा और उठकर खड़ी हो गई, "दो कौड़ी का आदमी बाप-दादे तक पहुंचता है।"

फिर उसका हाथ घूमा और पूरी ताकत से चैकर के गाल पर पड़ा। चैकर लड़खड़ा कर पीछे हट गया। सुरेश उठकर खड़ा हो गया। मोटी ने ताली बजाकर हर्ष भरे स्वर में कहा--

"वाह, मज़ा आ गया।"

सुरेश ने जल्दी से आगे बढ़कर कहा--"अरे अरे, यह क्या करती हैं आप ?"

"यू शट अप," लड़की ने आंखें निकाली, "तुम कौन होते हो बीच में बोलने वाले। मैं इन लोगों को अच्छी तरह जानती हूं। मुसाफिरों को परेशान करके रकम ऐंठने के सिवा और कोई काम ही नहीं है इनका।"

"मेरे पिताजी ने भी यही कहा था," मोटी जल्दी से बोली।

"यू शट अप मोटी भैंस," लड़की गुर्राई, "तू क्यों बोलती है ?"

"अरी तेरी लोमड़िया भी ऐसी की तैसी," मोटी जल्दी से उठ बैठी, "मोटी तू, तेरी अम्मा ... अभी बताती हूं तुझे।"

सुरेश ने जल्दी से मोटी की बांह पकड़ते हुए कहा--

"अरे बहन जी, सुनिए तो सही।"

मोटी सुरेश पर डपट पड़ी, "तेरी ऐसी की तैसी, तूने मेरा हाथ कैसे पकड़ा।"

"बहन जी," सुरेश ने जल्दी से कलाई पर बंधा रूमाल दिखाते हुए कहा, "आप मेरे राखी बांध चुकी हैं ना।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"अरे हां, माफ करना, तुम तो मेरे भैया बन चुके हो। तुम ही देखो भैया! इस छिपकली का दिमाग खराब हो गया है। पहले उस बेचारे सूखे झांकड़ को चांटा मार दिया। फिर तुम पर उलट पड़ी और अब मेरे साथ बदतमीजी कर रही है।"

"भगवान की कसम," चैकर अपना गाल सहलाते हुए खूंखार लहजे में बोला, "अब तो इन्हें जेल की हवा खिलाए बिना चैन से नहीं बैठूंगा।"

"अबे जा जा," लड़की ने हाथ नचाकर कहा, "यह धमकी किसी और को देना।"

सुरेश ने लड़की का चेहरा ध्यान से देखते हुए कहा—

"देवी, आपके दिमाग का कोई स्क्रू ढीला तो नहीं है?"

"शट-अप।"

सुरेश ने लापरवाही से कंधे झटके और अपना बैग ठीक करने लगा। स्टेशन आ गया था और गाड़ी की रफ्तार धीमी हो गई थी।

चैकर ने लड़की से कहा—

"अगर तुमने भागने की कोशिश की तो पुलिस वालों को पीछे दौड़ा दूंगा।"

"कोई चोर-उचक्का समझ रखा है मुझे!" लड़की आंखें निकाल कर बोली।

गाड़ी प्लेटफार्म पर जा रुकी। सुरेश ने बैग उठाया और दरवाजे के पास आ गया।

मोटी जल्दी से बोली—

"अरे भैया, मेरे लिए एक कुली तो बुला दो।"

सुरेश कुली को पुकारने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दो

चाय का आखिरी घूंट लेकर सुरेश ने प्याली काउंटपर पर रख दी। पैसे दिए और बैग उठाकर आर० पी० के थाने की ओर बढ़ गया।

चैकर उस लड़की को आर० पी० के थाने में ही ले गया था। पहले तो सुरेश ने सोचा कि कौन चक्कर में पड़े, लेकिन फिर न जाने क्यों उसका विचार बदल गया उसकी आंखों के आगे रह-रह कर उस लड़की का चेहरा झूल उठता था। वह याद करने की कोशिश करता कि उसने इस लड़की को कहां देखा है। लेकिन उसे याद नहीं आ रहा था।

जैसे ही वह थाने के पास पहुंचा, ठिठककर रुक गया। सामने ही चैकर बड़बड़ाता हुआ थाने से निकल रहा था। वह भी सुरेश को देख कर ठिठक गया।

सुरेश ने उससे पूछा--

'क्या हुआ चैकर साहब ?"

"होता क्या, देवी जी को अब छठी का दूध याद आ जाएगा। बंद कर दिया है हवालात में।"

"ओह, लेकिन चैकर साहब, वह सचमुच कुछ सनकी मालूम होती है।"

"कुछ भी हो, सबक तो मिलना चाहिए। दरोगाजी ने कहा जुर्माना भर दो तो छोड़ देंगे। लेकिन उन पर भी बरस पड़ी। उन्हें गुस्सा आ गया और उसका चालान लिख दिया। अब तो ज़मानत पर ही छूटेगी। या फिर टिकट की रकम और जुर्माना भर कर छूटेगी।"

"आइए, मेरे साथ चलिए।" सुरेश ने कहा।

"क्यों ?"

"मैं रुपए दिए देता हूं। बाद में ले लूंगा। वह किसी भले घराने की लड़की मालूम होती है। रातभर हवालात में रह गई, तो खानदान की इज्जत धूल में मिल जायगी।"

"आपको उससे इतनी हमदर्दी क्यों हो गई ! जबकि उसने आपके

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

साथ में भी तो अशिष्टता की थी।"

"चैकर साहब, अगर दूसरे अपना स्वभाव और आदतें न बदल सकें तो इसका यह अर्थ नहीं कि हम भी अपनी शराफत उठाकर रख दें। मैं जानता हूं कि आपके साथ उसने बहुत ही बुरा व्यवहार किया है। फिर भी आप बुजुर्ग हैं आपका माथा और आपकी आंखें बताती हैं कि आप किसी बहुत ही ऊंचे घराने के हैं। उसे अपनी छोटी बहन समझ कर क्षमा कर दीजिए।"

यह सुनकर चैकर का सीना गर्व से फूल गया। वह गर्वीले स्वर में बोला—

"साहब, मैं भी ब्राह्मण हूं ··· परिस्थितियों से विवश होकर यह घटिया नौकरी करनी पड़ रही है। चलिए आपके कहने से उसे छुड़वाए देता हूं।"

सुरेश चैकर के साथ थाने में पहुंचा, तो उसे सामने ही हवालात में लड़की दिखाई दे गई। वह दरवाजे की सलाखें पकड़े खड़ी थी। और परेशान सी दरवाजे की ओर देख रही थी। सुरेश पलभर के लिए ठिठक गया। फिर जैसे ही इंस्पैक्टर आफिस की ओर मुड़ा लड़की ने गर्दन से उसे अपनी ओर आने का इशारा किया।

सुरेश हवालात के दरवाजे के पास पहुंचकर रुक गया। लड़की ने उसकी ओर नजरें उठाईं। उसकी आंखें भर आईं। गालों पर आंसुओं की दो बूंदें ढुलक आईं।

सुरेश ने धीरे से कहा, "शायद अब तो आपको अपनी भूल का अहसास हो गया होगा।"

लड़की ने पलकें उठाईं और भर्राई हुई आवाज में बोली—

"क्या बताऊं। न जाने क्यों मेरा दिमाग खराब हो जाता है। मैं आप से अपनी अशिष्टता के लिए क्षमा चाहती हूं।"

"कोई बात नहीं। मैं अबतक आपके कारण ही रुका रहा था।"

"सचमुच आप बहुत अच्छे हैं।"

"आप थोड़ी देर ठहरिए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और फिर सुरेश दरोगा की मेज की ओर बढ़ गया।

तीन

आर० पी० थाने से सुरेश लड़की के साथ बाहर आया और फिर कुछ देर बाद स्टेशन की इमारत से बाहर आ गया। उसने लड़की से पूछा—

"आपको कहां जाना है ?"

"मोरिस रोड," लड़की ने उत्तर दिया, "लेकिन आपको भी मेरे साथ चलना है।"

"क्यों ?"

"आपकी रकम वापस करनी है।"

"इतनी जल्दी भी क्या है। आप मुझे अपना पता दे दीजिए। मैं किसी समय आकर ले जाऊंगा। या मेरा पता ले लीजिए किसीके हाथ भिजवा दीजिएगा।"

"नहीं, मेरे मन पर बोझ रहेगा। मेरे साथ चलिए," लड़की के स्वर में बच्चों जैसी ज़िद थी।

सुरेश ने मुस्करा कर कहा, "आप ज़िद कर रही हैं तो चलिए।"

सुरेश ने एक टैक्सी बुलाई। कुछ देर बाद टैक्सी में सवार होकर मौरिस रोड की ओर चल दिए।

रास्ते में सुरेश ने कहा—

"मेरा नाम सुरेश है।"

"और मेरा नाम सविता है," लड़की बोली।

"आप दिलावर नगर किसी काम से गई थीं ?"

"मेरी एक सहेली की सगाई थी उसी में गई थी। पार्टी में किसीने मेरा पर्स खाली कर दिया था। आज रात को ही लौटना जरूरी था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

स्टेशन तक मुझे मेरी सहेली की कार छोड़ गई थी। टिकट खरीदने लगी तो पता चला कि पर्स खाली है। विवश होकर बिना टिकट ही चल पड़ी।"

"ऐसी क्या मजबूरी थी। सहेली के यहां लौट जातीं और वहां से रुपये लेकर दूसरी ट्रेन से आ जातीं।"

"दूसरी ट्रेन तो कल सवेरे मिलती और मुझे हर हालत में आज रात ही घर पहुंचना था। कल सुबह मेरे पति किसी काम से बाहर जा रहे हैं।"

"आपके पति?" सुरेश को एक झटका-सा लगा।

"जी हां, वह यहां इंश्योरेन्स एजेन्ट हैं।"

"इंश्यारेन्स एजेन्ट?" सुरेश चौंक पड़ा," उनका नाम कैलाश है ना।"

"जी हां," लड़की ने आश्चर्य से कहा, "आप उन्हें कैसे जानते हैं?"

"वह मेरा क्लास-फैलो है। आपको ट्रेन में देखकर मुझे लगा था कि मैंने आपको कहीं देखा है। लेकिन याद ही नहीं आया कि कहां देखा है। अब याद आया। आपको शादी के दिन ही देखा था।"

"हां, मुझे भी ऐसा ही लगता है कि आपको देखा है। लेकिन शादी में आप बहुत थोड़ी देर ही ठहरे थे।"

"हां, उन दिनों नई-नई नौकरी मिली थी। आफिस से काम से मुझे रात की ट्रेन पकड़नी थी। मैं केवल भांवरों के समय थोड़ी देर ही रुका था। दावत के समय भी वहां नहीं था।"

"कैसी विचित्र बात है। आपसे भेंट भी हुई तो किस परिस्थिति में।"

"संयोग है।...तो क्या कैलाश स्थाई रूप से यहीं रहने लगा है?"

"जी हां, एक साल हो गया।"

"अब क्या हाल हैं कैलाश के? शराब पीना छोड़ दिया या

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं।"

सविता ने कोई उत्तर नहीं दिया।

सुरेश ने ध्यान से सविता का चेहरा देखा और ठंडी सांस भरकर बोला—

"इसका मतलब है अब तक उसको वही आदत है। यह आदत उसे विरासत में मिली है। उसके पिता बहुत बड़े पियक्कड़ थे। बिना सोडा मिलाए ही पिया करते थे। एक दिन कच्ची नीट शराब पीते ही खून की उल्टी हुई और वह मर गए।"

"मैंने भी सुना है। लेकिन मुझे मालूम नहीं था कि आपके मित्र भी इतने बड़े पियक्कड़ हैं।"

"तो क्या अब और अधिक पीने लगा है?"

"जी हां। शराब के कारण ही तो हम पनप नहीं पाए। सारी आमदनी शराब की भेंट चढ़ जाती है।"

"फिर घर के खर्चे?"

"पिछले महीने तक पिताजी पांच सौ रुपये हर महीने भेज देते थे। रुपयों के बारे में मैं आपके मित्र को नहीं बताती थी। उन्हीं रुपयों से घर की गाड़ी किसी तरह चला रही थी।"

"क्या आपके पिताजी को यह बात मालूम हो गई थी?"

"हां, मैंने ही बताया था।"

"क्यों?"

"न बताती तो क्या करती? यहां तो यह हालत हो गई थी कि सुबह खा लिया तो शाम की चिन्ता। और शाम खा लिया तो सबेरे की चिन्ता। पहले तो मैं अपने ज़ेवर बेच-बेच कर काम चलाती रही। और जब सारे ज़ेवर बिक गए तो फाकों की नौबत आ गई। फिर भी आपके मित्र के कान पर जूं नहीं रेंगी।" उसने ठंडी सांस लेकर कहा, "एक दिन मैं दो दिन की भूखी पड़ी थी। आपके मित्र के पास शराब खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। उन्होंने मुझसे बेचने के लिए ज़ेवर मांगा मैंने कहा ज़ेवर तो सारे पहले ही बिक चुके हैं। यह सुनकर उन्होंने मुझे खूब मारा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यहां तक कि मैं बेहोश हो गई।"

सुरेश चुपचाप सुनता रहा। वह कहती गई, "मुझे बेहोश पड़ा छोड़कर वह शराब की तलाश में बाहर चले गए और तभी पिताजी आ गए। मैंने उनसे यह बात छिपने की बहुत कोशिश की लेकिन जब उन्होंने अपनी सौगन्ध दी तो मुझे सब कुछ बताना पड़ा। मेरी हालत देख कर वह रो पड़े। उन्होंने मुझे अपने साथ ले जाना चाहा लेकिन मैंने इनकार कर दिया। और इसके बाद पिताजी मुझे हर महीने पांच सौ रुपये भेजने लगे। लेकिन पिछले महीने हार्ट अटैक में पिताजी का स्वर्गवास हो गया। अब वे रुपये मिलने भी बंद हो गए।"

सुरेश हक्का-बक्का-सा बैठा सुनता जा रहा था। सविता ठंडी सांस लेकर चुप हो गई।

सुरेश ने कहा, "मैं तो समझता था कि आप लोगों का जीवन बड़े आराम से बीत रहा होगा। कैलाश एक सफल इंश्योरेन्स ऐजेन्ट है। एक स्टेन्डर्ड से जिन्दगी बिता सकता है।"

सविता ने फीकी-सी मुस्कराहट के साथ कहा—

"जीवन का सुख-चैन तो तभी समाप्त हो गया था जब मेरा विवाह हुआ था। पति का सम्मान बनाए रखने के लिए मुझे क्या कुछ नहीं करना पड़ता। समाज में सम्मान बनाए रखने के लिए भूखे पेट रह कर भी बाहर निकलते समय अच्छे-से-अच्छे कपड़े पहन कर निकलती हूं। आज ही अपनी सहेली की सगाई पर दो सौ रुपये का प्रेज़ेक्ट देकर आई हूं। सच पूछिए तो दिलावर नगर से चलते समय मेरे पर्स में एक पैसा भी न था। मैं जानती थी कि अगर मैं रात को ही घर न पहुंची तो आपके मित्र मार-मार कर मेरी चटनी बनाएंगे। उन्हें मेरे चाल-चलन पर सन्देह रहने लगा है। इसी डर से मैं बिना टिकट ट्रेन में बैठ गई थी। थर्ड और सेकिंड क्लास में पांव रखने को भी जगह नहीं थी। विवश होकर फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेन्ट में जा बैठी थी।"

सविता की दुख भरी आवाज़ सुरेश के दिल में उभरती चली जा रही थी। उसे कैलाश पर गुस्सा आ रहा था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सविता ने कहा, "इन परिस्थितियों ने मुझे चिड़चिड़ा बना दिया है। उस बेचारे चैकर के साथ मैंने सचमुच बहुत बुरा व्यवहार किया था। हालांकि वह मेरे पिताजी की उम्र का था। जी चाहता है कि जाकर उसे क्षमा मांग लूं।"

"वैसे कैलाश का काम-धंधा तो ठीक चल रहा है?"

"जिस आदमी को दो हज़ार रुपये की आमदनी हो उसके काम-धंधे को ठीक ही कहा जाएगा। अगर सलीके से काम लिया जाए तो इस आमदनी में हम बड़े ठाठ-बाट से रह सकते हैं।"

"मैं उसे समझाऊंगा। ज़िन्दगी इतनी छोटी नहीं है कि ऐसी परिस्थितियों में बिता दी जाए। अभी आप लोगों की उम्र ही क्या है। अभी तो शायद कोई बच्चा भी नहीं हुआ होगा।"

"जी नहीं," सविता ने नज़रें झुका कर धीरे-से कहा।

तभी टैक्सी ड्राइवर ने कहा—

"मौरिस रोड आ गया साहब।"

"ओह!" सविता चौंक पड़ी, "सातवें रोड पर आखिरी फ्लैट पर चलो।"

टैक्सी सातवें रोड पर घूम गई।

कुछ देर बाद, टैक्सी एक छोटे-से सुन्दर फ्लैट के कम्पाउन्ड में पहुंच कर रुक गई।

सुरेश और सविता टैक्सी से उतर गए। सुरेश ने किराए चुकाया। टैक्सी चली गई।

फ्लेट में अंधेरा था। केवल बरामदे की बत्ती जल रही थी।

सविता बरामदे की सीढ़ियां चढ़ती हुई बोली—

"वह शायद अभी तक नहीं आए।"

"सुरेश ने कलाई की घड़ी देखी। एक बज रहा था। उसने सविता की ओर देख कर पूछा, "क्या कैलाश इतनी-इतनी रात तक बाहर रहता है?"

"कभी-कभी तो सारी रात गायब रहते हैं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कहां रहता है ?"

"एक ही अड्डा है ··· रोज़ा नाइट क्लब। वहीं बैठे पैग-पर-पैग खाली करते रहते हैं। असल में वहां लड़कियां ही सर्व करती हैं।"

"ओहो ···!" सुरेश ने धीरे-से अर्थपूर्ण स्वर में कहा।

सविता ने पर्स खोलकर चाबी निकाली।

सुरेश ने पूछा, "चाबी तो आपके पास है। अगर कैलाश पहले आ जाता तो ?"

"फ्लैट की दो चाबियां हैं। एक उनके पास रहती है।"

"ओह !"

सविता ने दरवाज़े की होल में चाबी डालते हुए बायां हाथ दरवाज़े पर रखा। हाथ लगते ही दरवाज़े के दोनों पट खुल गए। सविता चौंक कर पीछे हट गई !

"हे भगवान, दरवाज़ा कैसे खुला है।" आश्चर्य-भरे स्वर में वह चीख उठी।

सुरेश ने चौंक कर पूछा, "क्या आपने चाबी से नहीं खोला ?"

"चाबी घुमाने की नौबत ही नहीं आई। दरवाज़ा तो हाथ लगते ही खुल गया।"

"संभव है, कैलाश आ गया हो और उसने आपके इन्तज़ार में दरवाज़ा खुला छोड़ दिया हो।"

"वह आ गए होते तो अन्दर की बत्ती जल रही होती।"

"हो सकता है ! सो गया हो।"

"तब वह दरवाज़ा कभी खुला नहीं छोड़ते।"

"तब तो किसी चोर की हरकत दिखाई देती है।"

"लेकिन चोर यहां क्या लेने आया होगा। मेरे दहेज का रेडियोग्राम टेपरिकार्डर तक तो बिक चुका है।"

"आइए ! अन्दर तो चलें।"

"मेरा तो दिल धड़क रहा है," सविता ने कांपते हुए कहा।

"घबड़ाइए मत। मैं आपके साथ हूं !" सुरेश ने तसल्ली दी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सविता कुछ न बोली। उसके चेहरे का रंग उड़ गया था। आंखों
में भय झांक रहा था।

सुरेश ने कहा, "ठहरिए मैं आगे चलता हूं।"

सुरेश ने दरवाज़े के पट पूरे खोल दिए और अन्दर घुसते हुए
पूछा—

"लाइट का स्विच किधर है?"

"इधर दाईं ओर को!"

सुरेश ने हाथ बढ़ा कर स्विच टटोला। हल्की-सी पट की आवाज
हुई और कमरे में तेज़ रोशनी फैल गई।

और···

रोशनी फैलते ही सविता की एक तेज और लहराती हुई चीख गूंज
उठी। वह दोनों कानों पर हाथ रख कर चीखती हुई पीछे हटती चली
गई और दरवाज़े के एक पट से टकरा कर रुक गई।

सुरेश सन्नाटे में डूबा खड़ा था। उसकी आंखें एक जगह जम कर
रह गई थीं। पलकें तक नहीं हिल रही थीं।

कमरे के बीचों-बीच एक लाश औंधी पड़ी हुई थी। यह लाश
कैलाश की थी। लाश के दोनों हाथ फैले हुए थे। आंखें फटी हुई थीं।
मुंह खुला हुआ था। फर्श पर खून फैला हुआ था। खून का रंग काला
पड़ गया था। ठोढ़ी के पास चाकू का दस्ता दिखाई दे रहा था।

सविता की कांपती हुई आवाज़ सन्नाटे में बिखर गई।

"नहीं, यह नहीं हो सकता···यह नहीं हो सकता।"

सुरेश ने चौंक कर सविता की ओर देखा और फौरन झपट कर उसे
पकड़ लिया, वरना वह गिर जाती।

सविता बेहोश होकर सुरेश की बांहों में झूल गई। सुरेश ने उसे
हाथों पर उठा लिया और इधर-उधर देखने लगा। कमरे में चीज़ें अस्त-
व्यस्त पड़ी हुई थीं। सुरेश नहीं चाहता था कि कमरे में मौजूद कोई
ऐसा निशान मिट जाए, जिससे कैलाश के हत्यारे के विषय में कुछ पता
चल सके।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर वह सविता को बांहों पर उठाए फ्लैट से बाहर निकल आया उसने एक कोने में फर्श पर ही सविता को लिटा दिया और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिए। वह एक विचित्र सिचुएशन में फंस गया था।

अभी वह किसी निष्कर्ष पर पहुंचने न पाया था कि उसे कदमों की आहट सुनाई दी। वह चौंक कर कम्पाउण्ड के गेट की ओर देखने लगा गेट पर अंधेरा था, इसलिए उसे केवल एक साया दिखाई दिया।

गेट खुला और वह साया रोशनी में आ गया। सुरेश आगे बढ़ आया आगन्तुक बरामदे के पास पहुंचकर रुक गया। उसने सुरेश को ध्यान से देखते हुए पूछा—

"कौन हैं आप?"

सुरेश ने बरामदे की सीढ़ियां उतरते हुए पूछा—

"मैं बराबर के फ्लैट में ही रहता हूं। अभी-अभी मैंने कैलाश बाबू के फ्लैट से किसी औरत की चीख सुनी थी।"

"वह कैलाश बाबू की पत्नी सविता देवी की चीख थी।"

"वह क्यों चीखी थीं···? कहां है वह?"

"वह रहीं।"

सुरेश ने हाथ उठाकर सविता की ओर इशारा किया।

आगन्तुक उछल पड़ा "अरे, क्या हुआ सविता जी को?"

"बेहोश हो गई हैं।"

"बेहोश हो गई हैं? ···बेहोश क्यों हो गईं?"

आगन्तुक ने आश्चर्य से पूछा।

"आपके फ्लैट में टेलीफोन है?"

"नहीं, मेरे फ्लैट में तो नहीं है।"

"आसपास कोई टेलीफोन मिल सकेगा?"

"आसपास तो टेलीफोन है नहीं। लेकिन आप टेलीफोन का क्या करेंगे? आप कौन हैं, और यहां क्या कर रहे हैं?"

"मैं कैलाश का मित्र हूं। अगर हो सके तो सविता जी को अपने

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फ्लैट में पहुंच दीजिए। और मुझे टेलीफोन तक ले चलिए।"

"आखिर बात क्या है ? कुछ बताइए तो।"

"आइए, मैं बताता हूं।"

सुरेश दरवाजे की ओर मुड़ गया। आगन्तुक भी हैरान सा उसके पीछे अंदर चला आया, लेकिन कैलाश की लाश को देखते ही हड़बड़ा कर पीछे हट गया।

"ओ गॉड !, यह क्या हुआ, कैलाश बाबू को ?"

"किसी ने इन्हें मार डाला," सुरेश ने धीरे से कहा।

"नहीं !"

आगन्तुक आंखें फाड़-फाड़कर सुरेश को देखने लगा। उसकी आंखों में संदेह झांक रहा था।

सुरेश ने कहा--

"आप गलत समझ रहे हैं। मैंने भी सविता जी के साथ लाश देखी है।"

"क्या आप सविता जी के साथ थे ?"

"जी हां, मैं पहली बार ही यहां आया हूं।"

"लेकिन आपने अभी-अभी कहा था कि आप कैलाश बाबू के मित्र हैं।"

"हां मित्र तो हूं। लेकिन पिछले डेढ़ साल से कैलाश से मेरी मुलाकात नहीं हुई थी। आज संयोग से सविता जी से ट्रेन में मुलाकात हो गई थी और मैं इनके साथ यहां चला आया था। यहां पहुंचा तो कैलाश का लाश पड़ी देखी।"

आगन्तुक का संदेह समाप्त नहीं हुआ।

सुरेश ने कहा, "देर न कीजिए। सविता जी को अपने फ्लैट में पहुंचवा दीजिए। हमें जल्द से जल्द पुलिस को इन्फार्म कर देना चाहिए ताकि यहां पर मौजूद कोई ऐसा निशान न मिटने पाए जिसके द्वारा पुलिस हत्यारे तब पहुंच सके।"

"आइए !"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आगन्तुक बाहर की ओर मुड़ा। सुरेश उसके पीछे चल दिया।

फिर जैसी ही वे दोनों बाहर निकले, बुरी तरह चौंककर ठिठक गए। सुरेश ने जहां सविता को लिटाया था, वह स्थान खाली पड़ा था। सविता वहां से गायब थी। दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। आगन्तुक ने घबड़ाए हुए स्वर में कहा—"कहां गायब हो गईं सविता जी ?"

"यह तो आप ही बतायेंगे," सुरेश ने रूखे स्वर में कहा।

"क्या मतलब ?" आगन्तुक आश्चर्य से बोला।

"मतलब साफ है। थोड़ी देर पहले सविता देवी यहीं थीं। आपके होते हुए ही गायब हुई हैं।"

"लेकिन मैं तो आपके साथ ही था।"

"आपका कोई साथी भी तो हो सकता है।"

"आपका दिमाग तो ठीक है मिस्टर ?"

"आपने ही सविता देवी की चीख कैसे सुनी, यहां और भी तो पड़ौसी रहते हैं।"

"पहले आप बताइए कि आप कौन हैं ? और यहां क्यों आए हैं ?"

"ज़रूर बता दूंगा। लेकिन आप अपने आपको गिरफ्तार समझिए।"

आगन्तुक ने कहा—"इसका फैसला तो पुलिस ही करेगी।"

"पुलिस को कहां से सूचना दी जायगी ?"

"टेलीफोन पर," आगन्तुक ने कहा, "टलीफोन चौथे फ्लोर पर है।

"चलिए," सुरेश ने रिवाल्वर निकालकर इशारा किया, "औ अपने हाथ ऊपर उठा लीजिए।"

आगन्तुक ने चुपचाप हाथ ऊपर उठा लिए और सुरेश के आगे-आ चलने लगा।

चौथे फ्लैट पर पहुंचकर आगन्तुक ने बिना मुड़े कहा—

"बटन दबा सकता हूं।"

"दबाइए।"

आगन्तुक ने बटन दबाया। घंटी की आवाज़ गूंज उठी। सुरेश

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रवाज़े की झिरियों से झांकती हुई रोशनी देखी। फ्लैट में रहने वाला
ाग रहा था। कुछ पल बाद पैरों की आहट सुनाई दी और फिर दर-
ाज़ा खुल गया।

सामने अधेड़ उम्र का एक आदमी खड़ा पलकें झपका रहा था।
सके बदन पर काली पैंट और सफेद कमीज़ थी। डाक्टरों जैसा एप्रिन
पर से पहन रखा था। उसने आगन्तुक को ऊपर से नीचे तक देखते
ए पूछा--

"क्या बात है मि० कमल। आपके हाथों में कोई तकलीफ है?"

"तकलीफ मुझे नहीं इन्हें है जो मेरे पीछे खड़े हैं," कमल ने उत्तर
या।

अधेड़ व्यक्ति ने चौंककर सुरेश की ओर देखा। सुरेश के हाथ में
वाल्वर देखते ही वह हड़बड़ा कर पीछे हट गया।

"अरे बाप रे...!"

सुरेश ने अधेड़ आदमी को ध्यान से देखकर पूछा—

"आप मि० कमल को जानते हैं?"

"अच्छी तरह... मेरे पड़ोसी हैं। बहुत ही भले आदमी हैं। लेकिन
प...आपके हाथ में रिवाल्वर क्यों है?"

"कोई विशेष बात नहीं," सुरेश ने रिवाल्वर जेब में रख लिया,
ापके यहां से मुझे पुलिस को टेलीफोन करना है।"

"पुलिस को...?...क्यों...?"

आगन्तुक ने सुरेश की ओर देखकर कहा—

"सविता देवी के पति कैलाश बाबू का किसी ने कत्ल कर दिया
।"

"क्या?" अधेड़ व्यक्ति बुरी तरह चौंक पड़ा।

"जी हां," सुरेश बोला, "आसपास कहीं टेलीफोन नहीं था इसलिए
आपका टेलीफोन इस्तेमाल करने इधर चले आए।"

"आइए, अन्दर आ जाइए।"

अब कमल ने हाथ गिरा दिए थे। वह सुरेश के साथ अन्दर चला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गया। सुरेश ने कमल से पास के थाने के फोन का नम्बर पूछा और फिर नम्बर डायल करने लगा। कमल अभी भी सुरेश को संदिग्ध निगाहों से देख रहा था। और वह अधेड़ आदमी इस तरह खड़ा था जैसे ये लोग उसी के कफ़न-दफन का प्रबन्ध करने आए हों।

चार

पुलिस की जीप फ्लैट के कम्पाउंड में रुकी। एक सब-इंस्पेक्टर और चार कांस्टेबल जीप से उतरे और बरामदे की ओर बढ़ गए। कमल और सुरेश बरामदे में खड़े थे। सब-इंस्पेक्टर कमल को देखते ही चौंक पड़ा--

"ओह मि० कमल, आप यहां कैसे ?"

कमल ने जल्दी से आगे बढ़कर आंख का कुछ इशारा करते हुए इंस्पेक्टर से हाथ मिलाते हुए कहा—"मैं तो पिछले दो महीने से सामने वाले फ्लैट में रह रहा हूं।"

"तो क्या यहां स्थायी रूप से रहने लगे हैं ?"

"जी हां ! भैया की शादी के बाद अपने फ्लैट में जगह की कमी हो गई है। इसलिए मुझे यहां रहना पड़ा। संभव है कुछ महीनों में मेरी भी शादी हो जाए।"

"और आपकी तारीफ ?" सब-इंस्पेक्टर सुरेश की ओर इशारा किया।

"यह अपने आपको मृतक का मित्र बताते हैं।"

सुरेश ने आगे बढ़कर कहा--"जी हां ! मेरा नाम सुरेश है। नौकरी के सिलसिले में आज रात ही यहां आया हूं। कैलाश मेरा क्लास-फैलो था।"

"क्या यह फ्लैट कैलाश का ही है ?" इंस्पेक्टर ने कमल से पूछा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जी हां ! पिछले डेढ़ वर्ष से कैलाश अपनी पत्नी के साथ यहीं रह रहा था।"

"उसकी पत्नी कहां है ?"

"थोड़ी देर हुई रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गई।" वह धीरे से बोला।

"क्या मतलब ?" सब-इंस्पेक्टर ने चौंक कर पूछा।

"मैंने सविता जी की चीख सुनी थी। सभी पड़ौसी जानते हैं कि कैलाश अक्सर रात को शराब के नशे में धुत होकर सविता को मारा-पीटा करता था। अक्सर सविता की चीखें सुनाई दिया करती थीं लेकिन आज की चीख का अंदाज ही कुछ और था। मैं यही मालूम करने चला आया था। जब यहां पहुंचा तो मैंने इन साहब को यहां खड़े देखा। सविता जी यहीं फर्श पर बेहोश पड़ी थीं। इन्होंने मुझे कैलाश की हत्या की सूचना दी। मैं इनके साथ लाश देखने ऊपर गया। और जब हम दोनों वापस आए तो सविता जी गायब थीं।"

"हूं," सब-इंस्पेक्टर ने संदिग्ध नज़रों से सुरेश की ओर देखते हुए कहा, "सबसे पहले लाश किसने देखी थी ?"

"मैंने और सविता ने।" सुरेश ने उत्तर दिया।

"आप किस ट्रेन से यहां पहुंचे थे ?"

"फ्रन्टियर मेल से।"

"आप सीधे यहीं आए थे ?"

"जी नहीं ! सविता से संयोग से मुलाकात हो गई थी।"

"यहां आप कहां ठहरेंगे ?"

"मेरा नौकर सामान के साथ गेलार्ड होटल के कमरा नम्बर ग्यारह में रह रहा है। रहने का प्रबन्ध वहीं करना है"

"खैर, आप कानूनी कार्रवाई पूरी होने तक यहीं रहिएगा।"

"मैं जानता हूं," सुरेश ने इत्मीनान से कहा।

"मैं लाश देखूंगा," सब-इंस्पेक्टर ने कमल से कहा।

"आइए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब-इंस्पेक्टर सुरेश और कमल के साथ अन्दर चला गया और लाश का मुआयना करने लगा। सुरेश की निगाहें लाश के आस-पास का निरीक्षण कर रही थीं। फिर उसकी निगाह लाश की बंद मुट्ठी की ओर चली गई। वह मुट्ठी को ध्यान से देखने लगा।

सब-इंस्पेक्टर ने चिन्तित स्वर में कहा—

"लगता है हत्या हुए कई घंटे बीत गए हैं।"

"जी हां," कमल बोला, "खून की रंगत तो यही बता रही है।"

"आपने बताया था कि मृतक अपनी पत्नी के साथ मारपीट करता था!"

"जी हां, सारे पड़ौसी जानते हैं।"

"संभव है तंग आकर मृतक की पत्नी ने ही उसे मार डाला हो और फिर गायब हो गई हो।"

"यह असंभव है!" सुरेश बीच में बोल उठा।

"क्या मतलब?" सब-इंस्पेक्टर ने तीखे लहजे में पूछा।

"मैं इस बात का गवाह हूं कि सविता जी ने फ्रंटियर मेल से दिलावर नगर से यहां तक मेरे साथ फस्ट क्लास में सफर किया है।"

"आप सविता जी की सफाई पेश कर रहे हैं?"

"सविता जी की सफाई तो आर० पी० से भी मिल सकती है। क्योंकि उन्होंने बिना टिकट फर्स्ट क्लास में सफर किया था। उन्हें कुछ देर आर० पी० की हवालात में भी रहना पड़ा था मैंने ही उनका जुर्माना भर कर उन्हें छुड़वाया था।"

"तो वह दिलावर नगर गई हुई थीं?"

"जी हां, वह दिलावर नगर से ही ट्रेन में सवार हुई थीं। स्टेशन पर मौजूद टिकट चैकर भी इस बात की गवाही देगा जिसने सविताजी को चैक किया था और जिसके द्वारा मैंने सविता जी को छुड़ाया था।"

"हूं, फिर यह किसी की हरकत हो सकती है?"

"जो कोई भी हो। यह तो खोज-बीन करने पर ही मालूम होगा," कमल ने कहा, "इस समय तो आपने उन्हीं लोगों को चैक करना है जो

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

संदिग्ध हैं।"

"स्पष्ट है।"

"इस समय तो आपको लाश का अच्छी तरह मुआयना करना है," सुरेश ने कहा।

"जी ...?"

"जी हां, लाश की मुट्ठी देखिए। क्यों बंद है यह ... जबकि बांए हाथ की मुट्ठी खुली हुई है।"

कमल और सब-इंस्पेक्टर ने चौंककर लाश की बन्द मुट्ठी की ओर देखा। फिर सब-इंस्पेक्टर आगे बढ़कर खोलने लगा। अकड़ी हुई लाश की मुट्ठी बड़ी कठिनाई से थोड़ी-सी खुल सकी थी और कोई चीज निकल कर नीचे गिर पड़ी।

कमल ने जल्दी से झुककर कहा—"ओह ... टाई-पिन!"

उसने फर्श पर से टाई-पिन उठा लिया। उसकी आंखों में विचित्र सी चमक उभर आई। सुरेश और सब-इंस्पेक्टर ध्यान से कमल को देखने लगे। कमल ने सब-इंस्पेक्टर की ओर देखकर कहा—

"इस टाई-पिन को मैंने पहले भी देखा है।"

"कहां?"

"कैलाश के यहां आने-जाने वाले किसी आदमी की टाई में ही देखा है," फिर वह चौंककर बोला, "ओह याद आ गया, कमल के एक मिलने वाले की नकटाई में ही देखा है।"

"क्या आप उस व्यक्ति को जानते हैं?"

"बस इतना जानता हूं कि वह लगभग रोजाना ही कैलाश से मिलने आया करता था। उसके पास गहरे नीले रंग की फिएट कार है।"

"इसका मतलब है वह भी कैलाश का हत्यारा हो सकता है।"

फिर वे तीनों चुपचाप सोचने लगे।

अचानक सुरेश ने कहा—"इस समय तो कैलाश के हत्यारे की खोज के सिलसिले में आपके पास दो ही कार्ड हैं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सब-इंस्पेक्टर और कमल चौंककर सुरेश की ओर देखने लगे।

सुरेश ने कहा—"पहला कार्ड तो यह टाई-पिन है और दूसरा है कैलाश की पत्नी।"

"लेकिन अभी-अभी तो आप उन्हें निर्दोष सिद्ध करने की कोशिश कर रहे थे।" सब-इंस्पैक्टर ने सुरेश को घूरा।

"मैं अब भी उन्हें दोषी नहीं बता रहा। इस घर में कैलाश और उसकी पत्नी ही रहते थे। इसलिए कैलाश के मित्रों-परिचितों के सम्बन्ध में वही सब से अधिक जानती होगी। इसलिए आपको सबसे पहले सविता को खोजना चाहिए।"

कमल ने ध्यान से सुरेश की ओर देखा और फिर इंस्पैक्टर से बोला—

"यह ठीक कह रहे हैं। आप आरंभिक कारवाई पूरी करके लाश उठवा दीजिए।"

"क्या यहां कोई नौकर नहीं है?"

"मैं तो पिछले दो महीनों से ही इनके पड़ौस में आया हूं। मैंने तो कभी कोई नौकर देखा नहीं।" कमल ने कहा।

सुरेश बोला—"आप ठीक कह रहे हैं। इन लोगों की आर्थिक स्थिति ऐसी न थी कि नौकर रख पाते।"

"आप उनके सम्बन्ध में इतने विस्तार से कैसे जानते हैं?"

"सविता देवी ने ही बताया था।"

"लेकिन कैलाश तो बहुत ही सफल बीमा एजेन्ट थे," कमल ने कहा।

"जी हां, लेकिन उससे भी बड़ा शराबी था। अगर उसे सुसराल से आर्थिक सहायता न मिलती रहती तो शायद अब तक दोनों फाकों से मर गए होते।"

"आप मृतक के सम्बन्ध में बहुत-कुछ जानते हैं।"

"मैंने आपको बताया न, कैलाश मेरा कालेज के जमाने का मित्र था।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

पांच

श्यामू ने करवट बदली और धड़ाम से बेंच के नीचे चला आया। लेकिन दूसरे पल ही वह हड़बड़ाकर खड़ा हो गया और अपने कपड़े झाड़ने लगा। आस-पास बैठे मुसाफिर हंसने लगे। श्यामू ने इधर-उधर निगाह डाली और बौखला कर बोला—

"हाय! कौन हो तुम लोग? मेरे बैडरूम में कैसे घुस आए। मेरा बिस्तर कहां चला गया?"

एक मुसाफिर हंसते हुए बोला, "लगता है डट कर पी है।"

"क्या पी गया हूं? भगवान की कसम ले ले। ज़िन्दगी में कभी एक बूंद भी चखी हो। लेकिन तुम हो कौन और अंदर कैसे घुस आए?"

"जनाब, आप अपने बैडरूम में नहीं स्टेशन पर हैं।"

"स्टेशन पर?" श्यामू ने बौखला कर इधर-उधर देखा, हांय, मैं स्टेशन पर कैसे पहुंच गया।

मुसाफिर हंसने लगे। श्यामू अपनी खोपड़ी पर कुछ देर हाथ फेरता रहा। फिर चौंककर बोला—

"अरे बाप रे! मैं तो मालिक को लेने आया था," फिर उसने जल्दी से एक मुसाफिर की ओर देखकर पूछा, "भाई साहब, यह साढ़े ग्यारह बजे आने वाली फ्रंटियर मेल कितने बजे आती है?"

मुसाफिर हंस पड़ा—

"जनाब साढ़े ग्यारह बजे आने वाली फ्रंटियर मेल साढ़े ग्यारह बजे ही आती है, क्या आप उसी का इन्तज़ार कर रहे हैं?"

"जी हां, मेरे मालिक उसी ट्रेन से आ रहे हैं।"

"तब तो आपके मालिक घर पहुंच कर मज़े से सो रहे होंगे।"

"क्या मतलब? बिना ट्रेन के आए मालिक घर कैसे पहुंच गए?"

"ट्रेन रात के साढ़े ग्यारह बजे आई थी और अब सवेरे के साढ़े

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सात बज रहे हैं।"

"अरे बाप रे!"

श्यामू ने एक बार अपनी खोपड़ी सहलाई और फिर सरपट दौड़ता हुआ स्टेशन से बाहर निकल गया। और फिर सरपट दौड़ता ही चला गया।

० ० ०

सुरेश की टैक्सी गेलार्ड होटल के सामने रुक गई। किराया चुकाकर वह टैक्सी से उतरा और थके-थके पांव होटल में पहुंच गया। काउंटर पर पहुच कर उसने बैग काउंटर पर रख दिया और काउंटर गर्ल उसी ओर देखने लगी।

काउंटर गर्ल ने कहा—"फर्माइए जनाब!"

सुरेश ने कहा—"रूम नम्बर ग्यारह। यह रूम सुरेश के नाम बुक है। मेरा नौकर यहां मौजूद है।"

"एक मिनट प्लीज़।"

काउंटर गर्ल रजिस्टर खोलने लगी। सुरेश ने काउंटर से टेक लगा ली और जेब में से सिगरेट निकालने लगा। तभी श्यामू तेज़ी से दौड़ता हुआ अन्दर आया और बड़ी ज़ोर से काउंटर से टकराया। काउंटर गर्ल उछल पड़ी और आश्चर्य से श्यामू की ओर देखने लगी।

श्यामू काउंटर पर दोनों हाथ टेक कर हांफते हुए बोला—"मेरे ...मेरे मालिक तो नहीं आए?"

सुरेश इत्मीनान से खड़ा रहा। श्यामू ने एक उचटती नज़र सुरेश पर डाली लेकिन फिर काउंटर गर्ल की ओर देखने लगा जो आश्चर्य से आंखें फाड़े उसकी ओर देख रही थी।

श्यामू ने हांफते हुए कहा—"बताओ ना...मेरे मालिक...!"

"आप किस मालिक को पूछ रहे हैं?"

"अरे वही जिनके नाम से ग्यारह नम्बर का कमरा बुक है।"

"ओहो, वह साहब यह खड़े तो हैं।"

काउंटर गर्ल ने सुरेश की ओर इशारा किया। श्यामू ने सुरेश की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ओर देखा और उछल पड़ा। कुछ देर आंखें फाड़े उसे देख रहा था। फिर हांफते हुए बोला—

"बताओ ना ··· मेरे मालिक ··· !"

फिर सुरेश की ओर देखकर उछल पड़ा, "कमाल करते हैं आप भी। मैं साढ़े नौ बजे से स्टेशन पर आपकी बाट देख रहा हूं। साढ़े ग्यारह बजे फ्रंटियर मेल आई तो मैंने सारा प्लेटफार्म छान मारा लेकिन आप कहीं दिखाई ही नहीं पड़े।"

"हां," सुरेश ने रूखेपन से कहा, "मैं अफीम की गोली खाकर बैंच पर पड़ कर सो गया था।"

"हाय," श्यामू आंखें फाड़कर बोला, "आपने कब से शुरू कर दी ?"

"जब से तुमने छोड़ी।"

"तो आपने मुझसे इसलिए छुड़वाई थी की खुद शुरू कर दें।"

"बको मत ! कमरे में चलो। मैं बहुत थका हुआ हूं। रात भर की नींद पूरी करने के बाद तुम्हारी खबर लूंगा।"

श्यामू का चेहरा फक पड़ गया। उसने होंठों पर जीभ फेरी और एक ओर बढ़ते हुए बोला—

"आइए।"

सुरेश श्यामू के साथ कमरे की ओर बढ़ गया। काउंटर गर्ल ने ऐनक उतार कर शीशे साफ किए और फिर गर्दन झटक कर बोली—"उंह ! मालिक और नौकर दोनों ही अफीमची हैं—नानसेन्स।"

फिर उसने पर्स से एक छोटी-सी शीशी निकाली और मुंह से लगा कर दो घूंट भर लिए। फिर शीशी पर्स में रखकर रजिस्टर पर झुक गई।

० ० ०

सुरेश की आंखें खुलीं, तो वह कुछ देर बिना हिले-डुले यूंही पड़ा रहा। फिर एक लम्बी-सी अंगड़ाई लेकर उठ बैठा। लेकिन उठते ही उसकी नज़र कमरे के दांये कोने पर गई और वह चौंक पड़ा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोने में दीवार से टेक लगाए श्यामू सिर के बल खड़ा था। और उसने दोनों हाथों से कान पकड़ रखे थे।

सुरेश ने आश्चर्य से पूछा --"यह क्या कर रहे हो?"

"अपनी खबर ले रहा हूं।"

"वह क्यों?"

आपने कहा था न कि जब जागोगे तो मेरी खबर लेंगे। मैंने सोचा क्यों न खुद ही अपनी खबर ले लूं ताकि आपको तकलीफ न करनी पड़े।"

सुरेश हंस पड़ा--"चलो माफ किया। अगर आइन्दा खाई तो टांगें बांधकर छत से लटका दूंगा।"

"तोबा कीजिए। आपको कानोंकान खबर नहीं होगी।"

"अच्छा, कितने बजे हैं?"

"सिर्फ दो बजकर पन्द्रह मिनट हुए हैं।"

"ओह, इसका मतलब है मैं बहुत देर सोया," सुरेश उठते हुए बोला।

"जी हां, जितनी देर उस बेचारे के भाग्य में मक्खियां मारनी लिखी थीं आप उतनी देर सो लिए।"

"किसके भाग्य में?"

"आधे घंटे से आपके इंतज़ार में बैठा है।"

"कौन है?"

"मालूम नहीं। कहता है एस० पी० वर्मा के यहां से आया हूं। मैंने कह दिया साहब रात-भर के जागे हुए हैं आराम कर रहे हैं।"

"कह दो उठ गए।"

सुरेश उठकर बाथरूम में चला गया।

लगभग आधे घण्टे बाद सुरेश कपड़े बदलकर ड्राइंग-रूम में पहुंचा तो कमल को देखकर चौंक पड़ा।

"कमल बाबू आप?"

"जी हां," कमल जल्दी से उठ खड़ा हुआ और शर्मिन्दा-सा बोला

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आपने अपना पूरा परिचय दे दिया होता तो मुझसे इतनी गुस्ताखियां न हुई होतीं।"

"कोई बात नहीं। आप तो जानने ही हैं कि हमें अपनी असलियत छिपानी पड़ती है।"

"कई दिन पहले एस० पी० साहब ने बताया था कि इन्स्पैक्टर सुरेश कुमार ट्रांसफर होकर यहां आ रहे हैं। आपके रहने की व्यवस्था करने का काम उन्होंने मुझे ही सोंपा था। आपका नौकर श्यामू कुछ दिन पहले यहां आ चुका है। लेकिन एस० पी० साहब से वह कल ही मिला है। उसने कल ही होटल का पता उन्हें दिया है। आज सुबह जब मैं आफिस गया तो एस० पी० साहब ने वह पता मुझे दिया।"

"आपका डिपाटमेण्ट से क्या सम्बन्ध है।"

"मैं असिस्टेण्ट सब-इन्स्पैक्टर के रैंक पर हूं। आपको असिस्ट करने का काम मेरे ही सुपुर्द किया गया है।"

सुरेश मुस्कराया, "और मेरे निवास-स्थान की व्यवस्था ···?"

"उसी फ्लैट में की गई है जिसमें मैं पिछले दो महीने से रह रहा रहा हूं।"

"यह तो बहुत अच्छी बात हुई।"

तभी बैरा चाय की ट्रे मेज़ पर रख गया।

सुरेश ने चाय में एक चम्प चीनी डालकर चलाते हुए कहा, "आपको शायद यह भी मालूम होगा कि मैं विशेष रूप से किस मिशन के लिए यहां आया हूं।"

"जी हां!" कमल बोला, "यह केस पहले इन्स्पैक्टर रघुराज के सुपुर्द किया गया था। इन्स्पैक्टर रघुराज की हत्या के बाद यह निश्चय किया गया कि किसी बाहरी अफसर के सुपुर्द किया जाए। इन्स्पैक्टर रघुराज को मैं ही असिस्ट कर रहा था। इसलिए मैं इस केस के सम्बन्ध में अधिक जानता हूं।"

"आप पिछले दो महीने से ही मोरिस नगर पर क्यों रह रहे हैं?"

"इसका भी कारण है सर," कमल बोला, "इन्स्पैक्टर रघुराज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

भी बहुत ही बुद्धिमान अफसर थे। उन्होंने अपनी छानबीन के बीच संदेह प्रगट किया था कि इस षड्यन्त्र का सूत्रधार मौरिस रोड पर ही कहीं रहता है। क्योंकि गिरोह का एक सदस्य हमारी नज़रों में मौरिस रोड पर ही आया था और यहीं मारा गया था। उसकी हत्या शायद राजदारी के लिए की गई थी। मरने से पहले उसके होंठों से एक ही शब्द निकला था···'मौरिस रोड',···इसलिए मौरिस रोड पर ही रहने का प्लान इन्स्पैक्टर रघुराज ने बनाया था। उसी प्लान के अनुसार मैं मौरिस रोड पर इस फ्लैट में रहने लगा था।"

"हूं।" सुरेश ने धीरे-से कहा।

दोनों चाय पीने लगे। कुछ देर बाद सुरेश ने पूछा। "मौरिस रोड के किसी व्यक्ति पर आपको संदेह था?"

"जी हां। मुझे कैलाश पर ही संदेह था।"

"कैलाश पर?" सुरेश चौंक पड़ा।

"जी हां। और इस संदेह का आधार वही व्यक्ति था जिसका टाई-पिन कैलाश की मुट्ठी में पाया गया है।"

"क्या मतलब?"

"मैंने रात जानबूझ कर ही मौरिस रोड के थानेदार को कुछ नहीं बताया था। वरना मैं उस आदमी को अच्छी तरह जानता हूं।"

"कौन है वह?"

"लिंकन रोड पर एक आलीशान क्लब है। नाइट क्लब। वह उसी क्लब का मालिक है। आमतौर पर लोग उसे गोल्डी कहते हैं। सम्भव है यह उसके बचपन का प्यार का नाम हो। लेकिन मेरे विचार से उसे गोल्डी इसलिए कहा जाता है कि वह सोना पहनने का बहुत शौकीन है। उसका यह टाईपिन भी सोने का है। उसकी उंगलियों में हर समय सोने की कम-से-कम छः अंगूठियां पड़ी रहती हैं। सोने की मूठ की छड़ी लिए रहता है। चाल-ढाल और रहन-सहन से किसी बहुत बड़े घराने का व्यक्ति मालूम होता है।"

"उस पर संदेह का कारण?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"जिस आदमी की हत्या हुई थी उसने मरने से पहले मौरिस रोड का नाम लिया था। वह आदमी गोल्डी के नाइट क्लब में ही काम करता था। वह बारमैन था।"

"हूं। वह आदमी आप लोगों की नज़रों में कैसे आ गया?"

"उसका पता इन्स्पैक्टर रघुराज ने ही लगाया था। जब इस शहर के एक बहुत बड़े आदमी की सुन्दर और जवान लड़की अचानक गायब हो गई तो उसके गुम होने की रिपोर्ट पुलिस में की गई। छानबीन करने से पता लगा कि वह लड़की अन्तिम बार गोल्डी के ही नाइट क्लब में देखी गई थी। उस लड़की के मंगेतर ने बयान दिया था कि उस लड़की को उस बारमैन के साथ ही नाइट क्लब से निकलते हुए देखा गया था।"

"उस लड़की का कुछ पता चला?"

"जी नहीं। जिस तरह पिछली गुम हुई लड़कियों का कुछ पता नहीं चला उसी तरह उस लड़की का भी कोई पता नहीं चला।"

"गोल्डी के नाइट क्लब में पूछताछ की गई थी?"

"जी हां। लेकिन वहां काम की कोई बात मालूम न हो सकी। गोल्डी का शहर में काफी सम्मान और मेल-जोल है। ठोस प्रमाण न होने के कारण कोई कार्यवाही नहीं की जा सकी!"

"हूं... गोल्डी की मित्रता कैलाश से थी?"

"जी हां। वह लगभग रोज़ाना ही कैलाश के यहां आता था।"

"रात कैलाश की लाश उसके फ्लैट में पाई गई है। इसका अर्थ है कि कैलाश या तो गोल्डी का ही साथी था या गोल्डी उसके माध्यम से काम लिया करता था। शायद गोल्डी को उस पर किसी प्रकार संदेह हो गया हो कि कैलाश की निगरानी की जा रही है। इसलिए राजदारी के लिए उसे मार डाला गया हो।"

"बहुत सम्भव है सर।"

"अगर गोल्डी के साथ कैलाश के इतने निकट सम्बन्ध थे तो सविता उसके सम्बन्ध में अवश्य ही कुछ-न-कुछ जानती होगी। और शायद

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

इसीलिए उसे गायब किया गया है।"

"मेरा भी यही विचार है।"

"इसलिए हमें सबसे पहले सविता की खोज पर ही ज़ोर देना चाहिए।"

"ठीक है सर, लेकिन हम उन्हें तलाश कहां करेंगे?"

"गोल्डी का एक ही अड्डा है··· उसका रोजी नाइट क्लब···हमें सबसे पहले उसी ओर ध्यान देना चाहिए।"

"आपका विचार ठीक है सर!"

कुछ देर खामोशी रही। फिर कमल ने कहा—

"आप अपना सामान आज ही फ्लैट में भिजवा दीजिए।"

"हां श्यामू को फ्लैट का पता दे दीजिए। वह पहुंचा देगा।"

तभी श्यामू आ गया। कमल ने उसे मौरिस रोड के फ्लैट का पता बता दिया। सुरेश ने उससे कहा कि वह सामान लेकर फ्लैट में चला जाए।

अचानक न जाने क्या सोचकर सुरेश ने कमल से पूछा—

"हां, एक बात पूछना चाहता था मैं।"

"जी?"

"रात हमने जिस व्यक्ति के यहां से फोन किया था उसका नाम डा० जगदीश ही है ना?"

"जी हां, लेकिन आपको उसका नाम कैसे मालूम हुआ?" कमल ने आश्चर्य से पूछा।

"मैंने वहां से वापसी में उसके नाम की प्लेट देखी थी विशेष रूप से।"

"विशेष रूप से क्यों?"

"बस यूं ही। न जाने क्यों मुझे वह आदमी कुछ रहस्यपूर्ण सा लगा था। कब से रह रहा है उस फ्लैट में?"

"मैंने उसके सम्बन्ध में विस्तार से कभी कुछ मालूम नहीं किया क्योंकि मैं उसे सीधा-सादा आदमी समझता हूं।"

कन्या रेखी
कन्या रेखी स्मारक
पुस्तकालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"प्रेक्टिस करता है ?"

"उसी इलाके में एक छोटी-सी डिस्पैंसरी है जहां वह एक घण्टा सुबह और एक घण्टा शाम को बैठता है। मरीजों के लिए उसके व्यक्तित्व में कोई आकर्षण नहीं है। इसलिए कभी-कभार कोई भूला-भटका मरीज आ फंसता है। वह मरीज़ उस इलाके के नौकरों में से कोई होता है।"

"उसका कोई सम्बन्धी उसके साथ नहीं रहता ?"

"जी नहीं। मैंने तो उसे हमेशा अकेला ही देखा है।"

"खाना वगैरह कौन बनाता है उसके यहां ?"

"यह भी मुझे मालूम नहीं। शायद खुद ही बनाता है। क्योंकि मैंने उसे कभी किसी होटल में जाते हुए नहीं देखा। न कभी किसी नौकर को ही देखा।"

"उसकी प्रैक्टिस भी कोई खास नहीं है। फिर उसका खर्च कैसे चलता है ? उसके यहां टेलीफोन भी है।"

"पता नहीं सर। इन बातों पर मैंने कभी विचार ही नहीं किया।"

सुरेश सोच में डूबा कमल की ओर देखता रह गया।

० ० ०

सविता ने खाने की ट्रे उठाकर ज़ोर से फेंक दी और हड़बड़ाकर पीछे हट गई। सारा खाना और बर्तन फर्श पर बिखर गए।

सविता ने चीखकर कहा—"मैं खाना नहीं खाऊंगी, नहीं खाऊंगी।"

"नौकर ने लापरवाही से कंधे झटककर कहा—"मत खाइए। साहब खुद खिला देंगे।"

फिर वह बाहर निकल गया। सविता भी तेज़ी से दरवाज़े की ओर झपटी लेकिन नौकर ने फुर्ती से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

सविता ने ज़ोर-ज़ोर से दरवाज़ा पीटते हुए कहा—"खोलो ··· दरवाज़ा खोलो ··· मैं कहती हूं दरवाज़ा खोलो।"

"साहब का हुक्म नहीं है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मैं पूछती हूं मुझे यहां किसने बन्द किया है ? और क्यों बन्द किया है ?"

बाहर से कोई उत्तर नहीं मिला। सविता दरवाज़े पर हाथ रखे खड़ी रह गई। उसकी आंखें भर आईं और वह दरवाज़े से सिर टिकाकर रोने लगी।

अचानक बाहर से दरवाज़े की चटकनी खुलने की आवाज़ आई। सविता ने जल्दी से आंसू पोंछे और पीछे हट गई। फिर वह फुर्ती से दरवाज़े की आड़ में हो गई।

दरवाज़े के दोनों पट खुले और एक आदमी अन्दर आया। सविता को केवल उसकी पीठ ही दिखाई दी। वह तेज़ी से दरवाज़े से बाहर झपटी लेकिन दो आदमियों ने उसे दबोचकर फिर अन्दर धकेल दिया।

सविता एक चीख के साथ फर्श पर जा गिरी। उस आदमी की टांगों के पास जिसकी टांगों के पास ही एक छड़ी भी टिकी हुई थी।

सविता ने धीरे-धीरे निगाहें उठाईं। और फिर वह हड़बड़ाकर पीछे सरक गई। उसने कांपती हुई आवाज़ में कहा—

"त···त·· तुम···गोल्डी···!"

"हां, मैं गोल्डी," गोल्डी ने बड़े शान्त भाव से कहा।

फिर उसने पाइप का कश लेकर धुंआ हवा में बिखेर दिया।

सविता उसे खूंखार नज़रों से घूरती हुई बोली—"तो तुमने मुझे कैद कर रखा है।"

"खड़ी हो जाओ।" गोल्डी ने उसी शान्त भाव से कहा।

"मैं पूछती हूं मुझे यहां क्यों कैद किया गया है।"

"खड़ी हो जाओ," गोल्डी के होंठों से सांप जैसी फुसकार निकली।

सविता मशीन की तरह खड़ी हो गई।

गोल्डी ने उसकी आंखों में देखते हुए कहा—

"तुमने खाना क्यों नहीं खाया ?"

"मैं नहीं खाऊंगी।"

"फाकों से जान तो निकलने से रही।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मुझे जाने दो।"

"क्या करोगी बाहर जाकर। बाहर निकलते ही तुम्हें पुलिस गिरफ्तार कर लेगी। तुम पर मुकदमा चलेगा। तुम्हें या तो उम्र भर की कैद हो जाएगी या फांसी। क्योंकि पुलिस तुम्हारे पति के हत्यारे के रूप में तुम्हें खोज रही है।"

"यह झूठ है। मैंने उनकी हत्या नहीं की। उनकी हत्या तुमने की है।"

"और मैं तुम्हें छोड़कर पुलिस के लिए एक गवाह जुटाऊं ताकि आसानी से फांसी के तख्ते पर पहुंच जाऊं।"

"तुमने मेरा सुहाग उजाड़ा है। तुम्हें इसका दंड ज़रूर भुगतना पड़ेगा।"

"बको मत। कैलाश की हत्या तुमने की है," गोल्डी ने ठंडे लहजे में कहा, "और तुम पुलिस तक कभी न पहुंच पाओगी।"

"मैं कहती हूं, आखिर मैंने तुम्हारा बिगाड़ा क्या है?" सविता ने भर्राई हुई आवाज़ में कहा।

'तुमने!" गोल्डी ने ज़हरीली मुस्कराहट के साथ कहा, "क्या तुम नहीं जानतीं कि तुमने मेरा क्या बिगाड़ा है? क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूं? क्या तुम्हें मालूम नहीं था कि अगर तुम मेरी जीवन साथी न बनीं तो मेरा जीवन तबाह हो जायगा? फिर भी तुमने मेरे बजाय कैलाश को जीवन साथी बनाया।"

"यह झूठ है," सविता ने क्रुद्ध स्वर में कहा, "तुम्हें मुझसे प्यार नहीं था। तुम्हें मेरे शरीर के सौन्दर्य और मेरी जवानी से प्यार था। मैं जानती थी कि तुम्हारी ज़िन्दगी में दर्जनों लड़कियां आ चुकी हैं। तुमने सबके साथ प्यार का नाटक रचकर अपनी वासना की आग बुझाकर उन्हें ठोकर मार दी है। अगर मैं भी तुम्हारे जाल में फंस गई होती तो तुम मेरे साथ भी वही सलूक करते जो तुमने दूसरी लड़कियों के साथ किया है, अपना उल्लू सीधा होने के बाद तुम मेरा नाम तक भूल जाते। लेकिन मैं तुम्हारे हत्थे न चढ़ सकी। इसलिए तुम्हारे दिल में एक तड़प

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। और तुम अपने कमीनेपन के सारे हथकंडों को इस्तेमाल करके मेरा शरीर पाना चाहते हो।"

गोल्डी के होंठों की मुस्कराहट गहरी हो गई। उसने शान्त स्वर में कहा—"तुम कुछ भी कहो। तुम अच्छी तरह जानती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं। मैंने आज तक तुम्हारे साथ कभी कोई ज्यादती नहीं की है। रात से अब तक तुम मेरे कब्जे में हो। यहां तुम्हारी दाद-फरियाद सुननेवाला भी कोई नहीं है। अगर मैं चाहता तो अब तक कभी का तुम्हारे शरीर पर अधिकार कर चुका होता। लेकिन मैं जानता हूं तुम्हें एक न एक दिन मेरे आगे झुकना ही पड़ेगा।"

"मेरे जीते जी वह दिन कभी नहीं आयेगा गोल्डो। क्योंकि मैं आरम्भ से ही तुम्हें घृणा करती हूं। उसी दिन से जिस दिन मेरी सहेली राजी तुम्हारे बच्चे की मां बनने वाली थी और तुमने उसे ठुकराकर आत्म-हत्या कर लेने पर मजबूर कर दिया था।"

"लेकिन गोल्डी ने निराश होना नहीं सीखा। मैं जानता हूं तुम एक न एक दिन मेरा हाथ थामने पर मजबूर हो जाओगी। मैं उस दिन की प्रतीक्षा करूंगा।"

तभी दरवाज़े के पास दौड़ते हुए कदमों की आहटें गूंज उठीं। गोल्डी ने दरवाज़े की ओर देखा। दरवाज़े में एक आदमी दिखाई दिया जो काली पैंट और धारीदार बनियायन पहने हुए था।

गोल्डी ने उससे पूछा, "क्या बात है?"

"बॉस आज क्लब में दो-तीन नए आदमी दिखाई दे रहे हैं।"

"क्या नए आदमियों के आने पर कोई पाबन्दी है?"

"नहीं बॉस। लेकिन वे कुछ संदिग्ध दिखाई देते हैं। संभव है उनका सम्बन्ध सी० आई० ए० से हो।"

"इस संदेह का कारण?"

"उन दोनों के चेहरों पर दाढ़ियां हैं, जो मुझे नकली मालूम होती हैं।"

"हूं! मैं देखता हूं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोल्डी बाहर चला गया। दूसरे आदमी ने दरवाज़ा बाहर से बन्द कर दिया।

गोल्डी शान्त भाव से चलता हुआ उस कमरे में पहुंचा जिसमें बहुत ही मद्धिम नीली रौशनी फैली हुई थी। गोल्डी ने एक दीवार के पास पहुंचकर एक तस्वीर का फ्रेम एक ओर सरकाया। फ्रेम के पीछे एक खिड़की निकल आई जिस पर मोटा-सा शीशा निकला हुआ था। जिसमें से नीचे क्लब के हाल का दृश्य अच्छी तरह दिखाई दे रहा था।

बनियान वाले ने खिड़की पर झुकते हुए गोल्डी को बताया—"मैं उन दोनों के बारे में कह रहा हूं जो सफेद सूट पहने हुए हैं। जिनकी दाढ़ियां काली हैं। वह जो तेरह नम्बर की मेज़ पर बैठे हैं।"

"हूं!" गोल्डी ने पाइप का कश लेकर धीरे-से कहा।

उसकी निगाहें उन दोनों पर जम गईं, जो काफी पीते हुए आपस में कुछ बातें कर रहे थे। लेकिन उनकी बाज़ जैसी तेज निगाहें कभी-कभी पूरे हाल पर घूम जाती थीं।

गोल्डी ने उन दोनों की ओर देखते हुए बड़ी शान्ति से कहा—

"तुम ठीक कहते हो। इनकी दाढ़ियां सचमुच नकली हैं।"

"इसके अलावा ये लोग जिस अंदाज़ में बार-बार हाल पर निगाह डालते हैं, क्या वह अंदाज़ हमारे लिए संकट का सूचक नहीं है।"

"हूं!" गोल्डी शान्त स्वर में बोला, "स्विच नम्बर तेरह आन करो।"

बनियान वाले ने आगे बढ़कर स्विच बोर्ड पर लगा हुआ तेरह नम्बर का स्विच आन कर दिया। कमरे में हल्की-हल्की भिनभिनाहट के साथ ही एक पुरुष स्वर गूंज उठा।

"बड़ा रौनकदार क्लब है। मेरा विचार है यहां जितने भी मेम्बर हैं धनी घरानों के होंगे।"

"जी हां सर!" दूसरी आवाज़ आई, "यह क्लब इतना मंहगा है कि मामूली आदमी तो यहां घुसने की हिम्मत ही नहीं कर सकता।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कब से है यह क्लब ?" पहली आवाज़ आई।

"अधिक पुराना नहीं है। बस सवा साल हुआ होगा। लेकिन इतने समय में ही बहुत प्रसिद्ध हो गया है। क्योंकि यहां नित नए प्रोग्राम पेश किए जाते हैं। क्लब में लड़कियां ही सर्व करती हैं। हर ग्राहक से इस तरह बातें कतती हैं जैसे उनसे फ्लर्ट कर रही हों।"

गोल्डी ने पाइप का कश लेकर धीरे-से कहा, "तुम्हें गलतफहमी भी हो सकती है। दोनों नए ग्राहक हैं!"

"मैंने तो केवल उनकी दाढ़ियों पर सन्देह किया था।"

"ठीक है, संदेह दूर करने की कोशिश करो।"

"ओ० के० बॉस!"

बनियान वाला अदब से झुका पीछे हटा और बाहर निकल गया।

गोल्डी शान्त खड़ा उन दोनों की ओर देखता रहा। उनमें से एक सिगरेट सुलगा रहा था और दूसरा उससे कुछ कह रहा था।

छः

सुरेश ने सिगरेट सुलगा कर एक लम्बा कश लिया और कमल से बोला—

"अभी तक गोल्डी दिखाई नहीं दिया।"

"वह बहुत कम बाहर निकलता है। विशेष अवसरों पर ही दिखाई देता है।"

"मैं उसे देखना चाहता हूं।"

"संभव है कि थोड़ी देर में दिखाई दे जाए।"

अचानक हाल की रोशनी बदल गई। ऐसा लगा जैसे सुर्ख मलगजी और बादलों से भरी शाम, डूबते-डूबते चांद निकल आया हो और ठंडी-ठंडी चांदनी चारों ओर फैल गई हो।

रोशनी के साथ-साथ आर्केस्ट्रा की धुन भी बदल गई थी।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुरेश और कमल एक ओर बने स्टेज की ओर देखने लगे। वहां दो ऐंग्लो इंडियन लड़कियां अर्धनग्नावस्था में कैबरे डांस कर रही थीं। उनके चमकीले गुलाबी सफेद बदन के साथ-साथ दो स्पाट लाईटें स्टेज पर रेंग रही थीं।

डांस करते-करते दोनों स्टेज से उतर आईं। स्पाट लाइटें उनका पीछा करती रहीं। लड़की हाल में झूम-झूम कर नाच रही थीं और बैठे हुए लोगों के साथ छेड़-छाड़ कर रही थीं। किसी आदमी के सिर के बाल बिगाड़ देतीं, किसी की टाई खींच लेतीं। वे नाचती हुई आगे बढ़ रही थीं और लोग उनकी अदाओं से आनन्दित हो रहे थे।

एक नर्तकी की निगाह सुरेश और कमल की मेज़ की ओर उठीं। सुरेश ने महसूस किया कि नर्तकी की निगाहें पलभर के लिए ठिठकीं और फिर दूसरी मेज़ पर बैठे लोगों पर चली गई। सुरेश संभलकर बैठ गया और कमल से धीरे से बोला—

"सावधान ···!"

"जी ···!" कमल चौंक पड़ा।

"शायद इन दोनों नाचने वालियों का निशाना हमारी डाढ़ियां हैं।"

"क्यों?"

"अगर हमारा शिकार गोल्डी ही है तो स्पष्ट है कि इतना बड़ा धंधा चलाने वाला आदमी बेवकूफ नहीं हो सकता। दो अजनबी दाढ़ी वाले उसके लिए चिन्ता का कारण बन सकते हैं।"

"तब तो हमें यहां नकली डाढ़ियां लगा कर नहीं आना चाहिए था।"

"फिर यह अंदाजा कैसे होता कि हमारा शिकार गोल्डी ही है।"

"जी, मैं समझा नहीं।"

"यदि दो अजनबी उसकी चिन्ता का कारण होते हैं, तो निश्चय ही उसकी आत्मा अपराधी है। हमारी दाढ़ियां ही ऐसी नहीं हैं कि असली मालूम हो सकें। इसलिए गोल्डी का हमारी ओर आकर्षित होना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आवश्यक है।"

"लेकिन फिर हमारे चेहरे उसकी नज़र में आ जायेंगे।"

"चिन्ता मत करो।"

कमल चुप होकर नर्तकियों की ओर देखने लगा, जो काफी निकट आ गई थीं। उनकी छेड़छाड़ पहले की तरह जारी थी। जिस पुरुष से वे छेड़खानी करतीं उसका चहरा खुशी से लाल पड़ जाता था।

दोनों नर्तकियां नाचती हुई सुरेश और कमल के पास पहुंच गईं। दोनों के हाथ एक साथ आगे बढ़े और सुरेश तथा कमल की दाढ़ियां उखड़ कर उनके हाथों में आ गईं।

हाल में कई जोरदार रहकहे गूंज उठे।

साथ ही हाल की सारी बत्तियां बुझ गईं। कई दबी-दबी चीखें उभरीं। किसी ने चीख कर कहा—"आप लोग घबड़ाइए नहीं। बिजली अचानक ही चली गई है अभी आ जायगी।"

फिर आधे मिनट बाद ही हाल में पहले जैसी बत्तियां जगमगा उठीं। हाल में फिर कहकहे गूंज उठे।

दोनों नर्तकियां फिर नाचने लगीं। उन दोनों ने सुरेश और कमल के चेहरों से नोची हुई डाढ़ियां लगा रखी थीं। फिर वे नाचती हुई स्टेज पर चढ़ कर गायब हो गईं।

हाल में खड़े इंतजाम करने वाले बाज जैसी नजरों से इधर-उधर देखते हुए हाल में घूम रहे थे। हाल में बैठे हुए लोगों को पता भी न था कि वे सुरेश और कमल को खोज रहे हैं। जो बत्ती बुझते ही गायब हो गए थे।

० ० ०

गोल्डी बड़े इत्मीनान के साथ खिड़की के पास खड़ा नीचे देख रहा था। और पाइप के हल्के-हल्के कश ले रहा था।

तभी बनियान वाला दौड़ता हुआ अंदर आया और बोला—

"बॉस··· वे दोनों भाग गए।"

"मुझे मालूम है।" गोल्डी ने निश्चिन्त भाव से कहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मेरा संदेह गलत नहीं था। वे लोग खुफिया पुलिस के ही आदमी थे।"

"हूं।"

"हमारे आदमियों की गलती से वे लोग निकल गए। वरना मैंने अंधेरा इसीलिए कराया था कि उन्हें पकड़ लिया जाय।"

"चिन्ता न करो उनमें से एक को मैं को अच्छी तरह पहचानता हूं। वह कैलाश का पड़ोसी है।"

"तो क्या उसका सम्बन्ध गुप्तचर विभाग से है?"

"संभव है हो। लेकिन हमारे लिए यह बात रत्ती भर भी चिन्ता की कारण नहीं है।"

"फिर मेरे लिए क्या आदेश है?"

"अगले आदेश की प्रतीक्षा करो।"

"ओ० के० बॉस।"

बनियान वाला अदब से झुक कर पीछे हटा और बाहर निकल गया गोल्डी पाइप के हल्के हल्के कश लेता रहा। उसके चेहरे पर रत्ती भर भी चिन्ता की छाया न थी।

० ० ०

सुरेश ने अचानक कार रोक दी। लेकिन इंजन बंद नहीं किया। वह किसी सोच में था।

कमल ने पूछा—

"क्या बात है सर?"

"तुम्हें विश्वास है कि कैलाश की लाश की मुट्ठी में मिला हुआ टाई-पिन गोल्डी का ही था?"

"पूरा-पूरा विश्वास है। मैंने बीसियों बार देखा था।"

"और गोल्डी इस क्लब का मालिक है जिसमें हमारी दाढ़ियां नोची गई हैं।

"मैं समझा नहीं, सर।"

"अब इसमें किसी संदेह की गुंजाइश नहीं है कि हमारा शिकार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोल्डी ही है।"

इसका अनुमान तो उसके टाई-पिन से ही हो गया था। अगर उसका इस रहस्यपूर्ण गिरोह से सम्बन्ध नहीं है तो वह कैलाश का हत्यारा अवश्य है।"

"हमसे एक बड़ी गलती और हो गई है।"

"वह क्या सर!"

"हमें अंधेरा होते ही वहां से भागना नहीं चाहिए था।"

"क्यों?"

"अंधेरा अपने लिए ही किया गया था। वे लोग हमें पकड़ना चाहते थे।"

"निश्चित है।"

"अगर हम पकड़ लिए जाते तो उनके अपराधी जीवन को और निकट से देख सकते।"

कमल आश्चर्य से सुरेश की ओर देखने लगा। सुरेश ने कार स्टार्ट कर दी।

कमल ने कहा— "अब क्या प्रोग्राम है?"

"सविता तो गोल्डी से अच्छी तरह परिचित होगी?"

"जी हां। गोल्डी उनके घर रोजाना ही आता था।"

"और सविता कैलाश की हत्या के बाद रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो गई?"

"जी हां।"

"इसका अर्थ है कि सविता को गोल्डी की ही कैद में होना चाहिए।"

"अब तो मुझे भी विश्वास है कि वह गोल्डी की ही कैद में है। अगर कैलाश की मुट्ठी से गोल्डी का पिन बरामद न होता तो मैं यही समझता कि सविता ने ही कैलाश की हत्या की है और गायब हो गई है।"

"और गोल्डी को जाल में फांसने के लिए सविता का मिलना

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बहुत ज़रूरी है।"

"स्पष्ट है।"

"ठीक है। तुम कार लेकर जावो," सुरेश स्टेयरिंग से हटता हुआ बोला।

"और आप !"

"अगर सविता गोल्डी के ही कब्जे में ही है तो गोल्डी का अड्डा यह क्लब ही हो सकता है, सविता इसी क्लब में कैद होगी।"

"आप उसे तलाश करने जा रहे हैं।"

"हां।"

"लेकिन मैं आपको इसकी राय नहीं दूंगा।"

"क्यों ?"

"गोल्डी का गैंग खतरनाक है। वहां आपकी जान खतरे में पड़ सकती है।"

सुरेश ने मुस्कराकर कहा--"अगर खतरे से डर लगता हो तो इस विभाग में आने की अपेक्षा जनरल मर्चेन्ट की दूकान खोल लेना ठीक था।"

"फिर भी आपको अकेले नहीं जाना चाहिए।"

"एक आदमी अपने आपको कहीं भी छिपा सकता है। अगर एक-से दो हो जाएं तो उन्हें एक-दूसरे की सुरक्षा की ही चिन्ता लगी रहती है।"

"आप जैसे ठीक समझें।"

"तुम जाओ। मैं किसी-न-किसी समय वापस आजाऊंगा।"

सुरेश कार से उतर गया। और सड़क की ढलान में जाकर अंधेरे में गुम हो गया। कमल ने एक ठंडी सांस ली और कार स्टार्ट कर दी।

० ० ०

क्लब की इमारत के पीछे पहुंच कर सुरेश रुक गया। उंगलियों में दबी सिगरेट नीचे डाल कर उसने जूते की नोक से रगड़ दी और दीवार

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की ऊंचाई का अनुमान लगाने लगा। क्लब के कम्पाउन्ड की चार-दीवारी आदमी के कद से भी ऊंची थी। जिसके अन्दर चारों ओर बगीचा था। बगीचे के बीच में तीन मंज़िली इमारत थी। आधुनिक ढंग की इमारत। जो अपनी सुन्दरता के लिए शहर में विख्यात थी।

सुरेश ने इधर-उधर देखा। इमारत का पिछला हिस्सा बिल्कुल सुनसान था। इमारत के पीछे थोड़ी दूर पर ही समुद्र ठाठें मार रहा था।

सुरेश ने टाई खोल कर कोट की जेब में ठूंस ली और और कोट उतार कर दीवार के पास रख दिया। फिर उसने कुछ कदम पीछे हट कर दौड़ लगाई और उछल कर दीवार का ऊपरी सिरा पकड़ लिया। फिर बड़ी आसानी से दीवार पर चढ़ गया।

दीवार पर लेटे-लेटे ही उसने पिछले कम्पाउन्ड का निरीक्षण किया। इस ओर किसी के आने-जाने की सम्भावना दिखाई न दे रही थी। वह अन्दर कूद गया। लेकिन कूदते ही उसे एक ऊंची बाढ़ के पीछे छिपना पड़ा। क्योंकि उसे वह बनियान वाला दिखाई दे गया जो बगीचे में इधर-उधर देखता हुआ पिछले बरामदे की ओर बढ़ रहा था।

जैसे ही बनियान वाला बरामदे में पहुंचा। किसीके कदमों की चापें सुनाई दीं। बनियान वाला रुक गया। सुरेश ने एक स्त्री को देखा जो बनियान वाले के पास आकर रुक गई।

"ओहो, मेरी! तुम इधर कैसे निकल आईं?" बनियान वाले ने उस स्त्री से पूछा।

"मैं तुम्हीं को ढूंढ़ रही थी मि० गोगी।"

"क्यों?"

"वह लड़की किसी भी तरह खाना खाने को राजी नहीं होती।"

"जहन्नुम में झोंको उसे। साली दो-चार दिन भूखी रहेगी तो अपने आप ठीक हो जाएगी।"

"लेकिन बॉस ने बोला है, उसे किसी भी तरह खाना खिलाओ।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"ओहो !"

"बॉस को उससे खास तौर से दिलचस्पी है। मैंने यह महसूस किया है।"

"वह बॉस की बहुत पुरानी प्रेमिका है।"

"अब समझी। तभी तो बॉस उससे सख्ती का व्यवहार नहीं करता।"

"तब तो उसे किसी-न-किसी तरह खाना खिलाना ही पड़ेगा," गोगी कुछ सोचते हुए बोला।

"बॉस का आदेश यही है।"

"खाना कहां है ?"

"किचन में वापस रख आई हूं। दो बार तो वह बर्तन तोड़ चुकी है। इस बार मैं उसके तेवर देखते ही मैं खाना लेकर लौट आई।"

"अब तुम कहां जा रही हो ?"

मेरी ने मुस्करा कर अंगड़ाई ली और बोली--

"मैं ··· बहुत ज़ोर की नींद आ रही है। सारे दिन एक मिनट का रेस्ट नहीं मिला।"

"यानी सोने जा रही हो," गोगी अर्थपूर्ण अन्दाज़ से मुस्कराया।

"इरादा तो यही है।"

"ठीक है, तुम सोने के लिए चलो। मैं उसे खाना खिलाकर आता हूं।"

"थैंक्यू गोगी। तुम बहुत अच्छे हो।"

गोगी ने अर्थपूर्ण अन्दाज़ में मेरी का हाथ दबाया और फिर अन्दर वाले बरामदे की ओर बढ़ गया। मेरी इमारत से अलग हट कर बने हुए क्वार्टरों की ओर चली गई।

सुरेश कुछ देर सोचता रहा। फिर वह मेरी के पीछे-पीछे चल दिया। मेरी ने एक क्वार्टर का दरवाज़ा खोला और अन्दर चली गई। उसने अन्दर से दरवाज़ा बन्द नहीं किया। गोगी ने जो आना था।

सुरेश ने दरवाज़े के पास पहुंच कर अन्दर झांका। जब मेरी अन्दर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

के कमरे में गुनगुनाती हुई आई तो सुरेश फुर्ती से दरवाज़े के अन्दर घुस गया। उसने धीरे-से पीठ से दरवाज़ा बन्द कर दिया और दबे पांव उस कमरे के पास पहुंच गया जिसमें मेरी थी।

सुरेश ने झांककर देखा। मेरी बड़े मूढ़ में गुनगुनाती हुई व्हिस्की की बोतल से एक गिलास में व्हिकी उंड़ेल रही थी। फिर उसने बिना सोडा मिलाए ही गिलास होंठों से लगाया और खाली कर दिया।

सुरेश आश्चर्य से मेरी को देखता रह गया।

सात

गोगी ने किचन में पहुंच कर ट्रे उठाई और बाहर निकल आया। कुछ देर बाद वह उस कमरे के सामने पहुंच गया जिसमें सविता बन्द थी।

उसने एक हाथ में ट्रे ली और दूसरे हाथ से चटकनी खोल दी। फिर लात मार कर दरवाज़ा खोला। जेब में से चाकू निकाला और कमरे में चला गया।

सविता उसे देखते ही हड़बड़ा कर खड़ी हो गई और चीख कर बोली—

"कितनी बार कह चुकी हूं, मैं खाना नहीं खाऊंगी।"

गोगी ने चाकू का खटका दबाया। उसका फल बाहर निकल आया। छः इंच का चमकदार फल। सविता की आंखों से भय झांक उठा। गोगी ने ट्रे मेज़ पर रख दी और बोला—

"बॉस का हुक्म है। अगर तुमने खाना खाने से इनकार किया तो तुम्हारा एक कान काट लिया जाएगा।"

"नहीं," सविता हड़बड़ाकर कर पीछे हट गई।

"बोलो," गोगी आगे बढ़ते हुए बोला," खाना खाती हो या तुम्हारा कान काट लूं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सविता भयभीत खड़ी रही।

गोगी ने क्रूरता-भरी मुस्कराहट के साथ कहा—

"तुम कितनी सुन्दर हो। लेकिन सोचो अगर तुम्हारा एक कान काट लिया जाए तो तुम्हारा सारा सौन्दर्य मिट्टी में मिल जाएगा।"

सविता ने सम्भल कर कहा, "यह हुक्म गोल्डी ने दिया है?"

"तो क्या मैं झूठ बोल रहा हूं।"

"ठीक है आगे बढ़ो और कान काट लो।"

गोगी सन्नाटे में खड़ा रहा।

सविता ने मुस्करा कर कहा, "काटते क्यों नहीं।"

"तुम चाहती हो कि तुम्हें बदसूरत बना दिया जाए?"

"मैं जानती हूं, गोल्डी मुझे प्यार करता है। वह मुझे बदसूरत देखना कभी भी न चाहेगा। अगर तुमने कोई ऐसी हरकत की तो वह तुम्हारी जान ले लेगा।"

"फिर भी तुम बॉस की बात नहीं मानतीं?"

"तुम्हारा बॉस उल्लू का पट्ठा है," सविता झल्लाई।

"व्हाट···!" गोगी की आंखें उबल पड़ीं।

"और क्या," सविता ने झटकेदार लहजे में कहा, "क्या एक सुन्दर और जवान औरत सिर्फ खाने की भूखी होती है।"

गोगी बड़े ध्यान से उसकी सूरत देखता रहा।

सविता मुस्करा कर बोली—

"तुम्हीं सोचो···क्या मुझे यहां केवल खाना खिलाने के लिए ही बन्द किया गया है?"

"फिर तुम क्या चाहती हो?"

"कभी औरत अपनी ज़बान से कुछ कहती है?"

गोगी की आंखें चमक उठीं। उसने होंठों पर जीभ फेर कर कहा—

"यानी···तुम···तुम···!"

"गोल्डी मुझे समझता क्यों नहीं?" सविता उदास लहजे में बोली,

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"वह मुझसे प्यार करता है। उसने मुझसे मेरे पति को छीन लिया। मुझे यहां कैद कर दिया। क्या मैं केवल उसके प्यार के सहारे ज़िन्दा रह पाऊंगी ?"

"बॉस तुमसे शादी करना चाहते हैं।"

"शादी···! उंह···," सविता ने उपेक्षा से कहा, "जिस आदमी से मेरी शादी हुई थी उसने मुझे कौन-सा सुख दिया। मैं रात-रात भर बिस्तर पर मछली की तरह तड़ती रहती थी और वह क्लब में दूसरी औरतों के साथ शराब पी-पी कर रात बिताता था।"

"तो तुम बॉस से शादी नहीं करना चाहतीं ?"

"शादी का अब मेरे निकट कोई महत्व नहीं रहा। पति की मृत्यु के बाद मुझे जो आज़ादी मिली है, मैं उसे खोना नहीं चाहती। यों शादी हर रात हो सकती है।"

सविता फिर अर्थपूर्ण अन्दाज़ में मुस्कराई। गोगी की सांसें तेज़ हो गईं। उसने होंठों पर ज़बान फेर कर कहा—

"तो फिर तुम्हारा सन्देश बॉस तक पहुंचा दूं ?"

"गधे हो तुम !" सविता झल्ला कर बोली।

"क···क···क्यों ?"

"तुम्हारा बॉस फिर वही प्यार के घिसे-पिटे डायलॉग बोलेगा जिनसे मुझे घृणा है। भले ही गोल्डी जवान है लेकिन उसके बाजुओं पर ऐसी मछलियां नहीं पड़तीं जैसी तुम्हारे बाजुओं पर पड़ती हैं।"

गोगी की आंखों की चमक और बढ़ गई। वह तेज़ स्वांसों के साथ बोला—

"ल···ल···लेकिन···अगर···बॉस को···पता चल गया तो···?"

"क्या तुम खुद कहोगे बॉस से ?"

"म···म···मैं···क्यों कहने लगा ?"

"फिर कैसे पता चलेगा बॉस को ?" सवित ने आंख दबाई।

"तो···फिर···?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोगी पागलों की तरह दोनों हाथ फैला-कर आगे बढ़ने लगा।

"सविता पीछे हटती हुई जल्दी-से बोली—

"अरे-अरे ··· यह चाकू तो बन्द करो।"

गोगी ने चाकू बंद करके जेब में डाल लिया।

सविता बोली—

"दरवाज़ा बंद कर दो। यह रात तुम्हारी तबतक है जब तक गोल्डी के ऊपर आने का खतरा न हो।"

"वह तो अब सुबह से पहले इधर नहीं आयेगा।"

"तो फिर क्या सोच रहे हो?" सविता की मुस्कराहट और अधिक गहरी हो गई।

"गोगी पलट कर कांपते हाथों से दरवाज़ा बंद करने लगा।

सविता ने इधर-उधर देखा। मेज़ पर पानी से भरा जग रखा हुआ था। सविता के फुर्ती से जग उठाया और पूरी ताकत से गोगी के सिर पर दे मारा।

गोगी के हलक से हल्की सी कराह निकली फिर वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

सविता लपक कर दरवाज़े से बाहर आ गई। उसे यह मालूम न था कि बाहर का रास्ता किधर है। वह अनुमान से ही एक ओर भागती चली गई।

गोगी के सिर से खून बह कर चेहरे पर फैल गया। उसका चेहरा और भी अधिक भयानक दिखाई देने लगा। उसने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाला। उसने सिर को दो-तीन झटके दिए। और कुत्ते की तरह गुर्राया—

"हरामज़ादी ···!"

फिर वह झपट कर बाहर निकल आया। उसने इधर-उधर देखा और फिर एक ओर दौड़ चला।

सविता को रास्ता मालूम नहीं था इसलिए अंदर की ओर ही भागती चली गई। सिरे पर चार आदमी ज़मीन पर बैठे ताश खेल रहे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

थे। वे सविता को देखते ही चौंक पड़े--

"अरे, यह तो वही लड़की है।"

"कमरे से कैसे निकल आई ?"

सविता यह सुनते ही पलट कर भागी। वे चारों उसके पीछे दौड़ने लगे।

"पकड़ो ··· पकड़ो ···!" उनका शोर गूंज गया।

"जाने न पाए।"

सविता भागती हुई कारीडोर के सिरे पर पहुंची। तभी गोगी दौड़ता हुआ वहां पहुंचा और सविता उससे जा टकराई। गोगी ने फुर्ती से उसे दबोच लिया और खूंखार लहजे में बोला--

"अब कहां जायेगी कुतिया।"

सविता ने गोगी के सीने पर इतनी ज़ोर से दांत गड़ाए कि उसने बिलबिला कर उसे छोड़ दिया और पीछे हट गया।

सविता दौड़ती हुई पिछले दरवाज़े से निकल गई। इतनी देर में चारों भी गोगी के पास पहुंच गए। गोगी ने एक-एक की गर्दन पकड़ कर धकेलते हुए कहा--

"पकड़ो इसे। भाग गई तो बॉस कच्चा चबा जायगा।"

वे चारों दौड़ते हुए चले गए। गोगी ने अपने सीने पर नज़र डाली। जहां सविता ने दांत गड़ाए थे वहां से खून रिस रहा था। गोगी ने झल्लाकर अपना सीना मसल डाला। और फिर बाहर की ओर दौड़ पड़ा।

सविता एक बाढ़ की आड़ में जा छिपी। उसकी सांस बुरी तरह फली थी। भय से उसका समूचा बदन कांप रहा था। और वे पांचों शिकारी कुत्तों की तरह इधर-उधर दौड़ रहे थे।

० ० ०

सुरेश ने देखा। मेरी कई पैग पी चुक थी। उसकी आंखें गहरी लाल हो गई थीं। उसकी गुनगुनाहट लड़खड़ाहट में बदल गई थी उसने गिलास एक ओर लुढ़काया और स्कर्ट खोलकर एक ओर फेंक दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोगी पागलों की तरह दोनों हाथ फैला-कर आगे बढ़ने लगा।

"सविता पीछे हटती हुई जल्दी-से बोली—

"अरे-अरे ··· यह चाकू तो बन्द करो।"

गोगी ने चाकू बंद करके जेब में डाल लिया।

सविता बोली—

"दरवाज़ा बंद कर दो। यह रात तुम्हारी तबतक है जब तक गोल्डी के ऊपर आने का खतरा न हो।"

"वह तो अब सुबह से पहले इधर नहीं आयेगा।"

"तो फिर क्या सोच रहे हो?" सविता की मुस्कराहट और अधिक गहरी हो गई।

"गोगी पलट कर कांपते हाथों से दरवाज़ा बंद करने लगा।

सविता ने इधर-उधर देखा। मेज़ पर पानी से भरा जग रखा हुआ था। सविता के फुर्ती से जग उठाया और पूरी ताकत से गोगी के सिर पर दे मारा।

गोगी के हलक से हल्की सी कराह निकली फिर वह लड़खड़ाकर गिर पड़ा।

सविता लपक कर दरवाज़े से बाहर आ गई। उसे यह मालूम न था कि बाहर का रास्ता किधर है। वह अनुमान से ही एक ओर भागती चली गई।

गोगी के सिर से खून बह कर चेहरे पर फैल गया। उसका चेहरा और भी अधिक भयानक दिखाई देने लगा। उसने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाला। उसने सिर को दो-तीन झटके दिए। और कुत्ते की तरह गुर्राया—

"हरामज़ादी ···!"

फिर वह झपट कर बाहर निकल आया। उसने इधर-उधर देखा और फिर एक ओर दौड़ चला।

सविता को रास्ता मालूम नहीं था इसलिए अंदर की ओर ही भागती चली गई। सिरे पर चार आदमी ज़मीन पर बैठे ताश खेल रहे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

थे। वे सविता को देखते ही चौंक पड़े--

"अरे, यह तो वही लड़की है।"

"कमरे से कैसे निकल आई ?"

सविता यह सुनते ही पलट कर भागी। वे चारों उसके पीछे दौड़ने लगे।

"पकड़ो ··· पकड़ो ··· !" उनका शोर गूंज गया।

"जाने न पाए।"

सविता भागती हुई कारीडोर के सिरे पर पहुंची। तभी गोगी दौड़ता हुआ वहां पहुंचा और सविता उससे जा टकराई। गोगी ने फुर्ती से उसे दबोच लिया और खूंखार लहजे में बोला--

"अब कहां जायेगी कुतिया।"

सविता ने गोगी के सीने पर इतनी ज़ोर से दांत गड़ाए कि उसने बिलबिला कर उसे छोड़ दिया और पीछे हट गया।

सविता दौड़ती हुई पिछले दरवाज़े से निकल गई। इतनी देर में चारों भी गोगी के पास पहुंच गए। गोगी ने एक-एक की गर्दन पकड़ कर धकेलते हुए कहा--

"पकड़ो इसे। भाग गई तो बॉस कच्चा चबा जायगा।"

वे चारों दौड़ते हुए चले गए। गोगी ने अपने सीने पर नज़र डाली। जहां सविता ने दांत गड़ाए थे वहां से खून रिस रहा था। गोगी ने झल्लाकर अपना सीना मसल डाला। और फिर बाहर की ओर दौड़ पड़ा।

सविता एक बाढ़ की आड़ में जा छिपी। उसकी सांस बुरी तरह फली थी। भय से उसका समूचा बदन कांप रहा था। और वे पांचों शिकारी कुत्तों की तरह इधर-उधर दौड़ रहे थे।

० ० ०

सुरेश ने देखा। मेरी कई पैग पी चुक थी। उसकी आंखें गहरी लाल हो गई थीं। उसकी गुनगुनाहट लड़खड़ाहट में बदल गई थी उसने गिलास एक ओर लुढ़काया और स्कर्ट खोलकर एक ओर फेंक दिया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

और फिर दरवाज़े की ओर पीठ किए ब्लाउज़ के बटन खोलने लगी।

सुरेश दबे पांव उसके पीछे पहुंच गया। उसने हाथ बढ़ाकर मेरी के ब्लाउज के पीछे की ओर लगे बटन खोल दिये। मेरी ने उसकी ओर मुड़कर भी न देखा। वह लड़खड़ाते स्वर में बोली—

"थैंक्स।"

फिर उसने ब्लाउज़ उतार कर फेंक दिया और बड़े इत्मीनान से सुरेश की ओर मुड़ी। उसने सुरेश की गर्दन में बांहें डालकर सिर उसके सीने में छिपा लिया और लड़खड़ाते स्वर में बोली—

"मुझे बिस्तर तक ले चलो।"

"ज़रूर ले चलूंगा। लेकिन मैं गोगी नहीं हूं।"

"कोई भी हो। यहां हर रात आने वाला गोगी थोड़े ही होता है।"

"और अगर गोगी इधर आ गया तो?"

"मैं कोई गोगी की खरीदी हुई लौंड़ी हूं···मैं किसी की पाबन्द नहीं हूं। चार दिन की उम्र में से दो दिन बचपन में और बुढ़ापे में बीत जाते हैं। बाकी दो दिन किसी की पाबन्दी में बिताना मूर्खता के सिवा और क्या है?"

"लेकिन मैं तुम्हारे पास इसलिए नहीं आया हूं।"

मेरी सुरेश से लिपट कर बोली—"मैं कुछ नहीं जानती। तुम किसी भी लिए आए हो लेकिन अब सवेरे से पहले तुम यहां से नहीं जा सकते।"

"ठीक है। तुम्हारी शर्त पूरी करूंगा लेकिन तुम्हें भी मेरी एक शर्त पूरी करनी पड़ेगी।"

मेरी ने सुरेश के चेहरे को ध्यान से देखा और फिर उसके गले में बांहें डाल कर बोली—

"तुम्हारी हर शर्त मंजूर है···बिना सुने ही मंजूर है···तुम गोगी से कहीं ज्यादा खूबसूरत हो।"

"तुम्हारे मुंह से ठर्रे की बू आ रही है। इतने बड़े क्लब में काम करती हो और ठर्रा पीती हो।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मैं स्काच भी पी सकती हूं। लेकिन अब उससे भी प्यास नहीं बुझती। ठर्रे से भी तगड़ी चाहिए। तुम बातों में समय बर्बाद कर रहे हो। जल्दी बताओ तुम्हारी शर्त क्या है···यह सुहानी रात बेकार न बीता जाए।"

सुरेश ने मेरी की आंखों में देखते हुए कहा--

"जानती हो जिस लड़की को बॉस ने कैद कर रखा है वह मेरी प्रेमिका है।"

"ओह···और तुम कौन हो?"

"मैं बास का एक नया और मामूली नौकर हूं। इसलिए उसके सामने कुछ नहीं कह सकता। लेकिन मैं अपनी प्रेमिका के साथ कोई ज्यादती होते हुए भी नहीं देख सकता। अगर तुम अपनी शर्त पूरी कराना चाहती हो तो मेरी प्रेमिका को यहां ले आओ।"

"बस इतनी सी बात। अभी लेकर आती हूं। लेकिन तुम अपनी शर्त भूल तो नहीं जाओगे?"

"अगर मैं अपनी शर्त पूरी न करूं तो तुम मुझे पकड़वा देना।"

"ठीक है।"

फिर मेरी सुरेश से अलग हो गई। उसने बोतल उठाकर मुंह से लगा ली और गटागट कई घूंट पी गई। फिर उसने बोतल मेज़ पर रखी। लेकिन वह लुढक गई। उसमें से ठर्रा बहने लगा। मेरी जल्दी से घुटनों के बल बैठ गई और गिरती हुई धार से मुंह लगा दिया और कुत्ते की तरह चाटने लगी। फिर उसका सिर फर्श से जा लगा और वह वहीं लुढ़क गई।

सुरेश ने उसे झंझोड़ा···

"मेरी···मेरी···!!"

लेकिन मेरी बेसुध हो गई थी। सुरेश ने एक ठंडी सांस ली और सोचने लगा कि उसे क्या करना चाहिए।

तभी दौड़ते हुए कदमों की आहटें सुनाई दीं। वह उछल कर खड़ा हो गया और तेज़ी से एक सोफे की आड़ में हो गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

मेरी के क्वार्टर का दरवाज़ा फटाक से खुला और दो आदमी दौड़ते हुए अन्दर आ गए। दोनों मेरी को देखकर ठिठक गए।

"यह क्या हुआ मेरी को ?"

"देखते नहीं। अंधाधुंध पी गई है। ऐसी धाकड़ पियक्कड़ औरत मैंने नहीं देखी। लेकिन बेचारी बड़ी भली है। कभी किसी को निराश नहीं करती।"

"छोड़ो यार ! ···पहले उस साली को तलाश करो।"

"यहां आई होती तो उसने क्वार्टर का दरवाज़ा अन्दर से ज़रूर बंद किया होता।"

"अगर भाग गई तो बॉस कच्चा ही चबा जायेगा।"

"फिर गई कहां ?" कम्पाउण्ड की इतनी ऊंची दीवार तो फांद नहीं सकती।"

फिर दोनों झपटकर बाहर निकल गए।

सुरेश फुर्ती से सोफे के पीछे से निकल आया। वह सोच रहा था कि जिस लड़की के बारे में मेरी, गोगी और ये लोग बातें कर रहे हैं वह सविता ही हो सकती है।

वह दबे पांव दरवाज़े के पास पहुंचा। लेकिन तभी आहट सुनकर दरवाज़े की आड़ में हो गया।

फिर कोई दौड़ता हुआ अंदर आया। सुरेश सन्नाटे में रह गया। वह सविता थी, वही साड़ी पहने हुए थी जो गायब होने वाली रात को पहने हुए थी।

वह दौड़ती हुई अंदर आई लेकिन ठोकर खाकर दरवाज़े के पास ही गिर गई और उसके मुंह से एक चीख निकल गई।

लेकिन इससे पहले कि सुरेश उसकी ओर बढ़ता उसने किसी के दौड़ते हुए कदमों की आवाज़ें सुनी। वह फिर दरवाज़ें की आड़ में हो हो गया।

गोगी दौड़ता हुआ अंदर आया और सविता को देखते ठिठक कर रुक गया। उसने दोनों हाथ कमर पर रखकर एक विजयी कहकहा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लगाया। सविता भय से कांपती हुई उठ खड़ी हुई--

"जाने दो ··· भगवान के लिए मुझे जाने दो !"

गोगी ने खूंखार लहजे में कहा--"कुतियो, तूने मेरे सिर से खून बहाया है। जब तक इसका बदला न ले लूंगा तुझे छोड़ूंगा नहीं। तूने मुझे जो लालच दिया था उसे पूरा किए बिना तुझे नहीं छोड़ूंगा।"

"नहीं-नहीं," सविता भय से कांप उठी--"मैं बॉस से कहकर तेरी बोटियां चुनवा डालूंगी।"

"बॉस तेरी बात पर कभी विश्वास न करेगा। यह मेरी का क्वार्टर है। यहां तेरी मदद करने वाला कोई नहीं। आज तुझे भगवान भी मेरे हाथ से नहीं बचा सकता।"

वह बाहें फैलाए सविता की ओर बढ़ा।

सुरेश ने दरवाज़ा बंद किया और दबे पांव गोगी के पीछे-पीछे बढ़ने लगा।

गोगी ने झपट्टा मार कर सविता को दबोच लिया। सविता चीख उठी लेकिन गोगी ने उसका मुंह बंद कर दिया। उसके दोनों हाथ पीठ पर जकड़ लिए और उसे बुरी तरह भींच लिया। उसकी साड़ी का आंचल गिर गया। ब्लाउज़ कई जगह से फट गया। बाल बिखर गए।

सुरेश ने गोगी की खोपड़ी पर जोर से हत्थी मारी। गोगी के हलक से कराह निकली और सविता उसके हाथ से छूट गई, वह लड़खड़ा कर गिर गया।

सविता की निगाह सुरेश पर पड़ी--

"सुरेश बाबू ··· !"

और फिर वह झपट कर उससे लिपट गई।

सुरेश ने धीरे से कहा--"घबड़ाओ मत ··· अब तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।"

तभी गोगी संभलकर सुरेश पर झपटा। सिर से बहते खून के कारण उसका चेहरा बहुत ही भयानक दिखाई दे रहा था। सुरेश को देखकर वह खूंख्वार कुत्ते की तरह गुर्राया--

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"तुम···! अच्छा हुआ तुम मिल गए। तुम्हें पाकर वॉस को बड़ी खुशी होगी।"

सुरेश ने सविता को एक ओर हटा दिया। गोगी उसकी ओर बढ़ने लगा। सविता दीवार से लग कर खड़ी हो गई।

सुरेश ने झपट कर एक ज़ोर की लात गोगी की पीठ पर मारी और वह लड़खड़ा कर दीवार से जा टकराया। अगर उसने दोनों हाथ आगे न बढ़ा दिए होते तो उसके चेहरे का भुर्ता बन जाता।

लेकिन गोगी बड़ी फुर्ती से पलटा और सुरेश पर भूखे सिंह की तरह टूट पड़ा। सुरेश ने गोगी को दोनों हाथों पर रोका और चित लेट गया। गोगी उसके ऊपर गिरा। सुरेश ने उसे अपनी टांगों पर लेकर सिर के ऊपर से उछाल दिया,।

गोगी चारों खाने चित गिरा और बुरी तरह कराहने लगा।

लेकिन एक पल बाद ही दोनों उछलकर खड़े हो गए। गोगी दोनों हाथ फैलाकर सुरेश की ओर झपटा। लेकिन सुरेश ने अपना सिर झुकाकर गोगी के सीने में ज़ोर की टक्कर मारी। गोगी लड़खड़ा कर दीवार से टकराया उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा गया।

सुरेश ने उसकी ठोढ़ी पर जोर से घूंसा मारा। गोगी लड़खड़ाकर जमीन पर गिरा। और फिर बेहोश होकर लुढ़क गया।

अचानक सुरेश ने झपट कर सविता का हाथ पकड़ा और दरवाज़े की आड़ में हो गया। क्योंकि उसे दौड़ते हुए कदमों की आहटें सुनाई दे रही थीं।

कुछ मिनट बाद चार आदमी भरभरा कर अंदर आए। सुरेश ने पहले आदमी की टांगों में टांग डाल दी। उसके औंधे मुंह गिरते हा शेष तीनों भी उस पर गिरते चले गए।

सुरेश ने सविता का हाथ पकड़ा और दरवाज़े से बाहर आ गया, फिर उसने जल्दी से बाहर से चटकनी लगा दी।

उसने सविता का हाथ पकड़ा और कम्पाउन्ड की दीवार की ओर भागने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

एक जगह सविता ठोकर खाकर गिरी। सुरेश ने झपट कर उसे बाहों में उठा लिया। और दौड़ता हुआ दीवार के पास पहुंच गया।

उसने सविता को खड़ा करके कहा--

"जल्दी से मेरे कंधे पर चढ़कर दीवार पर चढ़ जाओ।

वह जमीन पर झुक गया। सविता उसके कंधे पर चढ़ गई। सुरेश धीरे से खड़ा हो गया। और सविता दीवार पर चढ़ गई।

तभी वे चारों दौड़ते हुए उधर आ निकले।

सविता चीख उठी—

"सुरेश बाबू।"

सुरेश पलट कर उनकी ओर दौड़ा। वे चारों पलभर के लिए गड़-बड़ा गए। और उनके गड़बड़ाते ही सुरेश छलांग लगाकर दीवार पर लटक गया। वे चारों उसकी ओर झपटे। एक आदमी ने सुरेश की टांग पकड़ ली। लेकिन सुरेश ने दूसरी टांग बड़े ज़ोर से उसके मुंह पर दे मारी। वह कराह कर पीछे हटा और सुरेश उचक कर दीवार पर चढ गया।

वह जल्दी से दीवार से कूद कर सविता से बोला—"जल्दी से उतर आओ।"

उसने दोनों हाथ फैला दिए।

सविता दोनों हाथ फैला कर कूद पड़ी। सुरेश ने उसे अपनी बाहों में संभाल लिया।

"चलो सविता, जितनी जल्दी हो सके हमें इन लोगों की पहुंच से दूर निकल जाना चाहिए।"

वे दोनों एक ओर भाग छूटे।

भागते-भागते वे दोनों एक सड़क पर पहुंच गए। लेकिन दूर-दूर तक किसी गाड़ी का पता न था। वे दौड़ते हुए आगे बढ़ने लगे।

सविता के पांव बुरी तरह लड़खड़ा रहे थे। वह हांपती हुई बोली—

"अब मुझसे भागा नहीं जाता।"

"हिम्मत से काम लो सविता। कहीं उनकी गाड़ियां हमारा पीछ

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

न करने लगें।"

"मेरे पैर में बहुत चोट आई है। मेरा दम निकला जा रहा है।"

सुरेश ने सविता को कंधे पर उठा लिया और दौड़ने लगा।

अचानक पीछे से कार के इंजन की आवाज़ सुनाई दी और फिर रोशनी दिखाई देने लगी।

सुरेश झपट कर सड़क की ढलान पर उतरता चला गया।

पीछे से आने वाली गाड़ी तेज़ी से पास आई और एकदम रुक गई। साथ ही किसी ने खिड़की में से झाककर कानाफूंसी ढंग से पुकारा—

"सुरेश बाबू ··· घबड़ाइए मत ··· मैं हूं।"

"सुरेश झपट कर मुड़ा—

"अरे कमल तुम ?"

"जल्दी कीजिए गाड़ी में आ बैठिए।"

सुरेश पलट कर कार के पास आ गया। कमल ने जल्दी से दरवाज़ा खोला और सुरेश सविता के साथ पिछली सीट पर जा बैठा।

कमल ने गाड़ी पूरी स्पीड पर छोड़ दी।

कुछ देर बाद सुरेश ने पूछा—"तुम इधर कैसे आ गए कमल ?"

"आप अकेले इधर आए थे इसलिए मैं चिन्तित था। गोल्डी का गिरोह मामूली बदमाशों का गिरोह नहीं है। अगर आप उनके हाथ पड़ गए तो आपको ज़िन्दा न छोड़ेंगे। यह सोचकर मैं इधर चला आया। मैंने कार क्लब के पीछे अंधेरे में खड़ी कर रखी थी। मैंने आपको दीवार फांदकर अंदर जाते हुए देखा था।

फिर जब आप सविता जी को लेकर दीवार से उतर आए और इधर भागने लने तो मैं जान-बूझकर वहां रुक गया। मैं देखना चाहता था कि गोल्डी के आदमी आपका पीछा तो नहीं कर रहे। अगर वे आपका पीछा करते तो मैं उन्हें रोकने की कोशिश करता लेकिन जब मुझे ऐसी कोई बात दिखाई न दी तो मैं आपके पीछे-पीछे चल दिया।"

सविता ने कमल को पहचान लिया। वह आश्चर्य से उसकी ओर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

देखने लगी।

कुछ देर बाद कमल ने कहा—

"क्या आपका मोरिस रोड वाले फ्लैट में जाना उचित है ?"

"क्यों वहां जाने में क्या परेशानी है।"

"ये लोग मुझे आपके साथ देख चुके हैं। गोल्डी को मेरे फ्लैट का पता है।"

"चिन्ता न करो। यह फ्लैट धनी आबादी में है। उन लोगों की इतनी हिम्मत न होगी कि वहां पहुंच।"

"फिर भी हमें सतर्कता से काम लेना चाहिए।"

"लेकिन दूसरी ऐसी कौन-सी जगह है जहां सविता जी सुरक्षित रह सकें ?"

"तुलसी रोड पर एक फ्लैट आपके लिए एस० पी० साहब ने किराए पर लिया है। उसकी चाबी मेरे पास है।"

"ठीक है, वहीं चलो।"

कमल ने गाड़ी तुलसी रोड की ओर मोड़ दी।

० ० ०

तुलसी रोड का फ्लैट एक चार मंजिला इमारत की चौथी मंजिल पर था। फ्लैट बहुत ही सुन्दर और सजा हुआ था। उसमें टेलीफोन भी था।

कमल के जाने के बाद सुरेश ने दरवाजा अंदर से बन्द कर लिया।

सविता का मन अब कुछ शान्त था। उसका डर भी दूर हो गया था।

सुरेश ने मुस्कराकर कहा—

"तुम यहां अपने आपको बिल्कुल सुरक्षित समझो।"

सविता ने चौंककर सुरेश की ओर देखा और फिर अपने ऊपर निगाह डाली। फिर वह जल्दी-जल्दी साड़ी के आंचल से अपने जगह-जगह से फटे ब्लाउज को ढकने लगी।

सुरेश ने कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"तुम्हारे लिए सवेरा होते ही कपड़ों का इन्तज़ाम कर दिया जाएगा। अब तुम आराम करो।

सविता ने धीरे से कहा—"एक बात पूछूं ?"

"जरूर पूछो।"

"क्या आप सचमुच कैलाश बाबू के मित्र थे ?"

"इस प्रश्न की आवश्यकता क्यों हुई ?"

"आपको यह कैसे पता चला कि मैं गोल्डी के क्लब में कैद हूं।"

"बात यह है कि कैलाश की लाश की मुट्ठी में एक टाई-पिन मिला था। कमल ने बताया कि वह टाई-पिन गोल्डी का है। इससे यह सिद्ध होता था कि कैलाश की हत्या में गोल्डी का हाथ है। गोल्डी एक नाइट क्लब का मालिक है। उसका तुम्हारे यहां बहुत आना-जाना था। इन सब बातों को देखकर संदेह हुआ कि कहीं गोल्डी ही तुम्हें उठा कर न ले गया हो।"

सविता बोली—

"हां, मुझे गोल्डी ने ही उठवाया था। यह बात मुझे तब मालूम हुई जब गोल्डी मेरे सामने आया। लेकिन सच-सच बताइए आप कौन हैं ?"

"मैं सी० आई० डी० इंस्पैक्टर हूं।"

"ओह···!" सविता चौंक पड़ी।

पल भर के लिए उसके चेहरे का रंग उड़ गया। लेकिन फिर वह संभल गई।

सुरेश ने कहा—"पिछले कई महीने से इस शहर और आस-पास के इलाके से कई सुन्दर और जवान लड़कियां गुम हो गईं। पुलिस लाख सिर पटकने पर भी उनमें से एक का भी पता न लगा सकी। अंत में यह केस गुप्तचर विभाग को सौंप दिया गया। जो इंस्पैक्टर यहां छान-बीन के लिए भेजा गया उसे मार डाला गया। अंत में केन्द्र ने मुझे यहां भेजा है। कमल भी मेरे ही विभाग में सब-इन्स्पैक्टर है।"

"कमल बाबू ने हमारे पड़ौस में फ्लैट क्यों लिया था ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कुछ ऐसे सूत्र मिले हैं जिनसे यह पता चलता है कि इन घटनाओं का जिम्मेदार व्यक्ति मोरिस रोड पर ही रहता है। इसलिए कमल ने वहां फ्लैट लिया था।"

सविता चुपचाप सुरेश की ओर देखती रही।

सुरेश ने कहा——

"अब हमारा संदेह गोल्डी पर है। तुम्हारे अपहरण का कारण शायद यह है कि तुम शायद गोल्डी के सम्बन्ध में कुछ जानती हो। लेकिन मेरा विचार है कि गोल्डी ने ही कैलाश की हत्या की है और अपने आपको पुलिस की नज़रों से बचाने के लिए उसने तुम्हारा अपहरण किया था।"

"किसी सीमा तक यह ठीक है। लेकिन सच बात यह है कि गोल्डी वर्षों से मुझे चाहता है," सविता ने धीरे से कहा।

"क्या मतलब ?" सुरेश चौंक पड़ा।

"कई वर्ष हुए, तब मेरी शादी नहीं हुई थी, गोल्डी से मेरी भेंट एक पार्टी में हुई थी। वह हमारे शहर के एक धनी व्यक्ति का बेटा है। बहुत ही ऐयाश और बिगड़ा हुआ। मेरी एक सहेली के यहां पार्टी थी। वहीं मेरी इससे मुलाकात हुई और फिर मेरे पीछे पड़ गया। एक दिन मेरी एक सहेली रोजी ने मुझे बताया कि वह गोल्डी के बच्चे की मां बनने वाली है। गोल्डी ने प्यार का नाटक रच कर उसका सर्वस्व लूट लिया और फिर उसे ठुकरा दिया। इसी दुख में रोजी ने आत्महत्या कर ली। बस ! उसी दिन से मुझ गोल्डी से घृणा हो गई। गोल्डी ने मेरे डैडी के पास विवाह का संदेश भेजा लेकिन मेरे मना कर देने डैडी ने उसका संदेश ठुकरा दिया।"

सविता कहती गई, "उन्हीं दिनों कैलाश बाबू की ओर से भी विवाह का सन्देश आया। कैलाश बाबू खाते-पीते परिवार के थे। उनका स्वभाव भी मुझे पसन्द था। इसलिए मैंने स्वीकृति दे दी और मेरा विवाह उनके साथ हो गया। इस बात से चिढ़ कर गोल्डी ने पहले दिन ही मेरे विवाहित जीवन में जहर उंडेल दिया। उसने कैलाश बाबू को बहकाया

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कि विवाह से पहले मैं उससे प्यार करती थी। और विवाह हो जाने के बाद भी करती है। आप तो जानते ही हैं कि कोई भी पति कभी भी यह सहन नहीं कर सकता कि उसकी पत्नी किसी दूसरे पुरुष से प्रेम करे। पत्नी के मामले में वह बहुत ही शक्की और सम्वेदनशील होता है। सुहाग रात को जब वह कमरे में आए तो शराब के नशे में धुत थे उन्होंने मुझसे बात तक नहीं की और चुपचाप सो गए। मैं सारी रात रोती रही।"

फिर कुछ रुककर बोली, "इसके बाद कैलाश बाबू मुझसे खिंचे-खिंचे रहने लगे। लेकिन मैंने इस बात की चर्चा किसीसे नहीं की। मैंने पहले दिन ही गोल्डी को कैलाश बाबू के साथ ड्राइंगरूम में बैठे देख लिया था और मैं कैलाश बाबू के इस व्यवहार का कारण जान गई थी। गोल्डी रोज़ाना ही हमारे घर आने लगा। और उसके प्रति मेरे मन में घृणा दिन-पर-दिन बढ़ती चली गई। मैंने सोचा कि-जब तक कैलाश बाबू इस शहर में रहेंगे गोल्डी का साथ नहीं छूटेगा। और तब तक मैं उन्हें न पा सकूंगी। मैंने डैडी से कह कर कैलाश बाबू पर ज़ोर डलवाया कि वह बीमा ऐजेन्ट का काम छोड़कर कोई अच्छा सा बिजनेस करें। डैडी ने इस शहर में हमें फ्लैट दिलवा दिया और बिजनेस के लिए बीस हज़ार रुपये भी दिए। यहां आने के बाद मैंने कैलाश बाबू से उनकी उपेक्षा का कारण पूछा लेकिन उन्होंने कारण नहीं बताया और कहा कि वह मुझे अपनी पत्नी का अधिकार कभी नहीं दे सकेंगे। मैं चाहूं तो उनसे डाइवोर्स ले सकती हूं। लेकिन मैंने डाइवोर्स लेने से इनकार कर दिया और कह दिया कि मैं एक नौकरानी की तरह उनके साथ रहूंगी।"

सविता की आंखों में आंसू आ गए बोली, "यहां आकर कैलाश बाबू और अधिक शराब पीने लगे। रात-रात भर वे होटलों और क्लबों में बैठे रहते। एक दिन वह एक सुन्दर कार में बैठ कर घर आए तो मैंने उनके साथ गोल्डी को भी देखा। मुझे पता चला कि गोल्डी ने इस शहर में एक नाइट क्लब खोल लिया है और अब स्थाई रूप से इसी शहर में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहेगा। गोल्डी के आने के बाद कैलाश बाबू मुझसे और दूर होते गए। उन्होंने यह तक सोचना छोड़ दिया कि घर में राशन है या नहीं। मैं अपने ज़ेवर बेच-बेचकर घर का खर्च चलाती रही। गोल्डी रोजाना उन्हें और क्लब में ले जाता। कीमती से कीमती शराबें पिलाता। उन्हें सोसाइटी गर्ल प्रेजेन्ट करता। लेकिन मैं सबकुछ बर्दाश्त करती रही। मैंने डेढ़ वर्ष तक विवाहित जीवन बिताया है लेकिन पति का प्यार क्या होता है, मैं नहीं जानती।"

सुरेश ने गम्भीरता से कहा, "तब तो इसमें कोई सन्देह ही नहीं रह जाता कि गोल्डी ने ही कैलाश की हत्या की है।"

"मुझे भी पूरा-पूरा विश्वास है कि उसीने मेरा सुहाग उजाड़ा है।"

"लेकिन प्रश्न यह है कि अगर उसे यही करना था तो उसने डेढ़ वर्ष तक प्रतीक्षा क्यों की!" सुरेश ने कहा, "एक बात बताओ, जिस दिन तुम अपनी सहेली की सगाई में दिलावर नगर गई थीं। क्या तुम्हारे प्रोग्राम के बारे में कैलाश को पता था?"

"अगर उन्हें पता होता तो वे मुझे जाने ही न देते।"

"क्यों?"

"वह मुझे हर तरह मानसिक पीड़ा पहुंचाने की कोशिश किया करते थे।"

"जब तुम दिलावर नगर के लिए रवाना हुई कैलाश घर पर था।"

"वह तो शाम होते ही क्लब चले गए थे। वे रोजाना आधी रात के बाद ही घर लौटते थे। इसलिए मैंने प्रोग्राम बनाया था कि मैं शाम सात बजे की ट्रेन से दिलावर नगर जाऊंगी और साढ़े दस बजे की ट्रेन से लौट आऊंगी। इस तरह मेरे जाने का पता कैशाश बाबू को न हो पाएगा।"

"गोल्डी तो शायद रोज़ ही आता होगा?"

"जी हां।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कभी तुम्हारे मन में कैलाश से छुटकारा पाने का विचार पैदा नहीं हुआ ?"

सविता ने बड़े विश्वास भरे स्वर में कहा--

"कभी नहीं। मैंने निश्चय कर लिया था कि भले ही जीते जी लाश की तरह जीवन क्यों न बिताना पड़े। लेकिन मैं गोल्डी को खुश होने का मौका किसी भी दशा में न दूंगी।"

"अब तुम पुलिस में गोल्डी के विरुद्ध बयान दोगी।"

"स्पष्ट है ! मैं उस कमीने को फांसी के तख्ते पर देखना चाहती हूं।"

"इस तरह तो हमारे सारे केस अधूरे रह जाएंगे। पुलिस को पता है कि तुम अचानक गुम हुई हो। मेरा खयाल है कि तुम्हें तब तक छिप कर रहना चाहिए जब तक हम गोल्डी को पूरी तरह अपने जाल में न फांस लें। उसकी गिरफ्तारी के बाद हम तुम्हें सरकारी गवाह के रूप में अदालत में ले चलेंगे।"

"आप जैसा कहेंगे मैं वैसा ही करूंगी।"

"अगर तुम कहो तो तुम्हें तुम्हारे घर पहुंचा दिया जाए।"

"नहीं, उस घर में अब मेरा कोई नहीं है। मेरी सौतेली मां को मेरी सूरत से घृणा है। डैडी का स्वर्गवास हो चुका है। आप कहेंगे तो मैं कोई और ठिकाना ढूंढ़ लूंगी। लेकिन वहां न जाऊंगी।"

"तुम समझती हो कि मैं तुम्हें बेसहारा छोड़ दूंगा।"

सविता चुपचाप सुरेश की ओर देखती रह गई।

सुरेश ने अचानक चौंक कर कहा—

"तुमने अभी तक खाना नहीं खाया होगा।"

"मैंने परसों से ही खाना नहीं खाया।"

"किचन में देखता हूं शायद खाने के लिए कुछ हो। वरना किसी होटल से ले आता हूं।"

"नहीं मैं आपको बाहर न जाने दूंगी," सविता ने कांपकर कहा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"क्यों ?"

"अकेले डर लगता है मुझे। लगता है जैसे गोल्डी फिर मुझ उठा ले जायगा।"

"वहम है तुम्हारा," सुरेश मुस्कराया, "यहां गोल्डी के फरिश्ते भी न पहुंच पायेंगे। और जब तक तुम मेरी सुरक्षा में हो तुम्हारा कोई बाल भी बांका नहीं कर सकता।"

सुरेश किचन में चला गया। वहां मक्खन के डिब्बे चाय और काफी आदि का सामान रखा हुआ था। गैस का चूल्हा भी था। सुरेश ने चूल्हा जलाकर केतली में चाय का पानी रख दिया। फिर वह मुड़ा ही था कि किचन के दरवाजे पर सविता खड़ी दिखाई दी।

सुरेश ने मुस्कराकर कहा, "यहां मक्खन और डबल रोटी है। आज रात तो इसी से गुजारा करना पड़ेगा। मैंने चाय का पानी दिया है।"

"आप रहने दीजिए। मैं चाय बना लूंगी।"

"तुमने दो-तीन दिन से कुछ खाया नहीं है। फिर थकी हुई भी हो। चाय तो मैं बना ही लूंगा।"

"मुझे अच्छा नहीं लगेगा कि मेरे होते हुए आप यह सब करें," सविता लंगड़ाती हुई आगे बढ़ी।

सुरेश चौंक पड़ा।

"अरे तुम्हारे पैर में क्या हुआ ?"

"चोट लग गई है। गर्म-गर्म चोट मे पता नहीं चला। लेकिन अब दर्द महसूस हो रहा है।"

"देखूं।"

सविता के पास जाकर सुरेश फर्श पर बैठ गया। सविता के पैर नंगे थे। एक पैर के अंगूठे से खून बहकर जमकर काला पड़ गया था। सुरेश ने बड़े ध्यान से पैर को देखा। गोरे-चिट्टे और सुन्दर उंगलियों वाले पैर। उसने हाथ बढ़ाकर सविता के पैर का अंगठा छुआ। उसके बदन में एक सनसनी-सी दौड़ गई।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सविता ने सिसकारी लेकर पैर पीछे खींच लिया।

"यहां शायद फर्स्ट-एड का सामान मौजूद न हो। घाव को खुला नहीं रहने देना चाहिए। कमरे में चलो।" सुरेश बड़े प्यार से बोला।

"आप रहने दीजिए ... मैं ...।"

"सविता प्लीज़, ज़िद न करो। छोटे-छोटे घाव कभी-कभी बड़ा नुकसान पहुंचाते हैं।"

सुरेश के स्वर में कुछ विचित्र-सा आग्रह था। सविता उसे टाल न सकी। वह धीरे-से मुड़ी और धीरे-धीरे लंगड़ाती हुई ड्राइंगरूम में जाकर सोफे पर बैठ गई।

सुरेश एक मग में पानी ले आया। उसने जेब से रूमाल निकाला उसके दो टुकड़े किए। एक टुकड़े को पानी में भिगोकर वह धीरे-धीरे सविता के अंगूठे के घाव को धोने लगा। सविता ने आंखें मूंद लीं। सुरेश के होंठों का स्पर्श उसके बदन में सनसनी पैदा कर रहा था। अंगूठे के घाव के दर्द के साथ-साथ उसे एक विचित्र से सुख की अनुभूति हो रही थी। वह चुपचाप आंखें मूंदे बैठी रही।

घाव अच्छी तरह साफ करके सुरेश ने दूसरा टुकड़ा भिगोकर अंगूठे पर पट्टी बांध दी।

"अब तुम आराम से लेट जाओ ... लेकिन ज़रा ठहरो। चाय पीने के बाद लेटना। वरना फिर उठने में तकलीफ होगी।"

फिर वह मग उठाकर बाहर चला गया।

सविता सोचने लगी--इस संसार में कोई ऐसा भी है जो बिना किसी स्वार्थ के ऐसा व्यवहार कर सकता है। उसकी आंखों के आगे वह दृश्य नाच उठा जब ट्रेन में सुरेश ने उसका किराया चुकाने की कोशिश की थी लेकिन उसने उसे डांट दिया था। सुरेश ने उसकी डांट का बुरा न माना था और उसे हवालात से छुड़ा लाया था। और फिर जान पर खेलकर सविता को गोल्डी के आदमियों के चंगुल से छुड़ा लाया था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"हे भगवान ! अगर सुरेश की सहायता न मिलती तो न जाने गोल्डी उसका क्या हाल करता," सविता कांप उठी।

तभी सुरेश चाय की ट्रे लिए हुए वहां पहुंच गया। उसने ट्रे सविता के सामने एक मेज़ पर रख दी और मुस्कराकर पूछा—

"ज्यादा देर तो नहीं हुई ?"

"आप ··· मेरे लिए कितना कष्ट उठा रहे हैं।"

सुरेश मुस्कराया···

"श ··· श ··· ऐसी बातें तकल्लुफ की महफिलों में की जाती हैं।"

उसने मक्खन लगे स्लाइड सविता की ओर बढ़ा दिए और प्याले में चाय उंड़लते हुए बोला—

"कैलाश मेरा बहुत ही घनिष्ट मित्र था। लेकिन वह आरम्भ से वहमी और शक्की था। एक मामूली से सन्देह पर उसने अपना और तुम्हारा जीवन बर्बाद कर लिया। अगर मैं विवाह के बाद इस बीच कभी उससे मिला होता तो शायद यह नौबत न आती।"

सुरेश के शब्दों में भरी सहानुभूति से सविता का दिल भर आया। आंखों में आंसू झलक उठे।

उसकी आंखों से आंसू देखकर सुरेश ने खेद-भरे स्वर में कहा—

"मुझे खेद है सविता। मैंने तुम्हारे दुःख को ताजा कर दिया। जो कुछ हो चुका है वह भूल जाओ। जीवन इतना छोटा नहीं होता कि आंसू बहाने से बीत जाए। अब तो यह सोचो कि तुमको भविष्य में क्या करना है।"

सीविता चुपचाप स्लाइड खाती रही। चाय पीती रही। कई दिन के बाद थोड़ा-सा खाना खाते ही उस पर नींद छाने लगी। उसकी पलकें अपने आपही झुकती चली गईं।

यह देखकर सुरेश ने कहा—

"तुम्हें नींद आ रही है। तुम्हें बैडरूम में पहुंचा दूं।"

"लेकिन ··· आप ··· !"

"मेरी चिन्ता न करो। पुरुषों का शरीर लोहे का होता है। मैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

यहां सोफे पर सो जाऊंगा।"

"नहीं, मैं सो जाऊंगी सोफे पर। आप बैडरूम में जाकर सोफे पर सो जाइए।"

"चलो उठो तकल्लुफ न करो। न जाने तुम्हें कितने दिन यहां रहना पड़े।"

सविता उठकर खड़ी हो गई। सुरेश उसे सहारा देकर बैडरूम में ले गया। और उसे बिस्तर तक पहुंचा दिया। फिर उसने बल्ब बुझाकर जीरो पावर का बल्ब जलाकर कहा--

"चाहो तो दरवाजा अन्दर से बन्द कर लो। मैं भेड़े देता हूं।"

फिर उसने बाहर आकर दरवाज़ा भेड़ दिया।

सविता बिस्तर पर लेट गई। उसे अपना सिर घूमता हुआ महसूस हो रहा था। लेकिन मन और मस्तिष्क एक विचित्र-सी शान्ति और सुख अनुभव कर रहे थे। इतनी शान्ति और ऐसा सुख उसने जीवन में पहली बार अनुभव किया था। आज उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी दलदल से बचकर निकल आई है।

धीरे-धीरे उसकी आंखें झपकती चली गईं। और वह गहरी नींद सो गई।

अचानक उसकी नींद में डूबी आंखों में एक भयानक सपना जाग उठा। वह किसी बहुत ही भयानक और रहस्यपूर्ण स्थान में खड़ी थी। इतनी ऊंचाई पर कि अगर वह गिर जाती तो उसकी हड्डी-पसलियां चूर-चूर हो जातीं। अचानक उसे दूर एक साया दिखाई दिया। वह साया गोल्डी का था। उसके सिर में दो लम्बे-लम्बे हाथ निकले हुए थे। जिन पर उंगलियों तक नुकीले और ज़हरीले कांटे उभरे हुए थे। उन भयानक हाथों ने उसे घेरे में ले रखा था।

कुछ दूर पर ही कैलाश खड़ा था। सविता कैलाश की ओर जाना चाहती थी। लेकिन कटीले हाथ आगे बढ़ते जा रहे थे।

सविता का समूचा बदन पसीने से तर हो गया। उन भयानक हाथों का घेरा तंग होता जा रहा था और कैलाश उससे दूर होता जा

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहा था और धीरे-धीरे कैलाश उसकी आंखों से ओझल हो गया।

भयानक हाथों का घेरा इतना तंग हो गया कि उन हाथों पर उगे कांटे सविता के बदन में चुभने लगे।

अचानक एक ओर से सुरेश आता दिखाई दिया। उसके हाथ में तलवार थी। उसने एक ज़ोर का वार उन भयानक हाथों पर दिया। और सविता चीख उठी--

"सुरेश बाबू···!"

वह हड़बड़ाकर जाग गई।

तभी दरवाज़े पर सुरेश की आवाज़ सुनाई दी--

"सविता···क्या हुआ सविता।"

सविता हड़बड़ाकर उठी और दौड़कर सुरेश से लिपट गई। भय से उसका बदन कांप रहा था।

"मुझे बचा लीजिए सुरेश बाबू···भगवान के लिए मुझे बचा लीजिए।"

"सविता," सुरेश ने सविता को झंझोड़ा, "क्या हो गया तुम्हें। लगता है तुमने कोई डरावना सपना देखा है।"

सविता सुरेश से लिपट कर कांप रही थी। उसका पूरा बदन पसीने से तर था।

सुरेश ने बड़ी नम्रता से पूछा--

"सविता···होश में आओ सविता। घबड़ाओ मत यहां तुम बिल्कुल सुरक्षित हो। मैं तुम्हारे पास हूं।"

सविता को अपनी स्थिति का अहसास हुआ। वह जल्दी से सुरेश से अलग हो गई।

सुरेश ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा--

"डरो मत सविता, मैं तुमसे अधिक दूर नहीं हूं।"

"मुझे बहुत डर लग रहा है।"

"पगली, यहां तो कोई परिन्दा भी पर नहीं मार सकता। अब सो जाओ। किवाड़ खुले रहने दो। बस पर्दा गिरा दो। मैं जागता

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रहूंगा।"

सुरेश ने बैडरूम की पिछली खिड़की चैक की। पर्दा गिरा दिया और बोला—

"कहो तो बत्ती जला दूं।"

फिर उसने बत्ती भी जला दी और जेब से रिवाल्वर निकाल कर सविता के सिरहाने रखकर बोला—

"कोई भी खतरा दिखाई दे, तुम इसे बिना झिझके इस्तेमाल कर सकती हो।"

फिर वह सविता को तसल्ली देकर बाहर चला गया।

सविता बिस्तर पर लेट गई। और सोचने लगी सचमुच वह सपना ही था। और सपने में भी सुरेश ने ही उसे बचाया था। सुरेश तो उसके पास ही है। न जाने क्यों सुरेश की निकटता से वह अपने आप-को सुरक्षित समझने लगी थी। एक विचित्र सा इत्मीनान अनुभव हो रहा था। जैसे सुरेश के होते हुए हजार गोल्डी भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते हैं।

न जाने कब उसे नींद आ गई।

आठ

घंटी की आवाज सुनकर सुरेश की आंख खुल गई। उसने उठकर दरवाजा खोला। लेकिन वह हड़बड़ा कर एकदम पीछे हट गया। उसके पैरों के पास कोई लुढ़क कर गिरा लेकिन उछलकर खड़ा हो गया और हाथ घुमाते हुए बोला—

"खबरदार, गोली मार दूंगा ... जानता नहीं मैं इन्स्पैक्टर सुरेश का नौकर हूं।"

सुरेश मुस्करा पड़ा। साथ ही कमल का कहकहा सुनाई दिया। श्यामू आंखे फाड़ कर दोनों को बारी-बारी देखते हुए बोला—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कहां गए वे बदमाश ?"

"कौन बदमाश ?" सुरेश ने पूछा।

"वे जो अभी अभी डाका डालने आए थे।"

"लगता है तुमने फिर अफीम की गोली चढ़ा ली है," सुरेश बोला, "कब से बैठे थे दरवाजे से लगे ?"

कमल मुस्कराकर बोला—

"सर, मैंने सोचा था कि आपको कपड़ों वगरह की परेशानी होगी इसलिए मैंने रात को ही इन्हें इधर भेज दिया था।"

"ओहो, तो तुम रात भर दरवाजे पर ही बठे रहे ?" सुरेश ने श्यामू को घूर कर गुस्से से कहा।

वह घबड़ा कर इधर-उधर देखने लगा।

कमल ने मुस्कराकर अटैची उसकी ओर बढ़ा दी ···।

"यह रही अटैची।"

श्यामू ने झपट कर अटैची ले ली।

सुरेश ने कहा—"जाओ, अटैची रखकर किचन में जाओ। अब तुम्हारी अफीम छुड़ाने के लिए कोई दूसरा उपाय खोजना पड़ेगा।"

श्यामू अटैची लेकर बैडरूम में चला गया। लेकिन दूसरे ही पल उसकी चीख सुनाई दी। फिर सविता की चीख सुनाई दी। श्यामू बौखलाकर बाहर आया और कांपते स्वर में बोला—

"म ··· म ··· मैं किसी और के फ्लैट में तो नहीं आ गया साहब ?"

तभी सविता भी बौखलाई हुई आ गई। सुरेश ने मुस्कराकर कहा—

"घबड़ाओ मत सविता। यह मेरा नौकर है श्यामू।"

"ओह, मेरा तो दम ही निकल गया था।"

श्यामू आंखें मलमल कर सविता को देखने लगा फिर बोला—

"आप तो कार से अकेले चले थे। यहां आकर दो कैसे हो गए ?"

"बको मत ··· जाकर नाश्ते की तैयारी करो।"

श्यामू जल्दी से अटैची उठा कर बैडरूम की ओर बढ़ा। फिर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

ठिठक कर रुक गया।

उसने पर्दा उठाकर झांका और फिर अंदर चला गया।

कमल ने हंस कर कहा—

"एक अदभुत चीज है आपका नौकर!"

० ० ०

सविता ने सुरेश के सारे सूट वार्डरोब में हेंगर पर लटका दिए। मेंटल पीस पर रखे सुरेश के फोटो को देखने लगी। फोटो देखते-देखते न जाने क्यों उसके होंठ मुस्करा उठे। फिर अचानक उसे सुरेश के फोटो में कैलाश का चेहरा दिखाई दिया। वह घबड़ाकर पीछे हट गई।

वह कमरे से निकल कर तेजी से बाहर आ गई। किचन से श्यामू की गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी। उसने झांक कर देखा। किचन काउंटर पर श्यामू खड़ा हुआ पतीले में चमचा चला रहा था और लहक-लहक कर गा रहा था।

सविता मुस्करा उठी। वह श्यामू के पास जा खड़ी हुई। उसने हाथ बढ़ा कर श्यामू से चमचा ले लिया।

श्यामू ने चौंक कर सविता की ओर देखा और घबड़ा कर बोला—

"अरे अरे, पतीली जल जायगी।"

"कैसे जल जायगी? कोई कागज़ की है?"

"म···म···मेरा मतलब है कि सब्जी।"

"तुम सब्जी बना लेते हो?" सविता ने चमचा पतीली में चलाते हुए पूछा।

"फर्स्ट क्लास खाना बनाता हूं मैं।"

"लगता है रसोई का काम अपने शहर में भी तुम्हीं करते थे।"

"और क्या साहब करते।"

"मेम साहब नहीं करती थीं?"

"मेम साहब होतीं तो करतीं। साहब की तो अभी शादी हुई ही

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नहीं है ।"

"माताजी तो होंगी ।"

श्यामू ने ठंडी सांस ली--"माता होती तो साहब अब तक कुंवारे क्यों बैठे रहते । माताजी और पिताजी साहब को बहुत छोटा सा छोड़ कर स्वर्ग सिधार गए थे । एक विधवा मौसी ने साहब को पाला-पोसा था । पिछले साल वह भी भगवान को प्यारी हो गई ।"

'इसका मतलब है साहब का इस दुनिया में कोई नहीं है ।"

"अरे वाह, मैं जो हूं," श्यामू ने छाती पर हाथ रख कर कहा, "मेरे होते हुए साहब ने कभी किसी की कमी महसूस नहीं की ।"

"कहते ठीक हो लेकिन आदमियों को रसोई का काम करते देख कर कुछ अजीब सा लगता है ।"

"फिर क्या किया जाए । रसोई का काम करने के लिए कोई नौकरानी इसलिए तैयार नहीं होती कि घर में कोई औरत नहीं है ।"

"जब तक मैं यहां हूं मैं ही रसोई का काम संभालूंगी ।"

"आप···!"

"लेकिन आप कब तक संभालेंगी ?"

"जब तक तुम्हारे साहब चाहेंगे ।"

"मैं समझा नहीं ।"

"तुम्हारे साहब की तरह मेरा भी इस दुनिया में कोई नहीं है ।"

"अच्छा तब तो ठीक है ।"

सविता ने पूछा—"आटा कहां है ? ···मैं गूंथ दूं ।'

श्यामू आश्चर्य से सविता की ओर देखने लगा । उसने सविता को आटा बताया । सवित आटा गूंथने लगी तो श्यामू ने जेब से बीड़ी का बंडल निकाला । गैस के चूल्हे पर बीड़ी सुलगाने लगा । बेध्यानी में उसकी उंगली से जा लगी । उसने सी करके हाथ खींच लिया ।

सविता ने घबड़ा कर पूछा—

"क्या हुआ ?"

श्यामू उंगली मसलते हुए बोला--

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कुछ नहीं ... जल गई।"

"जल गई ?"

सविता ने आटा छोड़ दिया और श्यामू की उंगली देख कर बोली—

"वरनोल है ?"

"हां, जब से मैंने रसोई संभाली है वरनोल लाकर रख लिया है।"

"कहां है ?"

श्यामू ने वरनोल लाकर दिया। सविता ने उसकी उंगली पर बरनोल लगा दिया। सविता की आंखों में गहरी सहानुभूति थी। श्यामू उसे बड़े ध्यान से देख रहा था।

० ० ०

सुरेश की कार सड़क पर दौड़ रही थी। उसके माथे पर चिन्ता की रेखाएं उभरी हुई थीं।

कमल ने कहा—

"आपको चार्ज तो मिल गया सर इन केसों का। लेकिन अब आप काम किस तरह शुरू करेंगे ?"

"हूं," सुरेश ने सोचते हुए कहा, "इस समय तो हमारे पास गोल्डी के विरुद्ध इन केसों के सम्बन्ध में कोई ठोस सबूत नहीं है। हमें चुपचाप गोल्डी के क्लब की निगरानी करनी पड़ेगी।"

"लेकिन सर, कैलाश मर्डर केस में तो हम गोल्डी को सन्देह में हिरासत में ही ले सकते हैं। क्या वह हिरासत में आने के बाद अपने अपराध स्वीकार न करेगा।"

"गोल्डी जैसे अपराधियों से इस प्रकार की आशा करना व्यर्थ है। इन केसों का सुराग बहुत ज़रूरी है। जो लड़कियां गायब हुई हैं वह कहां हैं। ज़िन्दा भी हैं या मर गईं ? कैलाश की मुट्ठी में जो टाई-पिन पाया गया वह गोल्डी का है। लेकिन अगर उसने इन्कार कर दिया तो हमारे पास क्या प्रमाण है कि वह उसी का है ?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह भी आप ठीक कहते हैं।"

"कैलाश मर्डर केस के सम्बन्ध में मैं एक और दूसरी लाइन पर भी सोच रहा हूं।"

"किस लाइन पर ?"

"सविता का बयान इस मामले में बहुत महत्वपूर्ण है। कैलाश से उसका विवाह तो हुआ लेकिन डेढ़ वर्ष तक सविता के साथ उसके पति-पत्नी जैसे सम्बन्ध नहीं रहे। क्योंकि उसे सन्देह था कि विवाह से पहले गोल्डी के साथ उसका प्रेम-सम्बन्ध रहा है। गोल्डी ने उसके इस सन्देह को और दृढ़ कर दिया था। जिससे कैलाश का व्यवहार और भी कटु हो गया था। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करो। एक स्त्री का जिसके साथ विवाह हो जाता है वह उसी को अपना सबकुछ समझ बैठती है। लेकिन इस समझ लेने का कारण विवाह ही नहीं होता वे भावनाएं भी होती हैं जो अनादि काल से चली आ रही हैं। स्त्री अपने पति की बेवफाई, मार-पीट और अत्याचा हँस कर सहन कर सकती है, अगर उसका पति उसे उसके अधिकार देता है। लेकिन कैलाश ने तो सविता के बदन को हाथ तक नहीं लगाया था। यह बात सविता के मन में कैलाश के प्रति घृणा और कैलाश से छुटकारा पाने की इच्छा पैदा कर सकती थी।"

"क्या आप यह कहना चाहते हैं कि सविता ने कैलाश की हत्या की।"

"सम्भव है।"

"लेकिन फिर वह गोल्डी का टाई-पिन ?"

"क्या तुमने ऐसे केस नहीं देखे जिनमें कोई आदमी अपराधी सिद्ध हुआ। लेकिन वास्तव में वह अपराधी नहीं निकला ?"

"जी हां, ऐसा तो कई केसों में हुआ है। लेकिन जिस रात कैलाश की हत्या हुई। सविता अपनी सहेली की सगाई में दिलावर नगर गई हुई थी। और आपके साथ ही वापस आई थी।"

"उसकी वह यात्रा ही तो मुझे सन्देह में डाले हुए है। क्या हत्या

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुनियोजित ढंग से नहीं की जा सकती। जैसे सविता को आठ बजे अपनी सहेली की सगाई में सम्मिलित होना है। इसके लिए उसे सात बजे की ट्रेन से दिलावर नगर जाना है। सविता ने सात और आठ बजे के बीच कैलाश को ठिकाने लगाकर और सात बजे की ट्रेन की बजाए उसने साढ़े सात बजे टैक्सी पकड़ी जो ठीक आठ बजे ट्रेन पहुंचने के समय पर ही दिलावर नगर पहुंच गई। सहेली की सगाई में शामिल होने के बाद सविता ने साढ़े दस बजे फ्रंटियर मेल पकड़ लिया। वह फर्स्टक्लास में इसलिए सवार हुई कि थर्ड क्लास के पैसेन्जरों के पास इतना समय नहीं होता कि वे दूसरे पैसेन्जरों की समस्याओं पर ध्यान दे सकें। उसने बिना टिकट यात्रा की। जानबूझ कर चैकर से झगड़ा किया। हवालात में गई और उसने यह सबूत इकट्ठा कर लिया कि वह दिलावर नगर गई थी। दिलावर नगर जाने वाली ट्रेन सात बजे जाती थी और कैलाश की हत्या सात और आठ के बीच हुई है, इसलिए सविता निर्दोष सिद्ध हो जाती है। उस पर पुलिस सन्देह भी नहीं कर सकती।"

"लेकिन वह टाईपिन। इस बारे में आपका खयाल क्या है?"

"मान लिया कि वह पिन गोल्डी का है। गोल्डी का सविता के घर आना-जाना था। शायद वह पिन कभी वहां गिर गया हो। और सविता ने उसे उठा लिया हो। और कैलाश की हत्या करने के बाद उसकी मुट्ठी में ठूंस दिया हो।"

"फिर भी सर, सविता की सूरत देख कर यह विश्वास करने को जी नहीं चाहता कि उसने अपने पति की हत्या की है।"

"सुन्दर लड़कियों के प्रति पुरुष के मन में अपनत्व की स्वाभाविक भावना होती है। मैंने तो केवल सम्भावनाएं व्यक्त की हैं। हो सकता है मेरी सम्भावनाएं गलत हों।"

"आपका यह विचार भी सही निकला कि गोल्डी मेरे फ्लैट की ओर नहीं आएगा।"

"फिर भी हमें उसकी ओर से सावधान रहना चाहिए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

नौ

सुरेश ने फ्लैट की घंटी बजाई। थोड़ी देर बाद श्यामू ने दरवाज़ा खोला। सुरेश अन्दर चला गया। किचन में से बर्तनों के खटखटाने की आवाज़ें आ रही थीं। सुरेश ने श्यामू से पूछा—

किचन में कौन है ?"

"सविता जी।"

"क्यों ? वह वहां क्या कर रही हैं ?"

"मैंने तो मना किया लेकिन वह मानी ही नहीं। कहती हैं जब तक वह यहां हैं, रसोई का काम वही करेंगी।"

तभी सविता किचन से निकलकर वहां आ गई। उसके चेहरे पर जगह-जगह कालिख लगी हुई थी। हाथों पर आटा लगा हुआ था। साड़ी के आंचल से सिर ढका हुआ था। इस समय वह बिल्कुल घरेलू औरत मालूम हो रही थी।

सुरेश के कानों में कमल के शब्द गूंज उठे—

"यह विश्वास करने को जी नहीं चाहता कि सविता कैलाश की हत्या कर सकती है।"

सविता ने मुस्करा कर कहा—

"अच्छा हुआ आप आ गए। खाना तैयार है। जल्दी से हाथ-मुंह धो लीजिए। गर्म-गर्म खाना खा लीजिए।"

सुरेश चुपचाप बाथरूम की ओर चला गया।

डाइनिंग टेबुल पर खाना खाते हुए सुरेश सोचने लगा, नहीं, सविता अपने पति की हत्या नहीं कर सकती।

सविता ने सुरेश की ओर देखा और मुस्करा कर बोली—

"खना खाइए ना, किस सोच में पड़ गए ?"

"आं।" सुरेश चौंककर सम्भलते हुए बोला, "मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।"

सविता का चेहरा लाल पड़ गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मैं सोच रहा था जब तुम्हें सरकारी गवाह के रूप में अदालत में पेश किया जाए तो तुम्हारे निर्दोष होने के ठोस प्रमाण मेरे पास हों।"

"जी।"

"क्योंकि परिस्थितियां ऐसी हैं कि गोल्डी पर इस अपराध में अगर केस चलाया गया तो वह तुम्हारा सिद्ध करने की कोशिश करेगा। तुम अपनी सहेली का पता बता दो जिसकी सगाई में तुम दिलावर नगर गई थीं।"

सविता ने राजी का पता बता दिया। सुरेश ने उसे याद कर लिया। फिर वह मुस्करा कर बोला—

"तुम खाना तो बहुत अच्छा बना लेती हो।"

"जी मैंने खाना बनाने की बाकायदा ट्रेनिंग ली है।"

अचानक पीछे से श्यामू ने कहा—

"साहब, इसीलिए तो मैं आपसे कह रहा था कि रसोई का काम सविता जी के ही सुपुर्द कर दीजिए।"

सुरेश ने श्यामू को घूर कर देखा।

श्यामू बौखला कर बोला, "अरे···म कोई इसलिए थोड़े ही कह रहा था कि इन्हें तनख्वाह पर नौकर रख लीजिए।"

"फिर?"

"वह···वह···साहब, रसोई सम्भालने वाली कोई-न-कोई तो लानी पड़ेगी।"

सविता के चेहरे पर कई रंग आए और चले गए। उसने जल्दी-से साड़ी का आंचल ठीक किया और तेजी से बाहर चली गई।

सुरेश ने श्यामू को घूर कर कहा—

"श्यामू···!"

"जी साहब।"

"तुम एकदम गधे हो।"

"नहीं तो साहब।"

"नहीं तो के बच्चे। क्या बक रहे थे तुम?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आप कुछ भी कहिए साहब। मुझे तो न जाने क्यों सविता जी को देखकर, ऐसा लगता है जैसे उनके आने से वह कमी पूरी हो गई है जो हमारे यहां थी। जरा अन्दर चलकर देखिए कितने सलीके से उन्होंने आपका सामान लगाया है। किस तरह सूट प्रेस करके हैंगर किया है। यही काम तो होते हैं एक घर वाली के।"

"शट अप।"

सुरेश ने कहा और वॉशवेसिन पर हाथ धोने लगा।

० ० ०

सुरेश और कमल कार से उतर कर बरामदे में पहुंचे। कमल ने कालबेल का बटन दबाया। कुछ देर बाद एक बूढ़े नौकर ने दरवाजा खोला।

"फरमाइए।"

"मिस राजी सिन्हा हैं?" सुरेश ने पूछा।

"जी हां, आप कहां से तशरीफ लाए हैं?"

"मैं उनकी सहेली सविता देवी का सन्देश लेकर आया हूं।"

"आइए, अन्दर तशरीफ लाइए।"

सुरेश और कमल नौकर के साथ एक सुसज्जित ड्राइंगरूम में पहुंचे। नौकर उन्हें बैठा कर चला गया। लगभग तीन मिनट के बाद राजी अन्दर आई। उसने चटकीले रंग की साड़ी और ब्लाऊज पहन रखा था। उसकी आंखों में शोखी और चिन्ता थी। सुरेश और कमल शिष्टता के नाते उठ कर खड़े हो गए।

राजी ने कहा--

"बैठिए, बैठिए, मैं ही राजी हूं। आप लोग सविता के पास से आए हैं?"

"जी हां," सुरेश बैठते हुए बोला।

"शायद आप कैलाश बाबू के मित्र हैं," राजी ने बैठते हुए कहा।

"जी हां।"

"क्या सन्देश भेजा है सविता ने! ठीक तो है न? और कैलाश

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बाबू, कैसे हैं ?"

"आपके लिए एक दुखद सूचना है," सुरेश ने धीरे-से कहा, "आपकी सहेली विधवा हो गईं।"

"क्या ?" राजी हड़बड़ा कर खड़ी हो गई।

"जी हां। कैलाश बाबू अब इस संसार में नहीं हैं," सुरेश ने धीरे-से कहा।

राजी भौंचक्की-सी सुरेश की ओर देखने लगी। फिर वह धीरे-से बैठ गई। उसके चेहरे पर आश्चर्य के चिह्न तो थे लेकिन दुख या शोक की छाया तक न थी। सुरेश बड़े ध्यान से उसका चेहरा देख रहा था।

राजी ने कुछ देर बाद कहा—

"लेकिन अचानक हुआ क्या ? सविता उस दिन मेरी सगाई में आई थी तब तो उसने मुझे कुछ बताया नहीं था।"

"सम्भव है खुशी के मौके पर विघ्न पड़ जाने की आशंका से उन्होंने आपको बताया नहीं। उस दिन कैलाश की तबियत बहुत खराब थी। इसीलिए तो सविता देवी यहां टैक्सी से आई थी और अधिक देर ठहर भी न सकी थी।"

"टैक्सी से ?" राजी ने आश्चर्य से कहा," वह तो ट्रेन से आई थी। मैंने उसके लिए स्टेशन पर गाड़ी भेजी थी। एक दिन पहले ही उसका टेलीग्राम मिला था कि राजधानी एक्सप्रेस से पहुंच रही है।"

"ओह," सुरेश बोला, "शायद मैंने गलत सुना हो। उसी दिन कैलाश बाबू की रात को मृत्यु हो गई।"

"ओह, क्या बीमारी थी उन्हें।"

"अन्धाधुंध शराब पीना अपने आप में ही एक बहुत बड़ी बीमारी है।"

राजी ने बुरा-सा मुंह बनाकर कहा—

"वह तो होना ही था। अंकल ने न जाने क्या सोचकर सविता जैसी हीरा लड़की को उस पत्थर के गले मढ़ दिया था। डेढ़ वर्ष के विवाहित जीवन में बेचारी ने सुख-चैन की एक सांस भी नहीं ली।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"होनी को कौन टाल सका है," सुरेश ने उदास स्वर में कहा।

"यह सब कहने की बात है। कभी-कभी आदमी जान-बूझकर भी अपने पैरों में कुल्हाड़ी मार लेता है। अंकल तो स्वर्ग सिधार गए और उस बेचारी को बेसहारा छोड़ गए। सौतेली मां को तो उसके नाम से चिढ़ है।... सविता अब है कहां?"

"अभी तो वहीं है।"

"सविता मेरी बहुत ही प्यारी सहेली है। मैं उसे बेसहारा न रहने दूंगी। आप उससे कह दीजिएगा कि वह फौरन मेरे पास चली आए। वरना दो-चार दिन में मेरे इम्तहान खत्म होने वाले हैं। मैं खुद जाकर उसे ले आऊंगी।"

"मैं आपका संदेश पहुंचा दूंगा। अब हमें आज्ञा दीजिए।" सुरेश ने उठते हुए कहा।

"अरे बैठिए ना," राजी जल्दी से बोली, "कुछ खा-पीकर ही जाइएगा।"

"हमें जरा जल्दी है। इसलिए क्षमा कीजिए।"

"यह नहीं हो सकता। आप लोग कितनी ही जल्दी में क्यों न हों। आप चाय पिए बिना यहां से नहीं जा सकते। वरना सविता क्या कहेगी।"

सुरेश और कमल को रुकना पड़ा।

० ० ०

वापसी में कमल ने पूछा—"अब आपका क्या विचार है सर?"

"राजी की बातचीत से तो यही सिद्ध होता है कि सविता निर्दोष है।"

"बिल्कुल। कैलाश की हत्या सात और आठ बजे के बीच हुई थी। और सविता को राजधानी एक्सप्रेस पकड़ने के लिए साढ़े छः बजे ही घर छोड़ देना पड़ा होगा।"

सुरेश चुप रहा। वह गहरे सोच में डूबा हुआ था। कुछ देर बाद उसने कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"तुमने एक बात नोट नहीं की।"

"वह क्या ?"

"राजी पर कैलाश की मृत्यु की प्रतिक्रिया केवल आश्चर्य के रूप में हुई। लगता है उसे कैलाश से कोई हमदर्दी न थी।"

"स्वाभाविक है। कैलाश का सविता के साथ जो व्यवहार था उसके कारण मेरे मन में भी कैलाश के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। शायद उसके पड़ौसियों की भी यही दशा हो।"

"कैलाश स्वयं बुरा नहीं था। प्रत्येक पुरुष अपनी पत्नी के सम्बन्ध में बहुत ही संवेदनशील होता है। कैलाश के मन में संदेह का जो बीज बो दिया गया था उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप यही व्यवहार वह कर सकता था।"

"इसका अर्थ है कि आपको कैलाश से हमदर्दी थी।"

"हमदर्दी का यह अर्थ नहीं है कि मुझे सविता से कोई हमदर्दी नहीं और इसीलिए मैं उस पर संदेह कर रहा हूं। कैलाश मेरा मित्र था। लेकिन वर्तमान स्थिति में कैलाश की अपेक्षा सविता के प्रति मेरे मन में कहीं अधिक सहानुभूति है।"

"स्वाभाविक है। क्योंकि इस भरी दुनिया में उसका कहीं कोई नहीं है।"

"नहीं यह बात नहीं है। सविता के लिए राजी का सहारा ही काफी है। लेकिन क्योंकि वह मेरे मित्र की पत्नी थी। इसलिए मैं भी उसे बेसहारा भटकने नहीं दूंगा।"

कमल ने एक भरपूर निगाह सुरेश पर डाली। उसके होंठों पर मुस्कान थिरक उठी।

० ० ०

"क्या ?" रूपा हड़बड़ाकर खड़ी हो गई ! आप यह क्या कह रहे हैं वकील साहब ?"

वकील ने गम्भीरता से कहा—

"वही कह रहा हूं जो रायबहादुर अपनी वसीयत में लिख गए

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं।"

"यानी वह अपनी सारी सम्पत्ति सविता के नाम छोड़ गए हैं।"

"जी हां। इस वसीयत में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि उनकी समस्त सम्पत्ति की एकमात्र अधिकारी सविता है।"

"और मेरे लिए उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा?"

"आपके लिए एक हज़ार रुपए हर माह मिला करेंगे। लेकिन तभी जब सविता देवी अपनी इच्छा से आपको दें।"

रूपा हाथ नचाकर क्रोध से बोली—

"यानी मेरा कोई अधिकार ही नहीं है अपने पति की सम्पत्ति पर?"

"वसीयत से तो यही प्रगट होता है।"

"आप झूठ बोल रहे हैं। आप लगता है सविता से मिल गए हैं।"

वकील ने अप्रसन्न होकर कहा—"देवीजी, मैं एक ज़िम्मेदार वकील हूं। वसीयतनामे पर रायबहादुर के जो दस्तखत हैं जाली नहीं हैं।"

रूपा भिन्ना उठी—

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।"

"मैं ही आपको कब सुनाना चाहता था। आपने ही मुझे बुलाया था।"

वकील ने कागजात उठाए और कमरे से निकल गया।

रूपा ने पलटकर एक मेज़ में ठोकर मारी। मेज एक नौकर के पैरों से जा टकराई। वह उछलकर बोला—

"म ··· म ··· मालकिन ···!"

रूपा ने फाड़खाने वाले स्वर में कहा—

"क्या है!"

"गोल्डी साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

"भाग जाओ यहां से। मैं किसी से मिलना नहीं चाहती।"

नौकर बाहर जाने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"तुमने एक बात नोट नहीं की।"

"वह क्या ?"

"राजी पर कैलाश की मृत्यु की प्रतिक्रिया केवल आश्चर्य के रूप में हुई। लगता है उसे कैलाश से कोई हमदर्दी न थी।"

"स्वाभाविक है। कैलाश का सविता के साथ जो व्यवहार था उसके कारण मेरे मन में भी कैलाश के प्रति कोई सहानुभूति नहीं है। शायद उसके पड़ौसियों की भी यही दशा हो।"

"कैलाश स्वयं बुरा नहीं था। प्रत्येक पुरुष अपनी पत्नी के सम्बन्ध में बहुत ही संवेदनशील होता है। कैलाश के मन में संदेह का जो बीज बो दिया गया था उसकी प्रतिक्रिया स्वरूप यही व्यवहार वह कर सकता था।"

"इसका अर्थ है कि आपको कैलाश से हमदर्दी थी।"

"हमदर्दी का यह अर्थ नहीं है कि मुझे सविता से कोई हमदर्दी नहीं और इसीलिए मैं उस पर संदेह कर रहा हूं। कैलाश मेरा मित्र था। लेकिन वर्तमान स्थिति में कैलाश की अपेक्षा सविता के प्रति मेरे मन में कहीं अधिक सहानुभूति है।"

"स्वाभाविक है। क्योंकि इस भरी दुनिया में उसका कहीं कोई नहीं है।"

"नहीं यह बात नहीं है। सविता के लिए राजी का सहारा ही काफी है। लेकिन क्योंकि वह मेरे मित्र की पत्नी थी। इसलिए मैं भी उसे बेसहारा भटकने नहीं दूंगा।"

कमल ने एक भरपूर निगाह सुरेश पर डाली। उसके होंठों पर मुस्कान थिरक उठी।

० ० ०

"क्या ?" रूपा हड़बड़ाकर खड़ी हो गई ! आप यह क्या कह रहे हैं वकील साहब ?"

वकील ने गम्भीरता से कहा—

"वही कह रहा हूं जो रायबहादुर अपनी वसीयत में लिख गए

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हैं।"

"यानी वह अपनी सारी सम्पत्ति सविता के नाम छोड़ गए हैं।"

"जी हां। इस वसीयत में उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि उनकी समस्त सम्पत्ति की एकमात्र अधिकारी सविता है।"

"और मेरे लिए उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा?"

"आपके लिए एक हज़ार रुपए हर माह मिला करेंगे। लेकिन तभी जब सविता देवी अपनी इच्छा से आपको दें।"

रूपा हाथ नचाकर क्रोध से बोली—

"यानी मेरा कोई अधिकार ही नहीं है अपने पति की सम्पत्ति पर?"

"वसीयत से तो यही प्रगट होता है।"

"आप झूठ बोल रहे हैं। आप लगता है सविता से मिल गए हैं।"

वकील ने अप्रसन्न होकर कहा—"देवीजी, मैं एक ज़िम्मेदार वकील हूं। वसीयतनामे पर रायबहादुर के जो दस्तखत हैं जाली नहीं हैं।"

रूपा भिन्ना उठी—

"मैं कुछ नहीं सुनना चाहती।"

"मैं ही आपको कब सुनाना चाहता था। आपने ही मुझे बुलाया था।"

वकील ने कागजात उठाए और कमरे से निकल गया।

रूपा ने पलटकर एक मेज़ में ठोकर मारी। मेज एक नौकर के पैरों से जा टकराई। वह उछलकर बोला—

"म···म···मालकिन···!"

रूपा ने फाड़खाने वाले स्वर में कहा—

"क्या है!"

"गोल्डी साहब आपसे मिलना चाहते हैं।"

"भाग जाओ यहां से। मैं किसी से मिलना नहीं चाहती।"

नौकर बाहर जाने लगा।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अचानक रूपा ने ज़ोर से पुकारा--

"राजू···!"

"जी मालकिन!" नौकर घबड़ाकर रुक गया।"

"गोल्डी साहब को ड्राइंग रूम में बैठाओ मैं अभी आती हूं।

"जो हुकुम मालकिन।"

नौकर के जाते ही रूपा आईने के सामने जा खड़ी हुई। उसने जल्दी-जल्दी अपने बाल संवारे। होंठों पर लिपस्टिक लगाई और ड्राइंग रूम की ओर चल दी।

रूपा को आते देखकर गोल्डी उठ खड़ा हुआ—

"गुड मार्निंग रूपा देवी।"

"मार्निंग, आज तुम सवेरे-सवेरे ही कैसे चले आए?"

"आप तो जानती ही हैं कि एक-दो हफ्ते से अधिक आपको देखे बिना मैं रह नहीं सकता।"

रूपा मुस्कराई—"सो तो सच है। इसीलिए मैं इस समय तुम्हारी बहुत ही आवश्यकता अनुभव कर रही थी।"

"मेरे लिए कोई आज्ञा?"

"मैं शर्मिन्दा हूं कि तुम्हारा विवाह सविता से न करा सकी। क्योंकि मैं बहुत ही मजबूर थी।"

"लेकिन अब तो आपकी मजबूरी खत्म हो हो चुकी है," गोल्डी मुस्कराया, "आपकी पहली मजबूरी आपके पति थे और दूसरी मजबूरी सविता का पति था। आपके पति की भी मृत्यु हो गई और सविता का पति भी इस संसार से चल बसा।"

"नहीं!" रूपा ने आंखें फाड़कर कहा।

"और आप चाहें तो मेरे सपने पूरे कर सकती हैं।"

"लेकिन तुम्हें मेरे साथ एक सौदा करना पड़ेगा।"

"लाख···दो लाख···दस लाख···जो आप चाहें।"

"नहीं, इससे अधिक तो मेरे पति छोड़ गए हैं। लेकिन वह मेरे लिए कुछ छोड़ नहीं गए। अपनी सारी सम्पत्ति सविता के नाम कर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गए हैं।"

"यानी, अब आप सविता की मुहताज बनकर रहेंगी।"

"अगर तुम्हें सविता चाहिए तो बाकी सब कुछ मेरा होगा।"

"उसके अलावा दो-चार लाख और ले लीजिए। आप तो जानती ही हैं कि मैं कितना भी बुरा सही लेकिन मैंने सविता को अपनी अन्तरात्मा से प्रेम किया है। जिस दिन मुझे सविता मिल जाएगी उस दिन के बाद मैं एक नया इन्सान बन जाऊंगा। आप जब अपना वायदा पूरा कर देंगी, मैं भी अपना वायदा पूरा कर दूंगा।"

"पक्की रही। सविता कैलाश के फ्लैट में ही है ना?"

"नहीं। सविता अब कैलाश के एक मित्र सुरेश के फ्लट में रह रही है।"

"सुरेश···? वह कौन है?"

"वह कैलाश का मित्र है। मुझे डर है कि सविता कहीं हाथ से न निकल जाए।"

"सुरेश का पता मालूम है?"

"मालूम है। मैं चाहता तो सविता को वहां से कभी का उठवा लेता लेकिन अब मैं उसका मन जीत कर ही उसे पाना चाहता हूं।"

"मुझे पता बताओ।"

गोल्डी ने सुरेश के फ्लैट का पता बता दिया। फिर बोला—

"लेकिन आपको बहुत सोच-समझ कर काम करना है।"

"मैं जानती हूं मुझे क्या करना है और किस तरह करना है। तुम बिल्कुल निश्चिन्त रहो।"

"धन्यवाद रूपा देवी।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

दस

जैसे ही लिफ्ट रुकी ऊंघता हुआ श्यामू लिफ्टमैन से टकरा गया। और झल्ला कर बोला--

"ऐ···संभल कर नहीं चलते ?"

"अरे वाह, टकराए तो आप हैं मुझसे," लिफ्टमैन मुस्कराया।

"अच्छा बस। बकबक बंद करो। गाड़ी आगे बढ़ाओ।"

"गाड़ी नहीं है यह ··· यह तो लिफ्ट है। और आपको दूसरे माले पर जाना था। यह दूसरा ही माला है।"

"तो पहले क्यों नहीं बताया।"

श्यामू बाहर निकला। झूमता हुआ एक फ्लैट के सामने पहुंचा और घंटी बजाने लगा।

फ्लैट का दरवाज़ा खुला। सामने खड़ी आया को देखकर श्यामू ने आश्चर्य से कहा--

"हाय सविता जी, आपने यह कैसे कपड़े पहन लिए ?"

"क्या बकते हो ? मेरा नाम सविता नहीं, रीटा है," आया ने गुस्से से कहा।

"रीटा ? क्या सविता जी ने तुम्हें नौकर रख लिया ?" श्यामू आंखें फाड़ कर बोला।

"व्हाट ···! मैं तो जैक्सन साहब की नौकर हूं।"

"जैक्सन साहब की नौकर हो तो यहां क्या कर रही हो। जाओ अपने फ्लैट में।"

रीटा ने फटाक से दरवाज़ा बंद कर लिया। श्यामू ने सब्जी की बास्केट दांए हाथ में लेकर बांए हाथ से खोपड़ी सहलाई और बड़-बड़ाया—

"क्या मुसीबत है ! सारे फ्लैट एक जैसे हैं। कम से कम दरवाज़ों के रंग ही बदल देते।"

फिर वह बड़बड़ाता हुआ सिरे तक चला गया और दूसरी ओर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

झांककर देखने लगा। फिर चौंककर बोला—

"ओह, यह रहा अपना फ्लैट।"

उसने फ्लैट के सामने पहुंकर घंटी का बटन दबाया। कुछ देर बाद दरवाज़ा खुल गया। सामने सविता खड़ी थी। वह नहा कर अभी-अभी बाथ-रूम से निकली थी। उसके बाल जूड़े की तरह ऊपर बंधे हुए थे।

श्यामू जल्दी से पलटते हुए बोला—"क्षमा कीजिए देवी जी। मैं गलत जगह चला आया। ये साले फ्लैट ही एक जैसे हैं। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।"

"अरे श्यामू, यह मैं हूं। मालूम होता है तुमने आज फिर अफीम चढ़ा ली है," सविता मुस्कराई।

श्यामू पलकें झपका कर आश्चर्य से सविता को देखने लगा। फिर लपक कर अंदर चला गया। उसने वास्कट सविता के हाथ में थमाई और टेलीफोन की ओर बढ़ गया। सविता उसे आश्चर्य से देखती रह गई।

श्यामू ने जल्दी-जल्दी नम्बर डायल किए और रिसीवर कान से लगा लिया।

दूसरी ओर से आवाज़ आई—

"यस प्लीज़।"

"जल्दी से साहब को फोन पर बुला दीजिए।"

"किन साहब को?"

"मेरे साहब को···ओह, सुरेश कुमार साहब को।"

"एक मिनट प्लीज़।"

सविता का आश्चर्य बढ़ गया।

श्यामू ने सुरेश की आवाज़ सुनी—

"हैलो, मैं सुरेश हूं।"

"मैं श्यामू हूं साहब।"

"क्या बात है?"

"जितनी जल्दी हो सके यहां चले आइए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आखिर बात क्या है ?"

"बस आप फौरन चले आइए।"

फिर श्यामू ने रिसीवर रख दिया।

सविता ने आश्चर्य से पूछा--

"क्या हुआ श्यामू, तुमने साहब को क्यों बुलाया है ?"

"अभी नहीं बताऊंगा। आज देखता हूं साहब कितने पानी में हैं।"

"क्या मतलब ?"

"मतलब भी अभी नहीं बताऊंगा।"

सविता अश्चर्य से श्यामू की ओर देखती रह गई।

० ० ०

सुरेश की कार बड़ी तेज़ी के बिल्डिंग के सामने पहुंचकर रुक गई। वह तेज़ी सें उतर कर लिफ्ट के पास पहुंचा। लिफ्ट ऊपर थी। सुरेश सीढ़ियों की ओर लपका। उसने एक-एक छलांग में तीन-तीन सीढ़ियां फलांगी और अपने फ्लैट के सामने पहुंच गया।

घंटी के बजते ही दरवाज़ा खुल गया। दरवाज़ा श्यामू ने ही खोला सुरेश तेज़ी से अंदर चला गया।

"क्या बात है श्यामू ?" उसने श्यामू से पूछा।

"आइए," श्यामू ने उसका हाथ पकड़ा और अंदर के कमरे की ओर बढ़ गया।

कमरे में पहुंचकर उसने सविता की ओर इशारा किया। वह अभी तक उन्हीं कपड़ों में थी जिन्हें पहन कर वह बाथ-रूम से निकली थी। श्यामू ने कहा—

"ज़रा देखिए।"

"क्या देखूं ?" सुरेश ने आश्चर्य से पूछा।

फिर वह हक्का-बक्का सा सविता की ओर देखने लगा। सविता बहुत ही सुन्दर दिखाई दे रही थी।

श्यामू ने आश्चर्य सें कहा--

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"आपको कुछ दिखाई नहीं दे रहा ?"

"क्या दिखाई नहीं दे रहा ?"

"ध्यान से देखिए। सविता जी आज कितनी अच्छी लग रही हैं।"

सविता का चेहरा गुलाल की तरह लाल पड़ गया।

श्यामू ने कहा—

'जैसे आप हैं वैसी ही सविता जी हैं। इस घर में एक मालकिन की ज़रूरत है। जब से सविता जी आई हैं मुझे ऐसा लगने लगा है जैसे इस घर में जो कमी थी पूरी हो गई है। सविता जी वे सारे काम करती हैं जो घर की मालकिन को करने चाहिए। लेकिन आपके दिमाग में अभी तक यह बात नहीं बैठी कि मुझे सविता जी जैसी ही मालकिन चाहिए।"

सुरेश ने गुस्से से कहा—

"तो तुमने मुझे इसलिए आफिस से बुलाया था ?"

"और क्या। क्योंकि आज सविता जी बहुत ही अच्छी लग रही थीं। मैं जानता था कि आज तो आपको मेरे पक्ष में निर्णय करना ही पड़ेगा।"

"दिमाग खराब हो गया है तुम्हारा। हर घड़ी अफीम की पीनक में रहते हो" सुरेश बिगड़ कर बोला।

"भगवान की कसम इस समय तो बिल्कुल नशे में नहीं हूं।"

"अच्छा बको मत। फिर कभी ऐसी बदतमीज़ी की तो नौकरी से निकाल दूंगा।"

श्यामू का चेहरा उतर गया। उसकी आंखें भर आईं और फिर वह तेज़ी से दूसरे कमरे में चला गया।

सुरेश ने सविता की ओर देखा। उसकी आंखें भी डबडबा रही थीं। सुरेश ने कुछ कहने के लिए होंठ खोले ही थे कि सविता तेजी से दूसरे कमरे में चली गई।

० ० ०

सविता और सुरेश डाइनिंग टेबल पर चुपचाप खाना खा रहे थे। सविता के चेहरे पर उदासी के बादल छाए हुए थे। सुरेश कुछ गुमसुम

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

था। दोनों एक दूसरे की ओर देख भी नहीं रहे थे। श्यामू बड़ी खामोशी से खाना सर्व कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह गुस्से में भी और दुखी भी हो। अचानक सविता खाना छोड़कर नेपकिन से हाथ पोंछने लगी। सुरेश चौंक कर उसकी ओर देखने लगा।

श्यामू ने सुरेश से पूछा—"खाना खा चुके साहब ?"

"हां क्यों ?"

"कल सवेरे मेरा हिसाब कर दीजिएगा।" श्यामू ने गम्भीरता से कहा।

"क्यों ?"

"मैं अपने घर जा रहा हूं।"

"क्यों ?"

"बस जा रहा हूं।"

श्यामू ने निर्णयात्मक स्वर में कहा और बर्तन समेटने लगा। सविता उठकर चली गई।

सुरेश को भी अपने मस्तिस्क पर कुछ बोझ सा महसूस हो रहा था। वह उठकर दूसरे कमरे में चला गया। खिड़की के पास पहुंच कर उसने सिगरेट सुलगाया। दो-तीन कश लेकर उसने सिगरेट फर्श पर फेंक दिया। उसे जूते से मसला और बैडरूम की ओर बढ़ गया। बैडरूम में सविता खिड़की के पास चुपचाप खड़ी हुई थी।

सुरेश ने धीरे से पुकारा—

"सविता···!"

सविता जल्दी-जल्दी अपने आंसू पोंछने लगी।

सुरेश ने कहा—

"मैं जानता हूं तुम्हें श्यामू की बात से दुख हुआ होगा।"

"नहीं, कल मैं ही चली जाऊंगी य हां से।"

"क्यों ?"

"श्यामू बहुत अच्छा आदमी है। आपको ऐसा भला और वफादार नौकर नहीं मिलेगा। मैं नहीं चाहती कि मेरे कारण वह यहां से जाए।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"लेकिन तुम जाओगी कहां ?"

"दुनिया बहुत बड़ी है। कहीं न कहीं सिर छिपाने को जगह मिल ही जायगी।"

"लेकिन मैं तुम्हें इस तरह बेसहारा भटकने न दूंगा।"

"आप कब तक मेरा सहारा बने रहेंगे ?"

"जब तक हो सकेगा।"

"लेकिन मैं किसी पर बोझ बनकर रहना नहीं चाहती।"

"मैं तो तुम्हें बोझ नहीं समझता।"

"फिर क्या समझते हैं ?"

सुरेश निरुत्तर हो गया।

सविता ने सुरेश की आंखों में देखते हुए कहा—"बताइए ना, आप आखिर क्या समझते हैं ?"

"तुम मुझे गलत समझ रही हो सविता। तुम मेरे स्वर्गवासी मित्र की पत्नी हो।"

"मैं किसी की पत्नी नहीं हूं। अगर पत्नी होती तो वह मुझे अपनी पत्नी समझते। उन्होंने मुझे कौन सा सुख दिया जो मैं उनकी मृत्यु के बाद उन्हें देवता समझती हूं।" सविता ने झल्लाकर कहा।

"सवित···!" सुरेश के स्वर में आश्चर्य था।

"भांवरे पड़ जाना ही सब कुछ नहीं होता। फिर भी मैं उनका सम्मान करती रही। उनके बारे में कभी कोई बुरी बात नहीं सोची। आज वह नहीं हैं इसलिए आप मुझे उनकी पत्नी समझ कर मेरा बोझ उठाना चाहते हैं। लेकिन मैं भीख में मिला सुख नहीं चाहती। मुझे आपकी दया और सहानुभूति नहीं चाहिए।"

सुरेश ने धीरे से कहा—

"अगर तुम्हें दया नहीं चाहिए तो फिर तुम क्या चाहती हो ? मैं वह सब देने को तैयार हूं जिसे तुम अपना सम्मान और सुख समझो।"

"सुरेश बाबू···!" सविता का स्वर कांप उठा।

"हां सविता, अब तक मैं तुम्हें कैलाश की पत्नी ही समझता था।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

लेकिन म यह भूल गया था कि स्वयं कैलाश ने तुम्हें अपनी पत्नी कभी नहीं समझा।"

"मैं कई दिन से तुमसे यह कहना चाह रहा था कि तुम इस घर को छोड़कर कभी मत जाना लेकिन कह नहीं पाया। तुम यह न समझना कि मैं तुम्हारी विवशता का अनुचित लाभ उठा रहा हूं।"

"भला हो श्यामू का कि यह बात खुलकर सामने आ गई। जो कुछ तुम्हें कैलाश ने नहीं दिया वह सब कुछ मैं तुम्हें दूंगा। कैलाश ने एक हीरे को ठुकराया, उसका दंड उसे मिल गया। मैं इस हीरे को अपनी पलकों पर बैठाना चाहता हूं। इसे अपने दिल में छिपा लेना चाहता हूं। शुरू-शुरू में तो मेरे दिल में यह संदेह था कि कैलाश के व्यवहार से तंग आकर कहीं तुम्हीं ने उसे न मार डाला हो। इसीलिए मैंने दिलावर नगर जाकर इस बात की छानबीन की कि तुम उस समय दिलावर नगर में थीं या नहीं जब कैलाश की हत्या हुई। और यह बात प्रमाणित होते ही मेरा संदेह दूर हो गया। और मैंने निर्णय कर लिया कि तुम अब मुझसे कभी अलग न होगी। अगर मेरा प्यार सच्चा है तो मेरी मौन भावनाएं ही एक दिन तुम्हें सबकुछ बता देंगी और मैं तुम्हें हमेशा के लिए अपना लूंगा। अब मैं तुम्हें इस घर से कभी न जाने दूंगा। अगर तुम चली गईं तो मेरी जीवन भर की खुशियां मुझसे रूठ जायेंगी।"

सविता भौंचक्की-सी सुरेश को देखती रही।

सुरेश ने सविता के दोनों हाथ थाम कर कहा--

"बोलो सविता, कह दो तुम मुझे छोड़कर कभी न जाओगी।"

"सुरेश बाबू!"

और सविता सुरेश के कंधे से लिपट गई और फूट-फूटकर रोने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे उसके अन्दर की कोई ग्रन्थि खुल गई है और कोई अनजाना स्रोत फूट पड़ा है।

सुरेश ने उसके बालों पर हाथ फेरते हुए कहा--

"बस करो सविता ... मुझे उत्तर मिल गया।"

सविता रोती रही ...।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुरेश ने उसका चेहरा दोनों हाथों में लेकर कहा--

"देखो तो कितने आंसू वहा दिए तुमने।"

सविता ने भारी आवाज़ में कहा--

"सुरेश बाबू, मेरी आंखों ने बहुत आंसू वहाए हैं लेकिन खुशी के आंसू आज पहली बार ही वहाए हैं।"

"सविता ···!"

"मैंने अब तक जीवन में दुख ही देखा है। बचपन से सौतेली मां के अत्याचार सहती रही ··· विवाह के बाद पति के अत्याचार सहती रही। आज पहली बार मैंने महसूस किया है कि आपके बिना मेरा कोई अस्तित्व नहीं है। मैं आपसे अलग होने की कल्पना भी नहीं कर सकती।"

सविता ने सुरेश के सीने में सिर छिपा लिया। सुरेश उसके बालों में उंगलियां फेरता रहा।

अचानक पीछे से श्यामू के खांसने की आवाज़ आई। दोनों हड़बड़ा कर अलग हो गए। सविता का चेहरा शर्म से लाल पड़ गया।

सुरेश ने श्यामू की ओर देखा, "यह क्या बदतमीज़ी है।"

"खांसी," श्यामू खांसते हुए बोला, "बहुत ज़ोर की खांसी उठ रही है ··· इस खांसी में अपने घर अब कैसे जा सकता हूं।"

सुरेश ने हँसते हुए उसकी गर्दन पकड़ी—

"बन्द करो खांसना वरना में तुम्हारी सांस बन्द कर दूंगा।"

श्यामू की खांसी में ब्रेक लग गया। वह सुरेश को घूर कर बोला—

"खांसी फिर शुरू हो जाएगी, अगर मुझे एक चुगली खाने की आज्ञा न मिली।"

"बेईमान।"

सुरेश ने हँसकर उसकी पीठ में एक घूंसा जड़ दिया और दूसरे कमरे में चला गया।

श्यामू ने मुस्करा कर कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"कल सवेरे ही किसी पंडित को ढूंढ़ कर मुहूर्त निकलवाता हूं।"

० ० ०

सविता ने पतीली उतार कर नीचे रखी ही थी कि घंटी बज उठी। वह जल्दी-जल्दी हाथ पोंछती हुई बाहर निकली।

सविता दरवाज़े के पास पहुंची ही थी कि घंटी फिर बज उठी। सविता ने चौंककर फोन की ओर देखा। घंटी फोन की ही थी। सविता ने लपक कर रिसीवर उठा लिया।

"हैलो···!"

"सविता···मैं हूं सुरेश।" दूसरी ओर से आवाज़ आई।

सविता का दिल ज़ोर से फड़क उठा। आंखों में लाली दौड़ गई। उसने धीरे से कहा—

"फर्माइए।"

"कुछ नहीं। बस तुम्हारी आवाज़ सुनने के लिए फोन दिया है।"

"अच्छा," सविता ने शोखी से कहा।

"न जाने तुमने क्या जादू कर दिया है कि आफिस में बैठे-बैठे भी तुम्हारा ही ध्यान रहता है। बेचैनी से शाम होने का इन्तज़ार करता हूं। जी चाहता है तुम हर घड़ी मेरे सामने ही रहो।"

"बुरी बात है। काम में मन लगाइए।"

"कैसे लगाऊं! मन अपने वश में नहीं रहा।"

"शैतान कहीं के।"

"अच्छा सुनो। तुम्हें फ्लैट में ही बन्द रहते-रहते कई दिन हो गए हैं। तुम ऊब गई होगी। आज मैं तुम्हें घुमाने ले चलूंगा।"

"बाहर घुमाने···लेकिन···!"

"चिन्ता न करो। आज रात का खाना हम लोग वाल्गा में खाएंगे। फिल्म देखेंगे। तुम श्यामू के लिए खाना बना देना। और तुम आज हल्के फीरोजी रंग की साड़ी पहनना। उस साड़ी में तुम बहुत अच्छी लगती हो।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"और कुछ ?"

"अब और कुछ तुम बताओ। क्या सबकुछ मैं ही बताऊं ?"

तभी दरवाज़े की घंटी बज उठी। सविता ने कहा—

"शायद श्यामू आ गया। आप काम में मन लगाइए। बातें शाम को होंगी।"

"अच्छा, सुनो, ज़रा इधर आओ मेरे पास।"

"हिश्त ··· शैतान कहीं के।"

सविता ने रिसीवर रख दिया और मुस्कराती हुई दरवाज़े की ओर बढ़ गई। लेकिन जैसे ही दरवाज़ा खोला वह सन्नाटे में खड़ी रह गई।

सामने एक सफेद साड़ी पहने रूपा खड़ी थी। उसके चेहरे पर दुख और शोक की छाया थी। आंखों में आंसू थे।

उसने दोनों हाथ फैला कर भर्राए स्वर में कहा, "सविता ··· ! मेरी बेटी ··· ! !"

फिर वह सविता से लिपट गई और फूट-फूट कर रोने लगी।

सविता अवाक खड़ी सोच रही थी कि क्या यह वही रूपा है जो उसे आज तक अपना दुश्मन समझती रही।

रूपा ने सविता को चूम कर कहा, "यह क्या हो गया बेटी ? अभी तो तेरी मांग में आग लगे चार दिन भी न हुए थे कि तेरा सुहाग भी छीन लिया गया।"

कहते-कहते रूपा फिर रोने लगी।

सविता ने सिसकते हुए कहा—

"मम्मी ··· !"

"मेरी लाड़ली ··· मेरी बेटी ··· !"

बड़ी कठिनाई से दोनों ने अपने आपको सम्भाला।

रूपा सोफे पर बैठती हुई शिकायत-भरे स्वर में बोली—

"बेटी, तू मुझे हमेशा पराया समझती रही। कैलाश के मर जाने की भी खबर मुझे न दी। तू समझती है कि मेरा मन आज भी पहले

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जैसा ही है। मैंने तुझे बहुत दुख दिए थे। लेकिन जब से तेरे डैडी परलोक सिधारे हैं, मुझे इस भरी दुनिया में तेरे सिवा अपना और कोई दिखाई नहीं देता।"

"मुझे क्षमा कर दीजिए मम्मी।"

रूपा ने सविता को लिपटा लिया—

"मेरी बच्ची! क्षमा मांग कर मेरा मन और न दुखा। मुझे तो अचानक ही पता चला कि तुझ पर ऐसी विपदा टूट पड़ी। मैं तो दुख के मारे पागल हो गई। पागलों की तरह तेरे फ्लैट पर भागती हुई गई तो पता चला कि तू वहां नहीं है। तेरे एक पड़ौसी ने यहां का पता दिया।"

"मुझे कैलाश बाबू के एक मित्र यहां ले आए थे।"

"बेटी पराए फिर भी पराए ही होते हैं। दुनिया सुनेगी तो क्या कहेगी कि मां का घर होते हुए भी बेटी दूसरों के घर में रह रही है। और फिर दुनिया को कुछ कहते देर थोड़े ही लगती है। विधवा की आबरू वैसे ही बड़ी नाजुक होती है। अब मैं तुझे यहां नहीं रहने दूंगी। और फिर वह घर मेरा अकेली का ही नहीं तेरा भी तो है। उस पर जितना मेरा अधिकार है, उतना ही तेरा है। तेरे सिवा मेरा और है ही कौन मेरे बाद सब कुछ तेरा ही है। मैं तो तेरे डैडी की सारी जायदाद अभी से तेरे नाम कर दूंगी।"

"नहीं मम्मी, मुझे आपका प्यार मिल गया यही बहुत है। मुझे उस सम्पत्ति का कोई मोह नहीं है।"

रूपा ने सविता को लिपटाते हुए कहा, "अब जल्दी से तैयार हो जा!"

"मम्मी, सुरेश बाबू को तो आ जाने दीजिए।"

"आ जाएगा सुरेश! नौकरों पर घर छोड़कर आई हूं। गाड़ी नीचे खड़ी है। शाम से पहले ही हमें घर पहुंचना है।"

"लेकिन मम्मी ···!"

"मैं कुछ नहीं सुनूंगी बेटी! अगर तू इसी समय मेरे साथ न चलेगी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

तो मैं समझूंगी कि तू अभी तक मुझसे नाराज है। और सुरेश बाबू को तो मैं देवता समझती हूं जिन्होंने इन बुरे दिनों में तुझे सहारा दिया है।"

"हां मम्मी, सुरेश बाबू सचमुच देवता हैं," सविता ने धीरे से कहा।

"अच्छा!" रूपा आंखें चमका कर खुशी से बोली, "ऐसी बात भी है?"

रूपा लजा गई! धीरे-से बोली—

"उन्होंने मुझे जो सहारा दिया है, शायद अपना भी न देता। और सब कुछ जानते हुए भी वह मुझे हमेशा के लिए सहारा देने को तैयार हैं।"

"सच?" रूपा ने खुश होकर सविता को लिपटा लिया, "फिर तो मेरी सारी चिन्ताएं दूर हो गईं। मैं तो सुरेश के साथ तेरा विवाह करने के बाद तीर्थयात्रा पर चली जाऊंगी और रही-सही ज़िन्दगी भगवान के चरणों में बिता दूंगी।"

"इसीलिए तो कह रही हूं। उन्हें आने दीजिए।"

"सुरेश के लिए सन्देश छोड़ दे बेटी।"

सविता की आंखों में लाज की लाली दौड़ रही थी। वह कुछ कह न पाई।

तभी श्यामू अन्दर आया। वह रूपा को देख कर ठिठक कर रुक गया।

रूपा ने श्यामू को लिपटाते हुए कहा—

"तू आ गया सुरेश··· मेरे बेटे!"

सविता जल्दी से बोली—

"मम्मी यह सुरेश बाबू नहीं श्यामू है।"

रूपा झटके से श्यामू से अलग हो गई। श्यामू हक्का-बक्का-सा रूपा को देखता रह गया।

रूपा ने नाक को चढ़ा कर कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह तो नौकर मालूम होता है। कितनी वदबू आ रही है इसके कपड़ों से।"

सविता जल्दी से बोली—

"श्यामू भैया, यह मेरी मम्मी हैं। मुझे लेने आई हैं।"

"क्यों लेने आई हैं?" श्यामू ने तड़ से पूछा।

"मेरी बेटी है। इसलिए लेने आई हूं।" रूपा से कहा।

"सविता जी, क्या इन्हें मालूम नहीं कि अब आपको हमेशा यहीं रहना है?" श्यामू ने सविता से पूछा।

रूपा ने एकदम अपने आपको वदल कर श्यामू के कंधे पर हाथ रख कर प्यार से कहा—

"मालूम है बेटे। इसीलिए तो मैं इसे ले जा रही हूं। अब तुम अपने मालिक के साथ इसे धूमधाम से लेने आना।"

"ठीक है।" श्याम ने लापरवही से कहा।

"जल्दी चल बेटी!" रूपा ने कहा।

सविता तैयार होने के लिए दूसरे कमरे में चली गई।

ग्यारह

पांच वजते ही सुरेश जल्दी से कुर्सी से उठ खड़ा हुआ। कमल ने उसकी ओर देख कर मुस्कराते हुए पूछा—

"आप आज बहुत बेचैन दिखाई दे रहे हैं सर।"

"ऐं···? ओह कोई वात नहीं," सुरेश मुस्कराया, "सविता कई दिन से फ्लैट में ही बन्द रही है। उसकी तबियत ऊब गई होगी इसलिए उसे आज बाहर ले जाना है।"

"ज़रूर ले जाइए," कमल मुस्कराया, "लेकिन वह केस कब ठिकाने लगेगा।"

"हम लोग छानबीन को जिस स्टेज पर पहुंच चुके हैं। उससे मैं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सन्तुष्ट हूं। फिर भी जब तक हमें गोल्डी के विरुद्ध पूरे प्रमाण नहीं मिल जाते। हम उस पर हाथ नहीं डाल सकते। एक-दो दिन और ठहर जाओ।...हां, तुम्हें कार की जरूरत तो नहीं है?"

"आप ले जाइए। मैं टैक्सी से चला जाऊंगा।"

सुरेश कोट उठा कर बाहर निकल आया।

कुछ देर बाद उसकी कार आंधी की तरह सड़क पर दौड़ रही थी। वह न जाने क्यों जल्द-से-जल्द सविता के पास पहुंच जाना चाहता था।

दस मिनट बाद बिल्डिंग के सामने पहुंच कर रुक गई। वह तेज़ी से कार से उतरा और सीढ़ियों पर छलांगें लगाता हुआ ऊपर पहुंच गया।

उसने जल्दी-से कालबैल का बटन दबाया।

एक मिनट बाद श्यामू ने दरवाज़ा खोला और पलकें झपकाते हुए सुरेश को देखने लगा।

सुरेश ने मुस्करा कर उसके सिर पर चपत लगाई और अन्दर घुसते हुए बोला--

"आज तेरा हुलिया क्यों बिगड़ा है?"

"आप आज इतनी जल्दी कैसे आ गए?"

"आफिस में कोई खास काम नहीं था आज।" सुरेश ने कहा और फिर पुकारा, "सविता...!"

लेकिन कोई उत्तर न मिला।

सुरेश ने फिर पुकारा, "सविता...! क्या कर रही हो तुम...?"

"अभी तो सफर ही कर रही होंगी," श्यामू ने इत्मीनान से कहा।

"क्या मतलब?" सुरेश ने जल्दी से पूछा।

"सफर का मतलब तो सफर ही होता है।"

"कैसा सफर? क्या बक रहे हो?"

"सविता जी अपनी मम्मी के साथ चली गईं।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"क्या ... ?"

सुरेश सन्नाटे में रह गया। उसे लगा जैसे उसका सारा खून किसी ने निचोड़ लिया हो।

"जी हां, उनकी मम्मी आई थीं। कह गई हैं कि अपने साहब के साथ धूमधाम से सविता को लेने आना।"

"सविता खुशी-खुशी गई है ?"

"अपनी मां के साथ गई हैं। भला खुशी-खुशी न जातीं।"

सुरेश ने धीरे से कहा—"वह सविता की मां है।"

"ओहो, तभी तो मैं सोच रहा था कि वे दोनों मां-बेटी के बजाय छोटी-बड़ी बहन क्यों दिखाई दे रही हैं। लेकिन वह सविता जी से प्यार बहुत करती हैं।"

सुरेश थका-थका-सा सोफे पर बैठ गया। वह बुरी तरह चिन्तित हो रहा था।

० ० ०

सविता की आंख खुली तो उसके सामने एक नौकरानी चाय का प्याला लिए खड़ी थी।

"छोटी मालकिन, चाय पी लीजिए।"

सविता आश्चर्य में डूबी उठकर बैठ गई।

तभी रूपा वहां पहुंची और मुस्कराकर बोली—

"जाग गई बेटी ... चाय पी ले।"

उसने सविता के सिरहाने तकिया खड़ा कर दिया और प्यार भरे स्वर में बोली—

"ले इससे पीठ लगा कर आराम से बैठ जा।"

"यह आप क्या कर रही हैं। सेवा तो मुझे करनी चाहिए आपकी," सविता ने कहा।

रूपा ने सविता का चेहरा दोनों हाथों में लेकर प्यार से कहा—

"मुझे शर्मिन्दा न कर बेटी। तूने मेरी बहुत सेवा की है। लेकिन मैं तुझ पर हमेशा अत्याचार ही करती रही। अब मुझे उन पापों का

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

प्रायश्चित कर लेने दे बेटी।"

"ऐसी बातें न कीजिए मम्मी। कुछ भी हो मैं हूं तो आपकी बेटी ही," सविता का गला भर आया।

"अब मैं तुझे दिखाऊंगी कि मां का प्यार क्या होता है," चाय पीकर जल्दी से नहा-धो ले। मैंने तेरे लिए परसों ही एक दर्जन साड़ियां खरीदी थीं। वार्डरोब में टंगी हैं। तुझे जो अच्छी लगे पहन ले। मैं ड्राइंग रूम में तेरा इन्तज़ार करूंगी।"

फिर वह चली गई।

सविता को अपने मन और मस्तिष्क पर एक बोझ-सा महसूस हो रहा था।

० ० ०

बाथरूम से निकल कर सविता आईने के सामने आ खड़ी हुई। उसके बाल जूड़े की तरह सिर के ऊपर बंधे हुए थे।

अचानक सविता को लगा जैसे श्यामू का चेहरा आईने में दिखाई दे रहा हो। वह आश्चर्य से आंखें फाड़े उसे देख रहा हो। फिर टेलीफोन की ओर लपका हो और कह रहा हो--

"देखता हूं अब साहब कैसे रास्ते पर नहीं आते।"

फिर सविता को लगा जैसे आईने में सुरेश का चेहरा झांक उठा हो।

सविता हड़बड़ाकर आईने के सामने से हट गई। उसका दिल धड़क उठा।

कुछ देर तक वह यों ही खड़ी रही। फिर उसने वार्डरोब खोला। सामने रंग-बिरंगी साड़ियां टंगी हुई थीं।

उसके कानों में सुरेश के शब्द गूंज उठे--

"आज तुम हल्की फीरोजी साड़ी पहनना। उसमें तुम बहुत अच्छी लगती हो।"

सविता ने फीरोजी साड़ी निकाल ली। उसके होंठों पर मुस्कराहट दौड़ गई। आंखों में कुछ सपने जाग उठे। कानों में फिर सुरेश की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

आवाज़ गूंज उठी—

"आज हम वाल्गा में रात का खाना खाएंगे।"

फिर उसके मन ने कहा—

"क्या सोचते होंगे सुरेश बाबू तेरे इस तरह चले आने पर?"

सविता का मन कराह उठा।

तभी नौकरानी ने आकर कहा—

"छोटी मालकिन, बड़ी मालकिन ड्राइंग रूम में आपका इन्तज़ार कर रही हैं।"

सविता जल्दी से ड्रेस रूम में चली गई।

आधे घंटे बाद सविता ड्राइंग रूम में पहुंची। लेकिन अंदर कदम रखते ही उसे लगा जैसे उसका पांव बिजली के नंगे तार पर पड़ गया हो।

रूपा के साथ गोल्डी एक सोफे पर बैठा था। सविता को देखते ही वह मुस्कराकर बोला—

"आओ सविता··· रुक क्यों गईं?"

सविता का जी चाहा, भाग कर इस कोठी से निकल जाए। लेकिन उसके पैर जैसे जमीन में गड़ गए थे।

रूपा जल्दी से सविता के पास पहुंची और उसका हाथ पकड़ कर बोली—

"आओ बेटी, रात गोल्डी किसी काम से यहां आया था। जब इसे मालूम हुआ कि तुम यहां आ गई हो तुमसे मिलने चला आया।"

सविता कुछ न बोली। रूपा ने उसे एक कुर्सी पर बैठा दिया। फिर उसके सामने प्लेट सरका कर चाय बनाती हुई बोली—"कुछ भी हो बेटी। अपने फिर भी अपने ही होते हैं। गोल्डी से भले ही खून का रिश्ता न रहा लेकिन इस घर से तो पुराना सम्बन्ध रहा है। तेरे विधवा हो जाने का कितना दुख हुआ है गोल्डी को। पिछले दिन आया तो इसके आंसू रुक न रहे थे।"

गोल्डी ने भारी आवाज़ में कहा—"हां सविता। अब बीती हुई

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बातों को भूल जाओ। तुम्हारी मम्मी ने तुम पर कितनी ज्यादतियां कीं लेकिन अब सब कुछ भूलकर तुम्हें इस तरह प्यार करने लगी हैं जैसे तुम इनकी सगी बेटी हो। कह रही थीं तुम्हारे डैडी की सारी सम्पत्ति तुम्हारे नाम कर देंगी। मैंने भी अगर तुम्हारे साथ कोई ज्यादती की हो तो तुम उसे भी भुला दो।"

सविता चुपचाप नाश्ता करती रही।

रूपा बोली--

"और फिर भगवान की दया से गोल्डी अच्छे खानदान का ही नहीं मालदार भी है। कह रहा था जब तुम दोनों की शादी हो जाएगी तो हनीमून के लिए तुम्हें स्विटजरलैंड ले जाएगा।"

"जी ···!" सविता के हाथ से चम्मच छूट गई।

रूपा जल्दी से बोली--

"हां बेटी, हर मां-बाप अपनी बेटी को सुखी देखना चाहते हैं। मैंने तेरे लिए गोल्डी को चुन लिया है। सुरेश के बारे में मालूम हुआ है कि वह एक मामूली-सा इन्स्पेक्टर है खुफिया पुलिस में। जो आदमी चौबीस घंटे खतरों से घिरा रहे उसका भविष्य ही क्या? न जाने कब किसी अपराधी की गोली का शिकार हो जाए। मैं नहीं चाहती कि तेरा सुहाग फिर उजड़े।"

सविता उठकर खड़ी हो गई।

रूपा ने आश्चर्य से कहा —

"क्या हुआ बेटी ···!"

"यह असंभव है मम्मी। मैं गोल्डी से किसी भी कीमत पर शादी नहीं करूंगी," सविता ने दृढ़ता से कहा। और भागती हुई ड्राइंग रूम से निकल गई।

रूपा के नथुने गुस्से से फूल गए। उसने दोनों हाथ मेज़ पर टिका कर उठना चाहा लेकिन गोल्डी ने जल्दी से उसके हाथ पर अपना हाथ रख दिया और धीरे से बोला--

"शान्ति से काम लीजिए रूपा जी। गुस्सा करने का समय नहीं

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

है। समझदार आदमी को युक्ति से काम लेना चाहिए।"

रूपा ने अपने आपको संभाला और उठकर बाहर चली गई।'

सविता अटैची हाथ में लटकाए कमरे से निकल रही थी।

रूपा ने उसका रास्ता रोकते हुए कहा--

"कहां जा रही हो बेटी?"

"मैं यहां एक मिनट भी नहीं ठहरूंगी?" सविता बोली।

"यह तेरा ही तो घर है बेटी।"

"नहीं, यह घर मेरा नहीं है। मैं तो समझी थी आपके मन में मेरे लिए सचमुच ममता जाग उठी है। लेकिन अब समझी कि आप मुझे यहां किसलिए लाई हैं। आप गोल्डी के साथ मिलकर मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रच रही हैं। मैं गोल्डी के मुंह पर थूकूंगी भी नहीं। मुझे उससे घृणा है। इसने मेरे जीवन में सुख की छाया तक कभी न आने दी। मैं जा रही हूं।"

सविता ने तेज़ी से कदम बढ़ाए लेकिन रूपा ने उसका हाथ सख्ती से पकड़ लिया। उसका चेहरा एकदम बदल गया। आंखें खूंखार हो उठीं। उसने गरज कर कहा--

"देखती हूं तू यहां से कैसे जाती है।"

फिर उसने सविता को दबोच लिया और अंदर के कमरे की ओर धकेलने लगी।

"मैं यहां नहीं रहूंगी, मुझे जाने दीजिए," सविता चीख उठी।

"तेरे तो फरिश्ते भी यहां से नहीं जा सकते।"

रूपा ने हाथ उठाया और तड़ाक से सविता के गाल पर एक चांटा पड़ा। सविता बिलबिला उठी। उसके हाथ से अटैची छूटकर गिर गई।

रूपा का हाथ दूसरे चांटे के लिए उठा ही था कि पीछे से गोल्डी ने उसका हाथ पकड़ लिया और डांट कर बोला--"यह आप क्या कर रही हैं रूपा देवी?"

"मैं इसकी खाल उधेड़ कर रख दूंगी। इसने मुझे समझा क्या है?"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह नहीं हो सकता रूपा देवी," गोल्डी रूपा की आंखों में देखते हुए मुस्कराया, "मेरे सामने आप सविता पर कोई अत्याचार नहीं कर सकतीं।"

"लातों के भूत बातों से नहीं मानते गोल्डी।"

"आपके पास भूत उतारने के नुस्खे नहीं हैं। आप सविता को छोड़ दीजिए।"

"नहीं छोड़ूंगी। यह भाग जाएगी।"

"आप इत्मीनान रखिए यह कहीं नहीं जायेगी।"

रूपा ने सविता को छोड़ दिया और उसे खूंखार नज़रों से घूरने लगी।

सविता की आंखों से आंसू बह रहे थे। वह अपना बांया गाल सहलाती हुई पीछे हट गई।

गोल्डी ने सविता से पूछा—"तुम यहां से जाना चाहती हो?"

सविता झटके से बोली—

"हां। मैं यहां नहीं रहूंगी।"

"ठीक है मैं इस बात की जिम्मेदारी लेता हूं। तुम्हें जाने से कोई नहीं रोकेगा। लेकिन जाने से पहले तुम्हें मेरे साथ ऊपर वाले कमरे में चलना पड़ेगा।"

"क्यों?" सविता कांप उठी।

"यहां से छुटकारा पाने की यही एक शर्त है," गोल्डी अर्थपूर्ण मुद्रा से मुस्कराया, "वरना तुम यहां से जा न सकोगी।"

"नहीं, यह असंभव है," कांपती हुई सविता पीछे हटी।

"असंभव को संभव बनाना गोल्डी के बांये हाथ का खेल है। ऊपर वाले कमरे से निकलने के बाद शायद तुम खुद ही यहां से जाना पसंद न करो।"

"नहीं," सविता भयभीत होकर पीछे हटती चली गई।

लेकिन गोल्डी ने झपट कर उसे उठा लिया। एक हाथ से उसका मुंह बंद कर दिया। सविता बरी तरह मचलने लगी लेकिन गोल्डी

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

की पकड़ से मुक्त न हो सकी।

रूपा के होंठों पर एक संतोष भरी मुस्कराहट नाच उठी थी।

गोल्डी ने सविता को ऊपर के कमरे में ले जा कर कमरे का दरवाजा बंदकर दिया। उसने सविता को उतारा ही था कि नीचे हाल में सुरेश की आवाज सुनाई दी—

गोल्डी बुरी तरह चौंक उठा। सविता ने भी सुरेश की आवाज सुन ली थी।

गोल्डी ने उसके कान में कहा—"यह रिवाल्वर देख रही हो," गोल्डी ने रिवाल्वर सविता को दिखाया, "अगर ज़रा सी भी आवाज निकाली तो यह रिवाल्वर सुरेश की जान ले सकता है। मैं तुम्हारा मुंह खोल रहा हूं। बाल्कनी में जाकर सुरेश से कहो कि वह यहां से चला जाए। मैं दरवाजे के पास ही रहूंगा। अगर तुमने ज़रा सी भी चालाकी से काम लिया तो सुरेश की लाश तड़पती दिखाई देगी।"

सविता भय से कांप उठी। गोल्डी ने उसे छोड़ दिया।

सविता हांफती हुई बाल्कनी में चली गई।

रूपा सुरेश से कठोर स्वर में कह रही थी—

"मैं पूछती हूं तुम्हें हिम्मत कैसे हुई बिना पूछे अंदर आने की।"

"मैं केवल सविता के बारे में पूछने आया हूं," सुरेश ने गंभीरता में कहा।

"सविता मेरी बेटी है। वह तुमसे नहीं मिल सकती।"

सुरेश ने रूखे स्वर में कहा—

"देवी जी सविता मेरे संरक्षण में है। आपके तेवर बता रहे हैं कि आप अच्छी नीयत से उसे यहां लेकर नहीं आईं।"

गोल्डी ने धीरे से सविता से कहा—

"बोलो सविता, वरना मैं गोली चलाता हूं।"

सविता ने भर्राई आवाज में पुकारा—

"सुरेश बाबू···!"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

सुरेश ने चौंक कर सविता की ओर देखा···

"सविता···!"

फिर वह सीढ़ियों की ओर झपटा ही था कि सविता हाथ उठा कर बोली—

"भगवान के लिए वहीं ठहर जाइए सुरेश बाबू।"

सुरेश ठिठक कर रुक गया और ध्यान से सविता को देखते हुए बोला—

"तुम मुझसे मिले बिना चली आईं सविता। तुम नहीं जानती कि मैं रात भर कितना बेचैन रहा।"

सविता ने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाला—

"सुरेश बाबू, मैं मम्मी के साथ अपनी खुशी से आई थी।"

"वह तो ठीक है लेकिन कम से कम मुझे तो खबर दे देतीं।"

अचानक रूपा ने सुरेश के कंधे पर हाथ रख दिया और प्यार भरे स्वर में बोली—

"बेटे हम लोग बहुत जल्दी में थे।"

सुरेश ने रूपा की ओर देखा और फिर सविता की ओर देखकर बोला—

"क्या तुम मुझसे दो बातें भी करना पसंद न करोगी?"

रूपा जल्दी से बोली—

"बेटे, इस समय वह एक जरूरी काम से कहीं जाने के लिए तैयार हो रही है। तुम फिर कभी आकर मिल लेना।"

गोल्डी ने गुर्रा कर कहा—"सविता, कह दो कि फिर कभी न आना।"

सविता ने बड़ी कठिनाई से अपने आपको संभाल कर कहा—

"मैं सचमुच एक ज़रूरी काम से जा रही हूं। आप फिर कभी आ जाइएगा।"

सुरेश ने सविता का आश्चर्य से देखा और तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ गया।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रूपा बोली—

"सुन लिया तुमने बेटे, फिर कभी आ जाना । इस घर के दरवाजे तुम्हारे लिए हमेशा खुले रहेंगे।"

सुरेश दरवाजे की ओर बढ़ने लगा । सविता के होंठ कांपे और उसके दोनों हाथ आगे बढ़े लेकिन सुरेश दरवाजे से निकल चुका था।

सविता दोनों हाथों में चेहरा छिपा कर सिसकने लगी ।

रूपा के होंठों पर जीत भरी मुस्कान खेल रही थी ।

गोल्डी रिवाल्वर हिलाता हुआ बाहर निकला और मुस्कराकर बोला—

"शाबाश, तुम सचमुच बहुत समझदार हो सविता ।"

सविता ने घृणा से गोल्डी की ओर देखा और फिर रोते हुए बोली—

"तुम मेरे जीवन के लिए क्यों जहर बन गए हो । अगर तुम मुझे खुशी नहीं देख सकते तो गोली मार दो।"

"तुम्हें गोली मारने के बाद मैं ही जिन्दा रहकर क्या करूंगा। मेरी जान।"

सविता ने तड़प कर हाथ उठाया लेकिन चांटा गोल्डी के गाल पर न पड़ सका। गोल्डी ने उसकी कलाई पकड़ ली और अंदर ले जाने लगा।

"छोड़ दो, मुझे छोड़ दो," सविता बिलबिलाई, "मम्मी, मुझे बचा लो···मम्मी।"

लेकिन गोल्डी घसीट कर उसे कमरे में ले गया और दरवाजा अंदर से बंद कर लिया । सविता इस तरह चीखी जैसे उसे किसी ने उठा कर बिस्तर पर पटक दिया हो ।

रूपा के होंठों की मुस्कराहट और गहरी हो गई ।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

बारह

सुरेश ने कार की स्पीड और बढ़ा दी। उसके दिल और दिमाग में एक भयंकर तूफान मचल रहा था। उसे लग रहा था जैसे किसी ने उसके जीवन भर की खुशियां उससे छीन ली हों। उसके कानों में सविता के शब्द गूंज रहे थे—

"आप फिर कभी आ जाइएगा। मैं सचमुच किसी काम से जा रही हूं।"

लेकिन तभी सुरेश का दिल कह उठा—

"क्या सविता इतना उपेक्षा भरा व्यवहार कर सकती है?"

"नहीं, यह असंभव है।"

"लेकिन वह चुपचाप क्यों चली गई? उसने मुझे खबर तक नहीं दी यह जानते हुए भी कि मेरे दिल पर क्या बीतेगी।"

"और फिर यहां आकर इतनी उपेक्षा?"

अचानक उसे रूपा का खयाल आया जिसने पहले तो उसे इतनी कठोरता से अंदर जाने से रोक दिया था लेकिन फिर मीठी-मीठी बातें करने लगी थी। जरूर सविता किसी जाल में फंस गई है। आखिर सौतेली मां ही है न। क्या उसने सविता को ऐसा कहने पर मजबूर कर दिया था? लेकिन सविता तो अकेली खड़ी थी। वह चाहती तो मिलने के लिए नीचे आ सकती थी।

अचानक उसकी आंखों में सविता का हुलिया नाच उठा। बिखरे हुए बाल उतरा हुआ चेहरा। भयभीत डबडबाई आंखें। सविता को जरूर मजबूर किया गया है। संभव है वह ऊपर अकेली न हो किसी ने उसे धमकी देकर यह कहलवाया हो। लेकिन वह इतनी भयभीत क्यों थी?

अचानक सुरेश को लगा सविता किसी बहुत बड़ी मुसीबत में फंस गई है।

उसने तेजी से कार मोड़ी और उसकी कार वापस सविता की

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कोठी की ओर दौड़ने लगी।

० ० ०

रूपा परेशान मुद्रा में बार-बार बाल्कनी की ओर देखने लगती थी।

काफी देर बाद उस कमरे का दरवाजा खुला। सविता बाहर निकली। वह बिल्कुल खामोश थी। उसके चेहरे पर दुख ठहर कर रह गया था। उसकी आंखें देखकर लगता था जैसे वह कोई सपना देख रही हो।

सविता के पीछे गोल्डी था। उसके चेहरे पर विजेता जैसी मुस्कान थी।

रूपा कभी सविता की ओर देखती और कभी गोल्डी की ओर।

नीचे पहुंच कर गोल्डी ने कहा—

"रूपा देवी, अब सविता से पूछिए, यहां रहेगी या वापस जायेगी।"

रूपा ने सविता की ओर देखा।

सविता ने धीरे से कहा—

"मैं अब कहीं नहीं जाऊंगी।"

"सच?" रूपा खुश होकर बोला।

"हां, आप जैसा भी कहेंगी मैं वैसा ही करूंगी।"

रूपा ने गोल्डी की ओर आश्चर्य से देखा।

गोल्डी ने पाइप भरते हुए कहा—"यह भी पूछिए कि सविता सुरेश से शादी करेगी या नहीं।"

रूपा ने फिर सविता की ओर देखा।

सविता ने कहा—

"मैं गोल्डी के साथ ही शादी करूंगी।"

"और अगर सुरेश आया तो?" रूपा ने पूछा।

"मैं इनकार कर दूंगी कि मैं आपसे शादी नहीं करूंगी।"

गोल्डी ने हंसते हुए कहा—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"देखा रूपा देवी। ज काम शान्ति से हो सकता है उसके लिए कठोरता की आवश्यकता नहीं होती।"

अचानक कार के पोर्टिको में रुकने की आवाज सुनाई दी। वे तीनों चौंक पड़े। कुछ देर बाद सुरेश तेजी से अंदर आया। सविता पल भर को बेचैन हो उठी लेकिन फिर उसने अपने आपको संभाल लिया। रूपा का चेहरा फक पड़ गया।

गोल्डी ने मुस्करा कर कहा—

"हैलो इंस्पैक्टर सुरेश ?"

"हैलो," सुरेश फीकी सी मुस्कराहट के साथ बोला, "तो आप यहां मौजूद हैं।"

"बहुत पुराने सम्बन्ध हैं मेरे इस घराने से," गोल्डी मुस्करा कर बोला, "और अब तो यह सम्बन्ध और भी पक्के होने जा रहे हैं। जल्दी ही सविता से मेरा विवाह होने वाला है।"

"अच्छा, बड़ी खुशी हुई यह सुनकर···क्यों सविता जी ?" सुरेश ने सविता की ओर देखा।

सविता के चेहरे पर वही दुख भरा ठहराव था। उसने शान्त स्वर में कहा—

"हां सुरेश बाबू, यह सच है।"

सुरेश को लगा जैसे उसके पास ही कोई जोरदार धमाका हुआ हो। वह सन्नाटे में खड़ा सविता को देखता रह गया।

गोल्डी ने मुस्कराकर कहा—

"मैं जानता हूं सुरेश बाबू, इस सूचना से आपको बड़ी ठेस पहुंची होगी। लेकिन शायद आपको यह मालूम नहीं कि हम दोनों बहुत पहले से एक दूसरे को प्यार करते हैं। क्यों सरिता ?"

"हां, मैं गोल्डी से प्यार करती हूं।"

"और प्रेमी-प्रेमिका की आपसी नाराज़गी का यह अर्थ नहीं होता कि दोनों एक दूसरे से हमेशा के लिए अलग हो जाएं।" गोल्डी ने कहा

सुरेश ने सविता की ओर देखकर कड़वी मुस्कराहट के साथ कहा-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"मुझे प्रसन्नता है कि तुमने खूब सोच-समझकर अपने भविष्य का निर्णय किया है। भगवान तुम्हें सुखी रखे।"

फिर वह तेज़ी से बाहर की ओर बढ़ गया।

रूपा ने जल्दी से कहा—

"अरे सुरेश बेटे, दूसरी बार भी यों ही जा रहे हो। कम से कम चाय तो पीते जाते।"

"हां सुरेश बाबू," गोल्डी बोला, "इस खुशी के मौके पर मुंह तो मीठा करते जाओ।"

"धन्यवाद!"

"सुरेश तेज़ी से बाहर निकल गया। कुछ देर बाद उसकी कार स्टार्ट हुई और तेज़ी से चली गई।

सविता ने दोनों हाथों में मुंह छिपा लिया और फूट-फूट कर रोने लगी।

० ० ०

सुरेश ने सिगरेट ऐशट्रे में बुझा दिया।

कमल ने उसे ध्यान से देखते हुए पूछा—"क्या बात है सर, आप परेशान दिखाई दे रहे हैं।"

"कुछ नहीं," सुरेश ने चिन्तित स्वर में कहा।

"कुछ नहीं है तो इस हालत का कारण क्या है? आप कल आफिस नहीं आए। मैंने फोन किया तो पता चला आप सविता से मिलने गए हुए हैं। यह भी पता चला था कि सविता अपनी मम्मी के साथ अचानक चली गई।"

"हां, बिना मुझे बताए चली गई।"

"आप उससे मिले थे।"

"सुरेश ने धीरे से कहा—

"हां मिला था। वह गोल्डी से विवाह कर रही है।"

"क्या?" कमल चौंक पड़ा।

"उसने खुद अपनी जबान से कहा है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कमल आश्चय से सुरेश को देखता रहा। फिर बोला—

"और आपने उसकी बात पर विश्वास कर लिया ?"

"विश्वास तो नहीं हुआ कि सविता इतनी बदल सकती है।"

"मैं किसी भी मूल्य पर यह विश्वास नहीं कर सकता कि सविता ऐसी मूर्खतापूर्ण हरकत कर सकती है जबकि आप उसे गोल्डी की कैद से छुड़ाकर लाए हैं। और गोल्डी ही कैलाश का हत्यारा है। गोल्डी निस्संदेह अपराधी है और यह एक न एक दिन जरूर पकड़ा जाएगा।"

"यही तो मैं भी सोच रहा हूं। सविता जरूर इन लोगों की साजिश की शिकार हुई है।"

"फिर भी आप इतने इत्मीनाम से बैठे हैं। आप उसे बचाने के लिए कुछ नहीं करेंगे ? अगर उसकी शादी गोल्डी से हो गई तो क्या उसका जीवन बर्बाद न हो जायगा।"

"यही सोच रहा हूं सविता को बचाने के लिए कुछ करना चाहिए। गोल्डी को इस समय तो कैलाश की हत्या के अपराध में गिरफ्तार कर लिया जाए। तुम पता लगाओ कि गोल्डी वापस आया है या नहीं। मैं उसके वारंट की व्यवस्था करता हूं।"

सुरेश उठकर एस० पी० के आफिस में चला गया और कमल जल्दी-जल्दी टेलीफोन के नम्बर डायल करने लगा।

० ० ०

सुरेश आफिस में लौटा तो कमल ने जल्दी से कहा—"कुछ गड़बड़ मालूम होती है सर, हमें जल्दी करनी चाहिए।"

"कैसी गड़बड़ ?"

"मैंने गोल्डी का मित्र बन कर क्लब फोन किया था। पहले तो पता चला कि गोल्डी की आज ही शादी हो रही है इसलिए वह क्लब नहीं आया। लेकिन फौरन ही किसी दूसरे आदमी ने बताया कि गोल्डी बिजनेस के सिलसिले में बाहर गया हुआ है दो-चार दिन में वापस आएगा।"

"तब तो सचमुच हमें जल्दी करनी चाहिये।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

फिर वे तेज़ी से आफिस से निकल गए।

० ० ०

शहनाइयों की आवाज़े गूंज रही थीं। लेकिन सविता को ये आवाज़ मृत्यु का संदेश मालूम हो रही थीं। उसकी आंखों से आंसू वह रहे थे, बहुत-सी लड़कियों ने उसे घेर रखा था।

फिर लड़कियों ने सविता को उठाया और उसे लेकर बाहर की ओर चल दीं। सविता को अपने कदम मन-मन भर भारी मालूम दे रहे थे।

सविता को लग्न मंडप में वेदी के सामते बैठा दिया गया। गोल्डी दूल्हा बना उसके बरावर बैठा हुआ था। पंडित मंत्र पढ़ रहा था। लेकिन सविता की आंखें रह-रहकर दरवाज़े की ओर उठ जाती थीं।

पंडित ने सविता और गोल्डी को खड़े हो जाने के लिए कहा। दोनों उठकर खड़े हो गए। पंडित सविता का आंचल गोल्डी के दुपट्टे से बांधने लगा।"

तभी कुछ मेहमानों की घबड़ाई हुई आवाज़ सुनाई दीं—

"पुलिस ··· पुलिस ··· !"

मेहमानों, में खलवली मच गई। रूपा का चेहरा फक पड़ गया। सविता जल्दी से घूंघट उठाकर देखने लगी।

अचानक भीड़ को चीर कर सुरेश कमल, इंस्पेक्टर पुलिस और कुछ कास्टेवलों के साथ सामने आ गया।

गोल्डी के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई।

"आइए इंस्पैक्टर सुरेश, मुझे विश्वास था कि आप खुशी के इस मौके पर अवश्य पधारेंगे।"

"हां, ऐसे फंक्शनों में कभी-कभी पुलिस का पहुंचना भी आवश्यक हो जाता है," सुरेश मुस्कराया, "मि० गोल्डी आपके नाम गिरफ्तारी का वारंट है। मैं आपको सविता देवी के पति कैलाश की हत्या के आरोप में गिरफ्तार करता हूं।"

अचानक रूपा चीख कर आगे बढ़ी—

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"यह झूठ है। गोल्डी ने किसी की हत्या नहीं की।"

फिर वह भीड़ की ओर मुड़कर बोली—

"सुन रहे हैं आप लोग। कानून के रखवाले किस तरह बदला लेते हैं। उन्हें किसी भले आदमी इज्जत का भी ध्यान नहीं है। यह इंस्पैक्टर सुरेश मेरी बेटी से शादी करना चाहता था। मेरी बेटी ने इनकार कर दिया तो बदला लेने का इसने कितना अच्छा मौका ढूंढ़ा है।"

लोग काना-फूसी करने लगे।

गोल्डी ने मुस्करा कर कहा—

"इंस्पैक्टर साहब, आपको बदला ही लेना है तो कोई और तरीका अपनाइए। एक शरीफ लड़की की शादी में विघ्न डालकर उसपर इतना अत्याचार न कीजिए। क्यों सविता तुम क्यों नहीं बोलतीं।"

सविता ने कांपते हाथों से घूंघट उठाया और सुरेश की ओर देख कर बोली—

"भगवान के लिए मेरे रास्ते से हट जाइए सुरेश बाबू।"

"सविता देवी, इस समय मैं केवल कानून का रक्षक हूं। और मैं गोल्डी को कैलाश की हत्या के आरोप में गिरफ्तार करने आया हूं। क्योंकि कैलाश की लाश के पास जो निशान मिले हैं वे गोल्डी के ही हैं।"

"कैसे हैं वे निशान ?" गोल्डी ने व्यंग्य से पूछा।

"आपका यह टाई-पिन।" सुरेश ने टाई-पिन निकाल कर दिखाया, "यह मृतक की लाश की मुट्ठी में दबा हुआ था।"

गोल्डी ने हड़बड़ा कर अपनी टाई टटोली और जल्दी से अपने आपको संभालने की कोशिश करते हुए बोला—

"यह झूठ है। यह मेरा टाईपिन नहीं है।"

सुरेश ने मुस्करा कर कहा—"गोल्डी, इंस्पैक्टर सुरेश किसी चपरासी का नाम नहीं है। मैंने सारे शहर में घूमकर पता लगाया है कि यह पिन कहां से ख़रीदा गया। जिस ज्वेलर के यहां से आपने यह हीरे

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

जड़ा पिन खरीदा है उसके पास आपके नाम की रसीद भी है। आप यह अदालत में चलकर साबित कीजिएगा कि यह पिन आपका नहीं है।"

अचानक गोल्डी फुर्ती से पीछे हट गया। उसने रिवाल्वर निकाल कर जल्दी से सविता को अपने सामने कर लिया और कठोर स्वर में बोला—

"खबरदार, अगर किसी ने मेरी ओर एक कदम भी बढ़ाया तो मैं सविता को गोली मार दूंगा।"

उसने एक हवाई फायर किया और रिवाल्वर सविता की कमर से लगा दिया। मेहमानों में एक हंगामा सा मच गया। पुलिस वाले एकदम एलर्ट हो गए। लेकिन सुरेश ने हाथ फैलाकर उन्हें रोक लिया। और कठोर स्वर में बोला—

"गोल्डी, तुम चारों ओर से घिरे हुए हो! चुपचाप अपने आप को पुलिस के हवाले कर दो। बेकार जान देने से क्या फायदा?"

"मेरी जान लेने वाला तो अभी तक इस दुनिय में पैदा ही नहीं हुआ मि० सुरेश! हां, अगर किसी ने मेरा रास्ता रोकने की कोशिश की तो सविता की जान जरूर चली जायगी। सविता को मैं प्यार करता हूं। इसे किसी दूसरे की बाहों में नहीं देख सकता। तुम सविता को कभी नहीं पा सकते। मैं इसे यहां से दूर ले जाऊंगा और इससे शादी करने के बाद स्वयं अपने आपको कानून के हवाले करके यह सिद्ध कर दूंगा कि कैलाश का हत्यारा मैं हूं। अगर तुमने मुझे रोकने की कोशिश की तो मैं सविता को गोली मार दूंगा।"

फिर गोल्डी सविता को लेकर धीरे-धीरे एक ओर बढ़ने लगा।

सुरेश ने कहा—

"तुम हार चुके हो गोल्डी। तुम पर कैलाश की हत्या का ही नहीं बल्कि और भी कई हत्याओं के आरोप हैं। जिनमें इंस्पेक्टर रघुराज और उन एक दर्जन लड़कियों की हत्याएं भी शामिल हैं जिनका तुमने विभिन्न स्थानों से अपहरण किया है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"खूब ··· तब तो तुम्हारी जानकारियां बहुत विस्तृत हैं। लेकिन तुम मेरे विरुद्ध एक भी आरोप सिद्ध नहीं कर सकोगे," गोल्डा ने व्यंग्य से कहा।

"यह बात अदालत जाने। लेकिन तुम इस समय भी एक बहुत बड़ा अपराध करने जा रहे हो।"

"जब सविता मेरी वैधानिक पत्नी बन चुकेगी तो यह बात अपराध नहीं रहेगी। तुम सामने से हट जाओ वरना पहले मैं तुम्हीं को गोली मार दूंगा।"

सुरेश तन कर खड़ा हो गया।

"ठीक है, पहले मुझे ही मार दो गोली।

गोल्डी दांत भींचकर बोला--"सामने से हट जाओ सुरेश। तुम सविता को प्रेम करते हो इसलिए मैं तुम पर कोई रहम नहीं करूंगा।"

"मैं तुमसे रहम की भीख नहीं मांग रहा।"

"मैं तुम्हें अन्तिम चेतावनी देता हूं। मेरा रास्ता छोड़ दो।"

सविता गिड़गिड़ाई--

"सुरेश बाबू भगवान के लिए सामने से हट जाइए।"

"नहीं सविता, मैं इस तरह तुम्हारा जीवन बर्बाद न होने दूंगा।"

"मुझे भूल जाइए सुरेश बाबू। मैं आपके योग्य नहीं हूं। मेरे लिए आप अपनी जान न दीजिए।" सविता ने रोते हुए कहा।

"यह नहीं हो सकता सविता। जीवन में तुमने बहुत दुख झेले हैं लेकिन मैं अब तुम्हें और दुख न देखने दूंगा।"

"तो फिर मरो," गोल्डी ने नथुने फुलाकर कहा। और उसने सुरेश पर फायर कर दिया। सुरेश फुर्ती से एक ओर गिर गया।

सविता चीख उठी! लेकिन सविता की चीख के साथ ही एक और चीख भी सुनाई दी। वह रूपा की चीख थी। गोल्डी की गोली उसके सीने में जा लगी थी। और अब वह फर्श पर पड़ी तड़प रही थी।

पूरा कम्पाउन्ड चीखों से भर गया। लोग चीखते हुए भागने लगे।

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोल्डी ने रिवाल्वर फिर सविता की कमर ले लगा दिया। उसकी आंखों से खून बरस रहा था। वह सविता को आगे करके बढ़ने लगा।

"मेरे रिवाल्वर में अभी पांच गोलियां हैं। सविता या तुम्हारी जान लेने के लिए एक गोली ही काफी होगी सुरेश, मेरे रास्ते से हट जाओ।"

"तुम पागल हो गए हो गोल्डी, इस तरह तुम कब तक हमसे बचे रह सकोगे?"

"जब तक मेरे बदन में एक भी सांस रहेगी मुझे कोई नहीं पकड़ सकता और न सविता को ही मुझ से छीन सकता है।"

सविता चीखकर बोली—

"हट जाइए सुरेश बाबू ··· मेरे लिए अपने आपको जोखिम में न डालिए।"

गोल्डी एक कार के पास पहुंच गया था। कार की ड्राइविंग सीट पर गोगी बैठा हुआ था।

गोल्डी ने गुर्राकर कहा—"गोगी ··· कार स्टार्ट करो।"

गोगी ने कार स्टार्ट करके दरावाज़ा खोल दिया। गोल्डी ने सविता को कार में धकेला और कार में बैठते-बैठते सुरेश पर एक फायर कर दिया सविता चीख उठी। सुरेश उछल कर एक ओर हट गया। गोली एक कांस्टेबल के जा लगी।

फिर कार तेजी से कम्पाउन्ड में में से निकल गई।

सुरेश और कमल पुलिस कर्मचारियों के साथ जीप की ओर झपटे। कुछ देर बाद उनकी जीप गोल्डी की कार के पीछे दौड़ रही थी।

गोल्डी अपनी कार से बराबर फायरिंग कर रहा था। जीप लहरा-लहरा कर बच रही थी।

सुरेश ने गोल्डी की कार पर तीन फायर किए। लेकिन एक भी गोली गोल्डी की कार तक पहुंचने नहीं पाई।

अचानक गोल्डी के रिवाल्वर की एक गोली जीप के अगले टायर में आ लगी। धमाके के साथ टायर फटा और जीप लहरा कर रुक

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गई। गोल्डी की कार हवा से बातें करती हुई चली गई। सुरेश और कमल जीप से कूद पड़े !

सुरेश दांत भींचकर गुर्राया--

"भगवान की सौगन्ध, अगर इसने सविता के साथ कोई ज्यादती की तो मैं इसकी बोटी-बोटी उड़ा दूंगा।"

कमल धीरे से बड़बड़ाया—

"यह तो बहुत बुरा हुआ सर।'

"चिन्ता न करो। मैं जानता हूं वह क्लब के अलावा और कहीं नहीं जाएगा।"

"लेकिन यहां गाड़ी का प्रबन्ध कहां से होगा ?"

तभी पुलिस इन्स्पैक्टर ने कहा—

"पहिया बदला जा रहा है मिस्टर कमल। बस कुछ मिनट और लगेंगे।"

तेरह

गोल्डी की कार क्लब के कम्पाउण्ड में पहुंचकर घूमती हुई इमारत के पिछवाड़े जा रुकी। गोल्डी ने सविता को खींचकर कार से उतारा।

सविता अपने-आपको छुड़ाने की कोशिश करती हुई चिल्लाई—

"छोड़ दे ··· मुझे छोड़ दे ···!"

गोल्डी गुर्राया—"सविता, तेरे लिए मैंने आज जान की बाजी लगा दी है। अब संसार की कोई भी शक्ति मुझे तुझसे अलग नहीं कर सकती।"

फिर गोल्डी ने गोगी से कहा—

"गोगी, शोभाराम से कहो, मोटरबोट तैयार करे। हम लोग अभी-अभी यहां से निकल जाएंगे और रातोंरात इस देश की सीमा से दूर पहुंच जाएंगे।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"ओ० के० बॉस।"

"किसी और आदमी को पता नहीं चलना चाहिए। मैं सारी व्यवस्था करके अभी आता हूं।"

गोगी के जाने के बाद गोल्डी ने सविता की कनपटी पर एक हाथ मारा। सविता लड़खड़ाकर उसकी बाहों में झूल गई। गोल्डी ने उसे कार में डाल दिया और तेज़ी से अन्दर चला गया।

एक कमरे में पहुंचकर उसने एक तिजोरी खोली। उसमें से नोटों के बण्डल और सोने की डलिय निकालकर एक बैग में ठूंस लीं और बाहर निकल आया।

दूसरे कमरे में पहुंचकर उसने घण्टी बजाई। कुछ मिनट बाद चार आदमी कमरे में आ गए।

गोल्डी ने पूछा--

"वे सातों लड़कियां तहखाने में ही हैं न, जिन्हें हम बाहर सप्लाई नहीं कर सके?"

"यस बॉस।"

"अब तो वे पुलिस के हाथों पड़ जाएंगी। तुम सबने मेरा बहुत साथ दिया है। मैं नहीं चाहता कि मेरे बाद तुम लोगों को अपनी ज़िन्दगी जेल में बितानी पड़े इसलिए मैं तुम सबको आज़ाद किए देता हूं।"

उसने रिवाल्वर उठाया और धांय-धांय चार फायर किए। वे चारों चीखकर ज़मीन पर जा गिरे और कुछ देर तड़पकर शान्त हो गए।

गोल्डी ने अपना रिवाल्वर फिर लोड़ किया और बाहर आ गया।

उसने सविता को कार से निकाला और पिछली दीवार की ओर बढ़ गया।

तभी दीवार के एक चोर दरवाज़े में से गोगी निकला।

"जल्दी कीजिए बॉस। पुलिस यहां पहुंच गई है। और घेरा डालने की कोशिश कर रही है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

गोल्डी जल्दी से उस दरवाज़े से निकल गया।

गोगी ने समुद्र के किनारे की ओर इशारा करके कहा--

"मोटर बोट तैयार है बॉस।"

उसी समय सुरेश की दहाड़ सुनाई दी—

"ठहर जाओ गोल्डी। वरना गोली मार दूंगा।"

गोल्डी गुर्राया--"गोगी, सम्भालो इसे।"

और फिर वह किनारे की ओर भाग छूटा। सुरेश उसके पीछे दौड़ा। लेकिन गोल्डी पर फायर न कर सका। क्योंकि गोल्डी के सविता को इस तरह लटका रखा था कि गोली सविता के लग सकती थी।

सुरेश दौड़ रहा था कि अचानक गोगी ने उसकी टांग में टांग अड़ा दी। सुरेश औंधे मुंह रेत पर जा गिरा। गोगी ने उस पर छलांग लगा दी। सुरेश फुर्ती से पलटा और गोगी औंधे मुंह जा गिरा।

फिर वह जैसे ही पलटा सुरेश ने मुट्ठी भरकर रेत उसकी आंखों में झोंक दिया। गोगी आंखें मलता हुआ पीछे हट गया। सुरेश ने रिवाल्वर का दस्ता गोगी के सिर पर मारा। गोगी के हलक से एक चीख निकल गई वह लड़खड़ाकर औंधे मुंह जा गिरा।

गोल्डी किनारे पर पहुंच चुका था।

सुरेश ने चिल्लाकर कहा--"रुक जाओ गोल्डी, वरना गोली मार दूंगा।"

गोल्डी ने पलटकर फिर फायर किया। सुरेश फिर रेत पर लेट गया और रेंगता हुआ आगे बढ़ने लगा।

गोल्डी ने मोटरबोट के ड्राइवर से कहा--

"मोटरबोट स्टार्ट करो।"

दूसरे ही पल मोटरबोट स्टार्ट हो गया। गोल्डी ने पलटकर फिर फायर किया और मोटरबोट की ओर झपटा। सुरेश ने भी हवाई फायर किया।

गोल्डी का एक पैर मोटर बोट पर था और दूसरा रेत पर। उसने पलटकर फिर रिवाल्वर उठाया। लेकिन तभी सविता ने उसकी कलाई पर हाथ मारा और कंधे से फिसलकर रेत पर जा गिरी।

गोल्डी के हाथ से रिवाल्वर छूटकर दूर जा गिरा। वह गुर्राकर

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

रिवाल्वर की ओर झपटा। सविता झपटकर रिवाल्वर के ऊपर जा गिरी।

तब तक सुरेश पास पहुंच चुका था। उसने छलांग लगाई और गोल्डी को लिए हुए रेत पर जा गिरा। गोल्डी गुर्राकर पलटा। उसने सुरेश को अपने ऊपर से पीछे उछाल दिया। और सुरेश के गिरते ही उसने उस पर छलांग लगा दी।

सविता ने रिवल्वर उठा लिया और कांपते स्वर में बोली—

"गोल्डी, अलग हट जाओ वरना गोली मार दूंगी।"

सुरेश चिल्लाया।

"सविता, गोली मत चलाना। मैं इसे ज़िन्दा पकड़ना चाहता हूं यह मर गया तो बहुत से अपराधों पर से पर्दा न उठ सकेगा।"

गोल्डी पूरी शक्ति से सुरेश पर टूट पड़ा। लेकिन सुरेश ने झुककर उसकी कमर पकड़ ली। उसने गोल्डी को दो-तीन चक्कर देकर उसे नीचे पटक दिया। गोल्डी के मुंह से एक लम्बी कराह निकली। सुरेश ने उसकी कालर पकड़कर उठाया और एक ज़ोरदार घूंसा उसके मुंह पर मारा। गोल्डी खून थूकता हुआ पीछे हटा। लेकिन सुरेश का दूसरा घूंसा पड़ते ही वह ज़मीन पर जा गिरा। उसने उठने की कोशिश की लेकिन वह उठ न सका।

तभी पुलिस के अन्य कर्मचारी दौड़ते हुए वहां पहुंच गए।

० ० ०

सुरेश फ्लैट में पहुंचा तो श्यामू मुंह लटकाए खड़ा था। सुरेश ने पूछा, "क्या बात है श्यामू ?"

"सविता जी फिर जा रही हैं।"

तभी सविता बाहर आई। सुरेश ने पूछा—

"क्या बात है सविता, कहां जा रही हो। तुम्हें मालूम नहीं गोल्डी ने अपने सारे अपराधों को स्वीकार कर लिया है। उसके यहां से वे लड़कियां भी बरामद हो गई हैं जिन्हें वह विदेशों में बिक्री के लिए सप्लाई किया करता था। उसी ने इन्स्पैक्टर रघुराज की हत्या की थी और वही कैलाश का भी हत्यारा है।"

"जी···!" सविता ने आश्चर्य से कहा, "वह इस बात को स्वी-

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कार कर चुका है ?"

"हां सविता, उसने स्वीकार कर लिया है कि उसी ने कैलाश की हत्या की है।"

सविता सन्नाटे में खड़ी रह गई। सुरेश ने बड़े ध्यान से उसका चेहरा देखते हुए कहा--

"क्या बात है सविता ? तुम किस चिन्ता में डूब गईं ?"

सविता ने भर्राए स्वर में कहा--

"सुरेश बाबू, आप देवता हैं। आपने कदम-कदम पर मुझे बचाया है मैंने आपको प्यार किया है। आपके साथ जीवन बिताने के सपने भी देखे थे। लेकिन मैं इतना बड़ा बोझ अपने सीने पर रखकर आपके साथ जीवन नहीं बिता सकती।"

"ऐसा कौन-सा बोझ है तुम्हारे सीने पर ?"

सुरेश बाबू, वास्तविकता यह है कि कैलाश की हत्या मैंने की है।"

"नहीं," सुरेश हड़बड़ा कर पीछे हट गया।

सविता बोली--

"हां सुरेश बाबू, यह सच है।"

"तुम झूठ बोल रही हो सविता। मैं जानता हूं कि तुम यह क्यों कह रही हो। तुम शायद मुझ से दूर जाना चाहती हो। उसका कारण मैं जानता हूं। उस दिन जब तुमने अपनी कोठी में मुझसे मिलने से इन-कार किया था तो शायद उस समय तुम्हारे पास गोल्डी था। उसकी धमकी से डर कर ही तुमने ऐसा किया था। और जब मैं दोबारा तुमसे मिलने गया था तो तुमने कहा था कि तुम मेरे योग्य नहीं हो। अगर तुम्हारे साथ गोल्डी ने बलात्कार भी किया है तब भी मैं तुम्हें अपना-ऊंगा। क्योंकि उसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं।"

सविता ने भर्राए स्वर में कहा, "नहीं सुरेश बाबू, भगवान जानता है कि मैं आज भी गंगाजल की तरह पवित्र हूं। गोल्डी ने मेरे साथ कोई पाप नहीं किया। उसने बस मुझे यह धमकी दी थी कि अगर मैंने आपसे शादी की तो वह मेरा भंडाफोड़ कर देगा कि मैंने कैलाश की हत्या की है।"

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

"नहीं सविता, तुम हत्या नहीं कर सकतीं। तुम देवी हो!" सुरेश घबरा कर बोला, उसको सविता की बात पर विश्वास नहीं आ रहा था।

"वास्तव में मैं कैलाश बाबू की नहीं गोल्डी की हत्या करनी चाहती थी। रोल्डी ने मेरा जीवन बर्बाद कर रखा था। उस दिन मैंने गोल्डी से कहा था कि वह मेरे रास्ते से हट जाए और अगर उसके बदले में मेरा शरीर भी चाहता है तो मैं देने को तैयार हूं। मैंने गोल्डी को सात बजे बुलाया। क्योंकि उस समय कैलाश बाबू घर पर नहीं होते थे। लेकिन गोल्डी मेरी चाल समझ गया। उसने सारी बातें कैलाश बाबू को बता दी। वह घर से जाने का बहाना करके घर में ही छिप गए। गोल्डी आया तो मैंने उस पर चाकू से वार किया। कैलाश बाबू इस बीच वास्तविकता जान गए थे। गोल्डी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। कैलाश बाबू मुझे बचाने के लिए झपटे तो मेरे हाथ का चाकू उनके सीने में घुस गया। उन्होंने गोल्डी का गिरेवान पकड़ रखा था। इसलिए गोल्डी का टाई पिन उसके हाथ में रह गया। गोल्डी अपना गिरेवान छुड़ाकर वहां से भाग गया। मैंने जल्दी-जल्दी वहां से निशान मिटाए और टैक्सी से दिलावर नगर पहुंच गई। मैंने राजी को यही बताया कि मैं ट्रेन से आ रही हूं। मैंने टैक्सी स्टेशन पर छोड़कर राजी की भेजी हुई कार में उसके घर पहुंची थी। इसीलिए उसे मेरी बात का विश्वास हो गया था। मैंने बिना टिकट इसीलिए सफर किया था कि मैं एक सबूत जुटा लूं।"

सुरेश के होंठों पर मुस्कराहट फैल गई। उसने सविता का चेहरा दोनों हाथों में लेकर कहा—

"सविता, तुमने अपने पति की नहीं उस शैतान की हत्या की है जिसे एक-न एक दिन फांसी के तख्ते पर पहुंचना ही था। उसकी हत्या संयोग से हुई है। इसके लिए तुम्हें कोई दंड नहीं दिया जा सकता। मैं तुम्हें अदालत में तो जरूर ले जाऊंगा लेकिन अपनी जान की बाजी लगाकर भी तुम्हें बचा लूंगा। और अब तो शायद गोल्डी भी तुम्हारे पक्ष में ही बयान देगा।"

और सविता सुरेश के सीने से लगकर सिसकियां भरने लगी।

डा. ... रेवती ... पुस्तकालय

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

कम मूल्य की स्टार बुक्स और भी कम मूल्य में प्राप्त करने के लिए

स्टार की

अपने घर में अपनी लायब्रेरी योजना

के सदस्य बनिये

सदस्यता नियम:—

सदस्यता शुल्क का एक रुपया भेज कर हर मास 11/- रुपये मूल्य की पुस्तकें 9/- में प्राप्त करें और डाक व्यय भी फ्री। यह शुल्क पहली वी.पी.पी. में भी जोड़ा जा सकता है। स्टार सीरीज में विभिन्न विषयों की अब तक लगभग 350 रोचक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं और हर तीन मास में 10 नई पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इसके अतिरिक्त अब दूसरी सीरीज की पाकेट बुक्स भी इस योजना में भेजी जाती है।

योजना सदस्यों को अन्य सुविधायें:—

• कथा प्रधान मासिक 'साहित्य संसार' फ्री • हर वर्ष रंगीन कलैंडर/डायरी फ्री • पहली वी.पी.पी. में प्लास्टिक का एक सुन्दर बुक कवर फ्री • समय समय पर अन्य कई उपहार।

आज ही पहली वी.पी. के लिए पुस्तकों के नाम भेजकर सदस्य बनिये!

अपने घर में अपनी लायब्रेरी योजना

(स्टार पब्लिकेशंज) ४/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली १

(पुस्तकों की सूची अलग दी जा रही है)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

अब तक प्रकाशित स्टार पॉकेट बुक्स

अपनी पसन्द की पुस्तकें इनमें से चुनिए।

उपन्यास

- भंवर (गुलशन नन्दा)
- ० चिनगारी ,,
- ० नया जमाना (स्क्रीन प्ले)
- ० नीलकंठ ,,
- ० गेलार्ड ,,
- ० अंधेरे चिराग ,,
- सांवली रात ,,
- सितारों से आगे ,,
- राख और अंगारे ,,
- कलंकिनी ,,
- देवछाया ,,
- सांझ की बेला ,,
- टूटे पंख ,,
- घाट का पत्थर ,,
- जलती चट्टान ,,
- गली-कूंचे : सं० कहानियां ,,
- खिलाड़ी (राजवंश)
- परिवर्तन ,,
- सपनों की छाया ,,
- बन्धन ,,
- सहारा ,,
- एक रात ,,
- अफसाना ,,
- प्यासे नैना ,,
- निशानी ,,
- सौगन्ध ,,
- रजना ,,
- लाज ,,
- कांटों की सेज ,,
- पतिता ,,
- नीलाम (राजवंश)
- फुहार ,,
- पतवार ,,
- सांझ और सवेरा ,,
- प्रायश्चित ,,
- अभिमान ,,
- प्यार और ममता ,,
- ० काया-कल्प ,,
- ० पुतली ,,
- अमानत ,,
- लगन ,,
- आंचल की प्यास ,,
- दीवार ,,
- गुनहगार ,,
- अबला कौन ,,
- अनदेखी राह ,,
- अपने पराये ,,
- दायरा ,,
- दर्पण की परछाइं ,,
- वासना ,,
- शिकायत ,,
- जान-पहचान ,,
- मनमन्दिर (समीर)
- मुलाकात ,,
- किनारे-किनारे ,,
- धड़कन ,,
- बाबुल का आंगन ,,
- अरमान ,,
- चितचोर ,,
- बलिदान ,,
- प्यासी नदिया (जोकबर्ग)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

वासना के घेरे (लोकदर्शी)
अंगड़ाई ,,
कुंवारी दुलहिन ,,
प्रेम के बन्धन ,,
घंघट की ओट ,,
प्यास ,,
मतवाला ,,
एक लड़की करुणा ,,
बदनाम गली (कमलेश्वर)
थके पांव (भगवतीचरण वर्मा)
० आखिरी दांव ,,
पक्की हवेली (अमृता प्रीतम)
अतीत की परछाइयां ,,
काला गलाब ,,
० कंचनमाला
(ताराशंकर बन्द्योपाध्याय)
पावन पत्ते (कृश्न चन्दर)
महारानी ,,
इन्तजार (आदिल रशीद)
नीलिमा ,,
पहली रात ,,
० बरबाद आशियाने ,,
० परम्परा (गुरुदत्त)
० प्रभात बेला ,,
० लोक-परलोक ,,
० पर्दे के पीछे ,,
० पाणिग्रहण ,,
० आकाश-पाताल ,,
० सुख का खोज ,,
परिग्रह ,,
* विलोमगति ,,
परिभद ,,
निर्मल ,,
अनदेखे बन्धन ,,
गुलाबी धूप (कमल शुक्ल)
० काजल का रेखा (कपिलकुमार)
आंसू और मुस्कान (विजयकुमार)
सुजाता (भारद्वाज)
आधा आदमी (कृपाशंकर)
आखिरी फेरा ,,
नींव का मिट्टी (शिवसागर मिश्र)
आदमी और सिक्के (महेन्द्रनाथ)
लूई का आत्मा (रोमांचकारी)
तन का पाप (सत्यपाल विद्यालं०)
० औरत (आनन्द सागर)
पंजाब की बेटी (जमुनादास अ०)
पत्थर बोलते हैं (मुसाफिर)
दानव देश (कुशवाहाकान्त)
खून का प्यासा ,,
उसके साजन ,,
दूखन लागे नैन (भगवती०वाज०)
पाप का बाज़ार (नसीम)
मीत और मंजिल (रेवतीसरन)
कौन पर्दा ढाके
(करतारसिंह दुग्गल)
उल्टे कदम (रवीन्द्र थापड़)
रात की धूप (निर्मल)

जासूसी : रोमांचकारी

होटल पैरामाउण्ट (गुप्तदूत)
रात के एक बजे ,,
सात चेहरों वाली औरत ,,
यह लाश किसकी है ? ,,
सर्कस का हत्यारा
(इन्स्पेक्टर गिरीश)
मौत का मेहमान ,,
सुनहरे बालों का माया ,,
खूंखार गिद्ध ,,
एक हज़ार लाशें ,,
कोठेवाली की हत्या (ओम०शर्मा)

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

खाल भरना (आरिफ़ मारहर्वी)
अलमारी में लाश ,,
आग का खेल
खूनी प्रेमिकाएं
भयानक भिखारी
खतरनाक मादाम
कातिल घड़ी

कहानी-संग्रह

एक लड़की सोफा (महीपसिंह)
माफ कीजिए (गो० प्र० व्यास)
बीसवीं सदी के लैला-मजनूं (अब्बास)
सिर्फ एक सिगरेट (बेदी)
सपनों की फांसी (पी. डी. टंडन)

शेरो-शायरी एवं कविता

साहिर की शायरी (साहिर लुधियानवी)
दीवाने ग़ालिब (संकलन)
नग्मानुमा (फिराक गोरखपुरी)
नग्म-ए-इश्क (संकलन)
अकल्लस (काका हाथरसी)
तो मैं क्या करूं (गो० प्र० व्यास)
पांच लोकप्रिय कवि (संकलन)
बुलबुले (हास्य मुक्तक)

कुछ महत्वपूर्ण पुस्तक

मीनाकुमारी—फिल्मों से कब्रिस्तान तक (जीवनी)
• भारत की १५ भाषाएं बोलिए सीखिए (भाषायें)
मजेदार भोजन कैसे बनाएं
विवाहितों के लिए (संकलन)
चन्द्र यात्रा के रोमांच
एक राष्ट्रपति (जीवनी)
योरुप में २८ दिन (यात्रा सं०)
राजनीति से दूर (नेहरू)
करोड़ों को रोजगार (बी. बी. गिरि)
अपने आंगन में साग-सब्जियां कैसे उगाएं
शृंगार से सुन्दर बनिये

बिना चिह्न की पुस्तकों का मूल्य दो रुपया प्रति
• चिह्न की पुस्तकों का मूल्य तीन रुपया प्रति
* चिह्न की पुस्तकों का मूल्य चार रुपया प्रति

स्टार की एक नई भेंट
अब एक और जासूसी उपन्यासकार
गुप्तदूत
जिसका प्रत्येक उपन्यास रहस्य, रोमांस, थ्रिल व सनसनी से भरपूर होगा ! हर माह गुप्तदूत सीरीज में पढ़िए ।

सदस्यता के लिए इस पते पर लिखें :
'अपने घर में अपनी लाइब्रेरी योजना'
४/५ बी०, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-१

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Neg. 833
मूल कृति

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

समीर

एक नया उभरता हुआ लेखक, जिसका पहला उपन्यास 'धड़कन' अगस्त '७१ में प्रस्तुत किया गया था।

किन्तु एक वर्ष से भी कम अवधि में 'समीर' ने पाठकों में इतनी लोकप्रियता प्राप्त कर ली, जो अन्य लेखकों को वर्षों में भी प्राप्त नहीं हो पाती। कारण? नई शैली के रोचक एवं सोद्देश्य उपन्यास!

और प्रस्तुत उपन्यास समीर का नया उपन्यास है जो लेखक की लोकप्रियता में निश्चित ही वृद्धि करेगा।

रूमानी संसार सीरीज

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

हला
स्तुत

र'ने
, जो
ाती।
ोद्देश्य

नया
ा में

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai

Digitization by Arya Samaj Charitable Foundation, Chennai